CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धा०
९०८

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्री ॥

॥ सांगीत मलखान संग्राम ॥

॥ मङ्गलाचरण ॥

दो०—तपत्रिविधि मोचन त्रिगुण, त्रिदश त्रिलोकी ईश
त्रिशालय पति त्रिविक्रम, त्रिकालज्ञ जगदीश

चौ०-त्रिकालज्ञ, जगदीश ईश ब्रह्मादिक कमलनयन
निराकार, सकार, विश्वव्यापक, व्यतिरिक्त व्यापक ।
विभुब्रह्म, स्वच्छन्द स्वयंभू विमलैश्वर व्यापक ॥
विघ्नव्यूहत विग्रहकारी खलदल क्षयकारन कुल केश ।

दोह—नमस्तस्मै निरोत्तम । परब्रह्म पुरुषोत्तम् ।
इन्द्र पद पद्म परायण । नमो नमामि, अनन्त अगोचर
अलख विष्णु नारायण ॥ १ ॥

व० रंगा का

दो०—सोना लाखन का करा, आयो घर मलखान ॥
इत माहिल पहुँचे तुरत, दिल्ली के दरम्यान ॥

व० माहिल का पृथीराज से

दो०—श्रीराजन महाराज हम, लाये सखा अनूप ।
सिद्धि होय कारज सकल, इन्द्रप्रस्थ के भूप ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौ०—इन्द्रप्रस्थ के भूप तुरत हाथिन पर झूलें गे।
नौलाख दलको साज आज अब्बल सरसाको दें।
चन्द्रपालको लाल मारके करो छनक में कैदै।
फिर गढ महुबो मारि २ तोपन से करहेउ देउ॥
दौड़—तुरत सब सैन सजाओ। वक्त ऐसा नहिं पाओ।
न कोई तुमसे अटके। ऊदल आवे नहीं ससम, लूट लेउ बेखटके॥ ३॥

ज० प्रथीराज का

दो०—आल्ह ऊदल की खबर साँची देउ बताय
जो कालिहा आवे नहीं, गंगा लेउ उठाय॥
चौ०—गंगा लेउ उठाय मान तुम वचन सचमैं लूंगा।
नौलख दलको संग सजाकर फौरन कूच करूंगा॥
ज्यों नभ बरषत मेघ धनुष लैं यों सर बरसाऊंगा॥
अररर अररर तोप छोड़ नभ धरणी दहलाऊंगा॥
दौड़—हमें विश्वास कराओ। कसम गंगाकी खाओ॥
न मनमें शंका लाऊं। तीन दिवस में सरसा महुबो जमी दोज करवाऊं॥ ४॥

ज० माहिल का

दो०—नृपति आपके सामने, कसम गंगकी खाहिं।
आल्हा ऊदल अब कोई, महुबे आवे नाहिं॥
चौ०—महुबे आवे नाहिं क्योंकिवासतमें उन्हें निकारो

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मलापे आयो ताको मैं सबब बताऊं सगी ॥ चल
तो विरियां चन्द्रावलि सो ऊदल गंगा हारी । अब
आमन को नहीं वहीं टूकन पै करे गुजारी ॥

दो०—तुरत सवसैन सजाओ । बक्त ऐसा नहिं
पाओ । भलो होय नृपति तुम्हारो । जो मैं बोलूं
झूठ मरै इकलौता पुत्र हमारो । ५ ।

व० प्रथीराज का

दो०—चोब नगाडे पर पडैं, अब मत करो अबार ।
चंद्रभाट मंत्री मेरे, करो फौज तैयार ॥

चौ०—करो फौज तैयार कटक का बजे जुझाऊ
बाजो । सजैं रुहेले और बघेले बडगूजर नागाओ ।
बारहु राजा मुकटबन्दला सोगजराज विराजो सैयद
मुगल पठान गोरखा, ज्वान कबुलिया साजो ॥

दो०—सजैं दस फरासीस के । यहूदी दस चीन
के । कसाई तुर्क मुसल्ला । हुक्म सुनादो मेरा करैं
सब सरसा ऊपर हल्ला ॥ ६ ॥

व० चद्रभाट का

दो०—सब महीप शिर मुकटमणि, होव बुद्धिनिधान
तुम्हरी बरणी को नहीं, कुमर वीर मलखान।

चौ०—इकलोहै मलखान नीति को समझो महाजग
ऊके । आप चुगलसे करो सलहा महाराज मेरो तनं
सुने । इकले पर नौलाख चढौं सब जगत जनम में
थूकैं काजी मुल्ला चुकजाय विरथोद्द चुगुल नाहिं चूके

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो०—सीख माहिल की मानो । न तुम्हरो लगे ठिकानो ।। जिस घड़ी मलखे कोपे । किसकीमाने नाहर जायो समर दो घडी रोपे ।। ७ ।।

ज० माहिल का

दो०—ऐसे मंत्री आपके, क्या होनी कुशलात ।
सगुन समय असगुन करे, बड़े जुलमकी बात।

चौ०—बड़े जुलमकीबातइसे महाराज लाज नाहिंआवे
गुनगावे बन्नाफल के और नमक तुम्हारो खावे।तुम
पुत्र रखो लगाय भाटको हरदम हंसी करावे । इकको
मलखे नौलखलख सों फतह न हरगिज पावे ।।

दो०—भाटको नमक हरामी।कर रखो मँत्री नामी
समझ देखो मनमाहीं । कर्म हीन कम्बख्त भटाको
सिद्ध समय पर नाहीं । ८ ।

ज० चन्द्रभाट का

दो०—अब हमको मालुम भई, करे तुम्हें निरवंश ।
यह माहिल करवायदे, दोऊ वंश विध्वंश ।।

चौ०—दोउ वंश विध्वंश होय जब रण तेगा खटकेगो।
विरलोइ कोई सूर मुकाबिल मलखे के फटकेगो।।
जुरवा अनी घनी तुमसे फिर आप अलग सटकेगो।
वच्छराज को लाल लाश पै लाश काटपटकेगो ।।

दो०—वो मलखे हैं रणवंका । काल की खाइ न
शंका ।। न रन में पीठ दिखावें । पचजाइ हारा
कार तेग ले जब रणमें अरावें ।। ९ ।।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब० माहिल का

दो०—कह्यो नीति चाणाक्य में, तुम्हें दिखाऊं आज ।
सन्तोषी नृप नष्ट होय, असन्तोष द्विजराज ।

चौ०—असन्तोष द्विजराज नष्ट हो लिखा नीतिमें ऐसे
निरलज्जा कुल वधू नष्ट हो गणका लाज करेसे ।
गुण निधान नीतज्ञ विक्रमी फिर चूकत हो कैसे ।
गांडू बनियों मती भूप या भटरा के कहने से ॥

दो०—भाट को नमक हरामी । कर रखौ मंत्री नामी ॥ भूप मानोगे याकी । डूबजाय सब बनीबात तुम्हरे बाबा दादाकी ॥ १० ॥

ब० रंगा का

दो०—चन्द्र कवी की कहनको, एक न विधो प्रमान ।
माहिलकी सिख मानके, चले धनी चौहान ॥

छा०—चल दिये धनी चौहान देर नहिं कीनी । सर्वज्ञ अनी चतुरंग बनाकर लीनी । महाराज हात निज लीनी चाप सम्हार । आदि भयंकर पर चढ बैठौ दुर्यौधन अवतार ॥ ताहर धांधू और धीरा छत्री साजे । लोहा, धौंडा, पारस, बूंदा रण गाजे ॥ महाराज धवल गंगा रंगा सजदीन । जोगा भोगा कान्हराइ से साजे सूर परवीन । सूरज चन्दन, नन्दन, गये छत्री सजके । मोहन, सोहन हाथीपर चढे गरजके । महाराज सजी मर्दन मर्दनकी ओट । तिनकी समर भूमि में कोई झेल सके नहिं चोट ॥ सजगये कबुलिया खांय न मनमें शंका ॥ सब सजे रहेले सूर सुभट रण बंका । महाराज हाथ नंगी दो २ तलवार । हाथिन

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के मुंडा हौंदा भये चार२ असवार। मौटें २ जोंधन को सजगई पलकी। कवि कहांतक कहे सजावटनो लख दलकी॥ महाराज सजगये तु के सुभल्लाजी॥नौं ऊलाख एक संग कियो सरसा पर हल्लाजी॥

छंद—नौंऊलाख भटकी सेन जो जब कोपकरसरसा चली। तब कमठ दिग्गज कोल कूमर धराहू डग मग हली॥ बंदूक छोड़ कोई भट कोई घुमावत सेला वली। रज उडगई आकाश में यौंसेनचलीउतावली

लामनी—महाराज चहूंदिशि से होआईओट। एक संग जब दशोदिशा से घेरो सरसाकोट॥ कहूं कहूं सूर भट गर्जधवलभचंडा। तम्बू गढ़वाय आस्मानमें झंडा॥ महाराज फौज पडगई कोस५ःचार।इसवत खेडा चढी पद्मिनी गजमोतिन जो नार॥

दो०—चहूंदिशि फौज निहारी। कियेदृग से जल जारी॥ उतर कर नीचे आई। एक संगआकर पछार जो पाव सास के खाई॥११॥

प० कनका का गजमोतिन से

दो०—तोकूं कहा वहुभर भयो,दीनो होश गमाय।
नैनन से आंसु बहैं, गिरी धरण मुरझाय॥

चौ०—गिरी धरण मुरझाय विकलता केसवायगई हे।गोरो वदन श्याम भयो सब सूरतमुरझाय गई है। क्या भयमानी जो पछार चरणो पर खाय गई है। सच्च २ वतलाय वहू कैसे घवडाय गई है।

दो०—कांति भयो परगई फीकी। बिया निजकह दे

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बोली ॥ बिना जल मछली जैसे । नख सिख से सब बदन बहू तेरे तड़कन लागों कैसे ॥१२

ब० गजमोतिन का

दो०—सासजी मैं क्या कहूं, मन अपने की बात।
नाव मेरी मंझधार में, लाज राम के हाथ ॥

चौ०—लाज राम के हाथ सास कुछ कही न जावे मोपे।
सतखंडा चढ देख धनी चौहान कन्य पर कोपे ॥
बावनगढ सों समर अकेलो बालम कहां तक रोपे।
काऊ बिध मेरो सुहाग सास ले बचा बचे जो रोपे ॥

दो०—धीर मन धरे न मेरो । सरसमा बैरिन घेरो ॥ होत असगुन मोइ भारी। चटकत कर की चुरी नाकसो निकसे नथ भलकारी ॥१३

ब० कलछा का

दो०—ऐ बहुअर कैसी भई, कहा करी भगवान!
बावनगढ चौहान संग, सुत इकलो मलखान॥

चौ०—इकलो है मलखान लड़गो रनमें नहीं डरेगो।
भैया कोई पीठ पर नाहें कौन सहाय करेगो॥
नौलखदल चौहानन को एक संग शस्त्र पकरेगो।
मो रंडिया को लाल अकेलो रणमें जूझि मरेगो॥

दो०—लाल लाख इकलो मेरो । सरसमा बैरिन घेरो ॥ जोर चौहानन छायो । आल्हा ऊदल ये महुबे छांडि वा दिन कोई न आयो ॥१४

ब० गजमोतिन का

दो०—ऊदल देवर पै खबर, सासुल देउ पहुंचाय।
रणबंका आवै यहां, तो सुहाग बच जाय॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौ०–तो इतराय बच आय भाइ देवर हो धीर धरोगो। चौहानन के अन्दर नाहर सो कूद परेगो ॥ नौलख दल में तेग अकेलो कहां तक बलम करेगो। विन वेतुव चढवैया के को आ दल दपट हरेगो ॥

दो०–मान सखन अरि दलके। करे को विन ऊदल के। निडर सोवे पति वाके। आमन रह्यो न जान विरे सरमा के आरों नाके ॥१५

जवाब कनका का

दो०–अवमत करे विलम्ब तू, बहुआर चतुर सुजान।
सोवत हैं सुखनींद में, कुमर मेरो मलखान ॥

चौ०–कुमर मेरो मलखान जगादे अवमत करे अवारी गज चिक्कारें कटक हय होंसे मचो कुलाहल भारी॥ दल बादल नभ धूर पुर दिन को भई रैन अंध्यारी। सुन २ शोर घोर तोपन को छाती फटे हमारी ॥

दो०–नागिन तलवारें चमकें। मनो घन दामिन दमके ॥ मोर मन धीर न आवे। दे जगाइ मेरो केहरि कहीं सोवत नहीं घिरि जावे ॥१६

ज० गजमोतिन का

दो०–शैया ऊपर धर रखौ, संत नागिन शमशेर।
कच्ची निद्रा जग पड़ें, करें हमारो ढेर ॥

चौ०–करें हमारो ढेर मेरो जी इससे दहशत खाहै। कच्ची नींद जगावत में तन थर२थर थर्रा है। यों बन बीच निशंक केहरी ऐसे सोय रहा है। महा क्रोध विष भरो पोलिया नाग तेरो बैठा है ॥

दो०–तुम्हारो सुन .... जगावत आऊं शंका॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आत मम जीव हरै है। तुमहीं देउ जगाय सास मेरी हिम्मत नाहिं परै है ॥ १७ ॥

ज, चमक. का

दो०-सोवे बहुधर नींद में, दै सुत हाथ उठाय।
धर्म छीण होय समरथैं, लैट भगवती जाय।
चौ०-लौट भगवती जाय पुत्रजो मापें हाथ उठावे।
सोवें उठजाय हाथ वहू व मोक्ष परमपद पावे ॥
तब मन संशय शंक निकट परियंक क्यों नहिं जावे।
[illegible] ओट हो जइयो जब मौन हग हाथ च[illegible]वे ॥
दौड़ जगाला पति अपन को मली हारे हिम्मतको।
मोर मन धीर न आवे। दू जगाइ मो केहरि कहीं सोवत नाहिं घिरजावे ॥ १८ ॥

ज, रंग. का

दो० सुनत वचन निज सासके, वो गजमोतिननार।
पियहि जगावनको चली, कर सोलह श्रृंगार ॥
छंद-षोडश किए शृंगार सज बत्तीस अभरण कामनी
ऐसे दिपत है रूप यों अकास टूटी दामिनी ॥
जाकर पतीके पास प्रिय पलका घोर सुनावती।
जागी नहीं मलख नवन जब ठवि हस उन जावती।
चंदनकी विजनी हाथ ला [illegible] पतिको दोरती।
तोऊ न जागा शूरमा तब रानी बचन यों बोलती १९

ज० गजमोतिन का

दो०-क्या सोवै सुखनींदमें, प्रीतम चतुर सुजान।
सरसाबाद प्यार पिया, घर लिया चौहान ॥
चौ०-घेर लयो चौहान आपको कई नींद छपासी।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तुम्हें करन चाहैं दिल्लीपति कंथ स्वर्ग को बासी ॥
उठकर जतन करो नहिं होवे हँसी बलम सुखरासी।
काहे छनक में सरसा प्रीतम लुटी जात अंकासी।
दौ०-पर तुमनिन्द्रा लीने। काप चौहानन कीने।
शीश दुश्मन ललकारे। सुखकी निंदिया गई जगो
रण शूर परम प्रिय प्यारे ॥ २० ॥

ज० मलखान का सोते से उठकर

दो०-तनक भनक कानन पड़ी, छायो क्रोध प्रचण्ड।
नैन सुर्ख दोनों पड़े, फड़क उठे भुजदण्ड ॥
चौ०-फड़क उठे भुजदण्ड रूप मम काल समान भयो
है। लड़के नकटन पे क्रोध अतुलित तन छाय गयो है।
तेगा लेके हाथ पलँग में लाँघ कदम दयो है।
किसने राना बता घेर सरसा कोट लयो है ॥
दौड़-छनक में ताहि पछाड़ूं। सैन तहसनहस कर डारूं ॥
न महलन बैठ रहूंगा। एकबार तो रन अंदर होरी
सी फूंक दऊंगा ॥ २१ ॥

ज० गजमोतिन का

दो०-आमन जामन पति रह्यो, घिरो सरसमा पंथ।
बावनगढ़ चौहान ले, तुमपर कोपो कंथ ॥
चौ०-तुमपर कोपो कंथ देख दलका पति छाती धड़के
टीडोदल चौहानन के से बड़ो कालक अड़के।
दूजे भैया लड़ो जंग जो फतह पाऊँ लड़के।
जो होतो दबर ऊदल सगमें लड़तो बढ़ २ के ॥
दौड़-आप इकले पति मेरे। आय चौहानन घेरे ॥
कौन विधि फतह पाउगे। परे प्रातके दुश्मन अब पति

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कैसे निकस जाउगे ॥२३॥

ज० मक्खान का

दो०—एक विथौरा क्या चढ़ो, मेरे ऊपर नार।
बामनगढ़ इन मुखनसे, करदए पनियांदार॥

चौ०—करदए पनियांदार ठेसे नौलखदककपटि इकूगा मेड़ यूथ चौहानन में बिछया सा कूदपडूंगा ॥ मेंच प्रतिज्ञा करूं समर जब अपने प्राण तजूंगा। एक बारतो बादशाह का क्षत्र भंग करदूंगा ॥

दो०—योही पीजामें प्यासे। न कुछ में दूधक गासे॥ निगलने मुझको आवे। कैसौं हूं नाहर होयपेटका सारे को फटजावे ॥२३॥

ज० गजमोतिन का

दो०—कनवज में जाकर वसे, प त तुम शिरकेढाल
चाहिये अरके सामने, एक माके दो लाल॥

चौ०—एक माके दो लाल होय सब वैरी शंकाखावे। एकसे बिगर जाय खेतनमें दुसरो तेग चलावे। प्रान नाथ इकलाको काहुंखातिरमें नहि लावें। नौलखदल में इकले की पति एक पेश नहि जावे ॥

दो०—आप इकले पति मेरे। आप चौहानन घेरे॥ कोन विध फतह पाउगे। पड ग्राहके मुखमें अब पति कैसे निकस जाउगे ॥२४॥

ज० मक्खान का

दो०—ए रानी मन सबर कर, क्यों घवड़ाई जाय।
नौलख दलमें दऊंगा, हाहा कार मचाय॥

चौ०—हाहाकार मचाय दऊं मन शंकानहीलाऊंगा॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौहानन के अनीगोलअवइकठाकर धाऊंगा॥ समर भूमि मट काट मुंडभुजबरसाबरसाऊंगा॥ खट २ खट२ तेगा कर नम धरनी कम्पाऊंगा॥

दो०—प्रिया क्यों तू डरपैहै। जब तक मम शिरधरपैं हैं॥ मेरा वह क्या कर लेगा। पृथ्वीराज बादशाहके करूं छत्र पर तेगा॥१५॥

जवाब गजमोतिन का

दो०—दल ऊलके चौहान का, गई मात घबड़ाय।
खाने को भाषा नहीं, रही दृग नीरबहाय॥

चौ०—रही दृग नीर बहाय विकलता छायरही है भारी। सलखंडा चढजाय फेर नीचे उतरें महतारी देख २ चौहान कटक शिर पटकै मात तुम्हारी। चल कर धीरज देउ मरै नहीं माता खाय कटारी॥

दो०—पिया मत देर लगाओ। भवन को कदम बढ़ाओ॥ न मन धीरज धरती है। चलौ हमारेसाथ याद महलन माता करती है॥१६॥

जवाब रंग का

दो०—सुन गजमोतिन के वचन, चलाबी मलखान।
तेगा लीनों हाथ में धर अम्बे का ध्यान॥

चौ०—धर अम्बे का ध्यान सूर महलन को सुरति सम्हारे। शिर पर मुकुट गले में माला मणिमुक्तनकी डारे। कंघा गेंडा ढाल खर्ग कर बरवालकोधारे ऐसे चला महलन को जैसे बनमें सिंह सिधारे॥

दो०—सुन निज महलन जाके। शिर चरनन माता के॥ कनकदे ने पुचकारी। कर परिक्रमासातफेर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मलखे ने बचन उचारो ॥ २७ ॥

जवाब मलखान का मात से

दो०-ए माता रोवै मती, मत मन में भय मान ।
जबतक जीवे केहरी, कुमर तेरौ मलखान ॥

छं०—कुमर तेरा मलखान सुन मात मेरी शूरवीर सामन्तनको काल हैरी । हमको मारे छत्री धरन ऊपर तो सुत समर को महा बिकराल हैरी । फैले मनखुशा मेरौ रनखेतमें जब फोरे शूरनके गाल माल हैरी बादशाहके छत्र और मुकुट काटे जो मलखान तेरौ असल लाल हैरी ॥ २८ ॥

व० कनका का

दो०-कुमर कन्हैया लाडले, को मम प्राण अधार ।
यों घन दामिन प्रभादक्ष, यों चमके तलवार ॥

चौ०-यों चमके तलवारदावलिये चौहाननने नाके । तोप तमंचा कड़ाबीन छूटे पिस्तौल धमाके ॥ सुन सुन शोर घोर तोपन को मम उर होत सनाके । टौडी दलनो ऊपर घूमें शूरवीर रण बांके ॥

दौड-होय सुत इकलो चीन्हों । कोप चौहानन कीन्हों ॥ न मो मन धीर बँधेगो । तेरो टकासो जान कन्हैया कैसे समर सधेगो २९ ॥

जवाब मलखान का

दोहा-ऐ माता मेरा क्या करे, नौलख दल चौहान ।
सिंह सिंहनी जनो मैं, शूर वीर मलखान ॥

चौ०-शूरवीर मलखान तेरो सुत जब रण रंग रचेगो समर भूमि के बीच मात मेरी हाहाकार मचैगो ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नभ भूमण्डल थथराय औ कुमर कमठ लचैगो ॥
या कृपाण के मुख को ई भट जीवत नाहिं बचैगो ॥
दौ०—तेरो सुत लड़ जहां पै । कमठ धरणी धर काँपै ॥ तेग जब रणमें चाले । अतल वितल पाताल तलातल शेष सहस्र फण हाले ॥ ३० ॥

ज० कनका का

दो०—फटक निरखि मलखान सुत, सूखत मेरे प्रान ।
मिलो धनी चौहानस. कही हमारी मान ॥
चौ०—कही हमारी मान बावले नहिं चौहान हटैगो ।
नौलख दल के बीच अकेलो कैसे कुमर डटैगो ॥
टीड़ी दल चौहान नहीं काटे से लाख कटैगो ।
एक संग हल्ला करि टूट सीनो तेरो फटैगो ॥
दौड़—किलो तजदे सुत मेरे । प्राण बच जायँ तेरे । हरसना फिर मिलजावैं । बेटा छोना कुमर कन्हैया गई जान नहीं आवे ॥ ३१

ज० मलखान का

दो०—कायर मिलते आइके, समर भूमि के बीच ।
मेरा मिलना होय अब, मचै रुधिरकी कीच ॥
चौ०—मचे रुधिर की कीच हटूं नहिं प्रलय काल चाहें बीतो । अरिदल दपटि झपटि मारूं यों मृग समूहपर चीतो॥सन्मुख चोट लेह तेगाकी को भट बचे न जीतो।
मुंड रुंड भुजदंड खंड कर करदूँ सकल रण रीतो ॥
दौड़—मात मन धीरज राखो । देखियो मेरी साखो ॥ हाथ पर हाथ धरूँगा ॥ जबतक दम में दम मेरा नहिं हरगिज सुलह करूंगा ३२ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उ० कनका का

दो०—आल्हा ऊदल घर नहीं, लेइ कौनकी ओट।
अब बचने को ना कुवर, तेरो सरसमाकोट॥
चौ०—तेरो सरसमा कोट शूर सौं एक संग छूटेंगे। चले तोप दक दहन कंगूरा कंचन के फूटेंगे। प्रबलवीररण घोर घन अजवगोल बांधि टूटेंगे। हाट बाट घर घाट सरसमा पात २ लूटेंगे॥
दो०—किलो तजदे छल करे प्राण बचजायें तेरे॥ सरसमा फिर मिलजावे। बेटा छोल कुमर कन्हैया गई जान नहि आवे॥३३॥

उ० मलखान का

दो०—ए माता तू क्या कहै, हारी २ बात।
समर भूमि रणखेत में, दिनको करदऊं रात॥
चौ०—दिनको करदऊं रात मात तू क्यों घबड़ाई आवै। करत गिरारे जाय तेरो सुत जब रणमें अर्रावैं॥ काट२ भट सुभट युद्ध करि योधन धराणविछावे। भूमंडल नभ मंडल रवि मंडल थाथर थर्रावें॥
दो०—तेरो सुत लड़े जहां पे कमठ धरणीधरकांपे। सेना जब रणमें चाले। अतल वितल पाताल तला ल शेष सहस्त्र फन हाले॥३४॥

उ० कनका का

दो०—आल्हा ऊदल पर कुवर, वर देउ पहुँचाय।
ब्रह्मा, जागन, तलन्मी, ले सबको बुलवाय॥
चौ०—ले सबको बुलवाय प्रबल दल जब चौहान कटक्को। ऊदल आय बिनापिछमनोंनहीं रिपुकटक

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हटेगो । सबे बेंदुला टाप भटनकोसीनौउदलफरैगो ।
या बेटा नरबंका के कोई सन्मुख नहीं डटेगा ॥

दो०—भेउ सबको बुलवाके । लखोहरलाकरजाके
जो इकले युद्ध रचो तुम । बेटा कुमर पुत्रनंदनसुत
जीवत नहीं बचो तुम ॥ ३५ ॥

ज० मलखान का

दो०—आस बिरानी जो करैं, सो रणमें दहलाय ।
मोह भरोसौ भुजन का, ईश्वर करैं सहाय ॥

चौ०—ईश्वर कर सहाय लग पानक काम जा मन
मारो । ब्रह्माजीत लड़ा महुबे मैं मैं नहीं कऊ सहारौ
समर भूमि में मात नहीं कऊ ऊदल कबं हमारो ॥ हनूं
अकेला नौऊलाख तो मलिबे पुत्र तुम्हारो ॥

दो०—बुलाऊं क्या ऊदल को । हनूं मैंनौलखदल
को ॥ बदह चाहे देहूंगा । अपने साथ बीच किसीको
शामिल नहीं करूंगा ॥ ३६ ॥

ज० कनका का

दो०—नौलख दल चौहान को, रोक सके सुन कौन ।
दस हजार सेना तेरी, ज्यों आटे में नौन ॥

चौ०—हमारे में नौन तोइ सुत चस का कैं नकोबल हैं
देखु नजर पसार चहुं दिश पृथीराज को दलहै ॥ रहे
प्रारा घबराय जीव मम भयोजात बेकल है । मान
हमारी कहन अधर्मी के बुलाय ऊदल है ॥

दो०—बिना उदल आंधका । लाह बोह ननशंका
जो इकला युद्ध [illegible] बेटा कुमर पुत्र नंदन
सुत जीवत नहीं बचो तुम ॥ ७५ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो०— तैं सुत जन्यो केहरी, मनमें धीरज राख।
नौलखडलकोक्या असल,चाहेंचढोअठारहलाख।
चौ०—चढो अठारहलाख संग जबखटकेमेशारनमें।
चकचकाय चहुं चक्र कुलाहलमचजायदशोंदिशनमें।।
डिगमगाय दिग्गज महि कम्पे रविरथ छिपेगगन में।
करूं तेग अब म्यान मात कोई रहै नचोहानन में।।
दो०—तेरो सुत लखे चहांवें। कमठघरनीधरकांपें।
तेग जब रणमें चाले। अतल वितल पाताल तला
तल शेष सहस्त्र फन हाले।। कनका का
दो०—समझत समझायो नहीं, ठाने अपनी ठान।
रण से तू बचनों नहीं, ऐ बेटा मलखान ।।
छ०—ऐ बेटा मलखान सुन बात मेरीपीछे मती
हटियो चाहे जूझि रहियो। एक संगचौहानजबकरें
हल्ला बलघराय बेटेबालमाजआइयो इन्होंनें
पीछे आल्हा उदैचंद के मेरी कोख को दाग मत सुत
लगइयो। इन्दल कहें पृथीराजकेकाट छत्र एकबार
मेरे लाल मोहि दिखाइजइयो ।३९। मलखान का
दो०—अब मत करे विलम्ब तू, धर मम शिर पर हाथ।
मैं जाऊं रणखेत को, ठोक पीठ दे मात ।।
छ०—ठोकपीठदे मात पत रखनाअब तक जाऊंसमरको
तनक नहीं करूं देरी।जैसेमृगनको झुंड केहरीघेरेनी
उसीतरहसेना ऐ अम्मा कंधेरी।कान्हराय को धीरदो फांककर
दूं काट शत्रु छत्र करूं न जरा देरी। मांडो देऊं जनकी
अपने हाथसेअबांदा करे दोऊ पूजदे भुजा मेरी।४०।।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो०—समर कवन तू बात है, मानै कही न हमार।
दरवाजे मैं खड़ी हूं, लै कंचन का थार ॥

छं०—लै कंचन को थाल मैं खड़ी द्वारे देखूं समर मैं कैसौं तू रण मचावै । आठ धवल सोलहु सामन्त आगे कितनी देर कटके तेगा तू चलावै । सहदेव आगे कहा लड़गौ तू तेरी कहन कोमोहि नहीं साँच आवै । इता कहैं वादम पूजूं भुजा तेरी तादम काट पृथीराज का छत्र लावै ॥४१॥

ज० मलखान का।

दो०—ऐ माता तू मत करै, सिद्धि समयपर नाहिं।
सोलह सामंत सूर सौं, आठ धवल के माहिं॥

छं०—आठौं धवल के माहिं जिसदम तेग अपनी बजाऊँगा। छोड़ूं न एकहु जीवतौ धरणी बिछा मैं दऊंगा मैदान मैं जब सर्गले फैलूंगा मैं शिरधाय के। भुज दंड मुंडन रुंड का बरषासी दऊं बरषाय के॥ चाहे काल सन्मुख लड़े रण मलखान नहिं पीछे भगे। ऐसा करूंगा युद्ध रण तिहूं लोकहु कम्पन लगे॥ चौहान के रणखेत में जब सुत तेरी रंग रचैगो। सरिता बहैगी रुधिर की संग्राम ऐसौ मचैगौ ॥४२॥

ज० रंगा का

दो०—कहि कर इतनी चल दयौ, कुमर वीर मलखान
बीच कचहरी आइके, बैठे सिंह समान ॥

चौ०—बैठे सिंह समान शूरमा सब अपने हकारे। तमक बार रहा घोर अवगा अनुशासन सुन तपधारे॥ पहिर२ बख्तर अंग में सबने हथियार सम्हारे। गंजन लागे सुभट शूर जो रण से कभी न हारे॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो०-कोई भट साँग घुमावें कोई तेगा चमकावें।। कोई भट धनुष सम्हारों। इत मलखे कोकटकलखि इत माहिल बचन उचारो ।।४३ ।।

ज० माहिल का प्रथीराज से

दो०-सिय पति रावण मदमथन, भेजो अंगद वीर
तैसे ही मलखे मदमथन, आप पठायो धीर ।।

चौ०-आपपठाओधीरवैरीमहाराजसमझयहयावे। यों अङ्गद करपद २ रोपो यों निज सांगजमावे।। बच्छराजके बेटाको या विधि से बल अजमावें जो उखरे नहीं सांग तो खाली सरसा कोट करावे ।।

दो०--जो ऐसे ही सरसा पावो । तो फिर क्यों जंग मचाओ । ढलव अपनों बेठाओ। फिरगढसरसा छोड भूप मलखे पर कोप लगाओ ।। ४४ ।।

ज० रंगाका

दो०-सेवक श्रीहनुमान का, ता बलको नहिं अंत ।
लीनों व्याह बुलायकर, वीर वीर सांमत ४५

ज० प्रथीराज का धीरा से

दो०—तुम वरदानी कालीके, तनक न बिलमलगाउ।
हनूमान लंका गये, तुम सरसा को जाउ ।।

चौ०-तुमसरसाको जाउवीररणधीरनविलमलगाओ। करके यतन हजार किसी विधदमथिरिपुको लाओ ।।अंगद रोपो चरण लंक मेंतुमनिजसांगजमाओ। जाय अंशकानरवंकामलखेकोनामनशाओ।।

दो०-सरसमा पर कोपो तुम जायनिजप्रणरोपो तुम ।। छेद भूतल को लीजो। ऐसी धमकें सांगफणी पति फणकत पहुंचा दीजो ।।४६।।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो०—सुनत वचन धीरा चलो, ले संग दोसौज्वान।
पहुँचो जा दो घड़ी में, जहां बैठो मलखान ॥

चौ०—जहां बैठो मलखान कटक निज सजा रह्यो बलधारी। जगरमगर कररही भरी सूरनके बारहदारी झझ २ पर तोता मैनाकरें शब्द शुभकारी। रंगबिरंगे शूर सजे मनो फूलरही फुलवारी ॥

दो०—वनिता मलखानवीर की। लखि उठी सकल धीर की ॥ लागके इत उत डोला। सिर नवायकर के गही को धीरा बोला ॥ ४६ ॥ ज० रंगा का

दो०—अबतक कछु बिगरो नहीं, सुन योधा मलखान।
मिलले प्रथीराज से, कही हमारी मान ॥

चौ०—कही हमारी मान कोट सरसा तेरो बचजावे जान मुफ्त में जाय तुम्हारी जोसंग्राम मचावे ॥ रंडिया दुनियाके बेटन को काहेको मरवावो नोलखदल चौहानन को सा जीत अकेलो लावे ॥

दो०—कटक एक संग झुकेगा। न तोपे समर रुकेगा ॥ इकलो कहांतक डाटेगा। शस्त्रपेर नोऊलाख वदन पर घनो २ फाटेगो ॥ ४७ ॥

ज० मलखान का

दो०—सूर सुभट रजपूत जो, समर देख हर्षाय।
यह कायरके काम हैं, मिलन शत्रुसे जाय ॥

चौ०—मिलन शत्रुसे जाय उन्हें क्षत्रीमत गिनो चपल हैं। मलखे मिलनो नाहिं तेरी क्या मारी गई अकल है। नोलख दल चौहानन के में मचाऊं खलबल है। मुंह रुंड भट काट पाटदऊं समर भूमि यह कल है ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो०—अतुल दल चौहानन को । बनूं मैं काल सबन को ॥ चलै जब तेग हमारी । महि कम्पे दिग्गज डोलें अहि कमठ अरैं चिक्कारी ॥ ४८ ॥

ज० धीरा का

दो०—आल्हा के पीछे तैंने, जीत लये संग्राम ॥
अब मुश्कल से बचेगा, तेरा सरसमा धाम ॥

चौ०—तेरा सरसमा धाम बचै नहिं क्या हजार जतन है । जो चाहो कुशलात जान की खाली करो वतन है ॥ कै मिल लेउ शाह को देकर ग्यारह भट रतन हैं । नजर हजारों नर पारस की डोला गजमोतिन है ।

दो०—जो मानों कह्यो हमारो । तो बचजाय कोट तुमारो ॥ जो इकलो जंग मचावै । हाट बाट घर घाट सरसमा लंकासी लुटजावै ॥ ४९ ॥

जवाब मलखान का

दो०—अबतक रवारो सरसमा, अब सुधि लई भगवान
बामनगढ़ को कोट सम, मचो आइ घमस्यान ॥

चौ०—मचो आय घमस्यान आज तन क्रोधानल झपकूंगा । मस्तसमूह गयन्दन के करि समान पटकूंगा । गूठा सम दिल्ली भिनुगा चौहानन को लपकूंगा । वनचर सम खांडो मेरा सब याके मुख गपकूंगा ॥

दौड़—अतुल दल चौहानन को । बनूं मैं काल सबन को ॥ चले जब तेग हमारी । महि कम्पे दिग्गज डोलें अहि कमठ अरैं चिक्कारी ॥ ५० ॥

ज० धीरा का

दो०—समझत समझायों नहीं, ठाने अपनी ठान ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यौंही मारो जायगो, तू योधा मलखान ॥
चौ०—तू योधा मलखान समर चढ वृथा जान खोवेगो। हाडमास ना बचे तो ऊपर जब हल्ला होवेगो।
शस्त्र परे नौलाख वदन पै मूंड पकड रोवेगो। जान लई तू बच्छराज को नाम आज खोवेगो ॥
दौड़—कटक एक संग झुकेगो। न तोपर समर रुकेगो॥ इकलो कहांतक डाटेगो। शस्त्र परें नौऊलाख वदन पर धजी २ काटेगो ५१ ॥

ज० मलखान का

दो०—कहो जाय पृथ्वीराजसे, सम्हर जाय चौहान।
मिले तेग की धारसे, कनका सुत मलखान।
चौ०—कनका सुत मलखान मिलें रण भूमि रक्त अब भीजे। बच्छराज के नरबंका पर हल्ला एक संग कीजे।
कंठीकान्ह बाप आपने के खोल अंघोटे दीजे॥ मेरो वाको मल्लयुद्ध अब देख समर में लीजे ॥
दौड़—गेंदसो ताहि उछारूं। पटकि धरणी धर मारूं॥ तो मैं मलखान प्रचंडा। काट शाहका बत्र कान्ह के करूं बीर दुइ खंडा ॥ ५२ ॥ जवाब धीरा का
दो०—ए महुबे के रहनवा, बोल जबान सम्हार॥
राजन की बरबर करो, तुम कुलहीन गँवार।
चौ०—तुम कुलहीन गँवार मुकाबिल राजन केमत आवो। मैं दऊं अपनीसांग उखारधमकितुम बलअपने अजमावो॥ सांगउखार देउ बँगलासे तोरणजंगमचावो। जो नहिं उखरे सांग तो खाली गढ सरसा करवावो

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो०—पिता से पीछे लड़ना । पहिले बल हमसे करना ॥ जो हमसे लड़ो लड़ाई । आल्हा, ऊदन, ब्रह्मा, और परिमालहि लेउ बुलाई ॥ ५३ ॥

ज०मलखान का

दो०—तसनस जब दिल्ली करी, कहां गई तव सांग ।
मो भयसे त्रिय शाहकी, मोती धरे न मांग ॥

चौ०—मोती धरे न मांग काल वेशमें तोप नहिं आयो । वही मलखे हूँ निज दिल्ली वेलाको ब्याह रचायो । मुश्क बांधकर तेरे बापकी कन्यादान करायो । कहां घुस गई सांग तेरी जब ब्रह्मा पग पुजवायो

दौड़—लड़ाई सन्मुख लूंगा । सरसमा जियत न दूंगा ॥ न रंगा पीछे देलूंगा । दिल्ली करदऊं रांड जिस घड़ी तेगा ले फैलूंगा ५४ ॥ रंगा का

दो०—सुनकर मलखे के वचन, धीरा गुस्सा आय ।
सत्तरमनकी सांग कर, लीनो तुरत उठाय ॥

चौ०—लीनो तुरत उठाय सूर सुरखो दोउ दृगन छई है । कर छायो क्रोध प्रचंड सांग दोउ करमें उठा लई है । कै हनुमानको नाम सांग झट अररर धसक दई है सातो तवा फोर लोहे गज पन्द्रह समा गई है ॥

दौ०—सांग लट्टू तक धसकी । न रही सूरनके वसकी ॥ देखा सब हिम्मत हारे । गर्ज तर्ज कर फेर धवल धीराने वचन उचारे ॥ ५५ ॥ धीरा का

दो०—जो कोई मेरी सांग को, देगा शूर उखार ।
मैं उसका मातहत हूं, वह मेरा सरदार ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छं०–यह मेरा सरदार सब सुनों क्षत्रीय। मलखानकी कहनमममहृदयसाली। लंका बीच जैसे अंगद चरनरोपों तैसे सरसमा पे मैंने पैज डाली॥ लाज होउनकी आज भगवानके कर जाने विधाता कौन कौरसैं लाकी। इदा कहें सांग उखार मलखे नहीं सरसा कोट फाजाउतालो

ज० मलखान का

दो०–अतुल सुभट बलवीर मम, सुनो सूर सरदार।
या धीरा की सांग को, दीजे कोई उखार॥

छं०–दीजे कोई उखार अब सांग इसकी मारो सकल इस धीरका मान है जी। करो सागतिलखरमेरे सूरमा हो इस ने जोर तोलायहाँ आन है जी॥ ऐसे क्रूर जो सरसमा जीत लेवे फिर को कहैं गांधोसे मलखान हेवी। इदा कहे ले वेग फिर चलो रणको करो वंशाविध्वंश चौहान देवी

ज० रंगा का

दो०–सुन इतनी क्षत्री उठे, निज मन में हरषाय।
तमकि ताकि तकि२ गहैं रहे जोर अजमाय॥

चौ०–रहे जोर अजमाय सूरमा सुलखाइक का मैं अतुल प्रबल रणधीर वीर सब अपनो जोर जनामे॥ कर २ अपनों दाव कोटि विधि क्षत्री सांग हलामें। उखरन की क्या चली सुभट तिल भर हू नहि डगसामें।

कला–प्यारेजी या चरित्रको देख वीर सकले घबगयो। छोड कचहरी चलो भवन दुर्गा के आयो॥

छं०–कर पांच प्रदक्षण शारद की फिर हवा पाग से ढोली है। [illegible] गिर कर जगदम्बा स्तुति मलखे नें बोली है॥५८॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छन्द शार्दूल विक्रीडित—जै जै शक्ति कृपाल धारन करी जै जैति चंद्राननी । जै जै श्री शिव चंदनी भगवती जय जैति कंकालनी ॥ जय जय विघ्न विदारणी भव हरी जय २ खलनाशनी । ध्यावत मलखान वीर सुभट जय जैति सिंहासनी ॥

छंद त्रिभंगी—जय २ विधिरानी जय रुद्रानी जय नारानी मलदानी । जय बुद्धिदानी जय इंद्रानी जय वाकबानी अघहरणी ॥ जय वरदानी जय दत्तनी शिवा भावनी सुख करणी । जय जगरानी त्रिभुवन मानी मलखे ज्ञानी तव शरणी ॥

दो०—मोहि तुमरो अवलम्बा। मात अब करो विलम्बा। खबर लेउ जनकी अम्बा। शरण गहेकी लाजमात रखनी चहिये जगदम्बा ॥५९॥

ज० दुर्गा का मलखान से

दो०—क्यों आयो तू मम भवन, क्यों दरके दृग नीर।
क्यों मुख जरदाई छई कहु भट मलखे वीर॥

झू०—कहि भट मलखे वीर रणधीर योधा कैसे स्याम तैंने ठंढी भरी हैजी । पाके आजकौना आल्हा ऊदँन के कहा विपत भारी आपै परी हैजी। जब से अमर होके गया अमर से तू तब से याद मेरी नहीं करी हैजी । इन्दा कहै कहि सत्य मलखान बेटा कैसे भवन की सुरति तें धरी हैजी ॥६०॥

म० मलखान

दो०—चरण परूं करजोरके, कृपा कटाक्ष निहार ।
अरज मेरी श्रीअम्बिका, नाव परी मंझधार॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

झू०--पढ़ो नावमंकधार मम आज अम्बे करो बाए जननी मती करे देरी । नोबत्व फौंजले बढ़ो चों हान माता चहुंदिश सरसमां कोठ मम लियो घेरो॥ गाढ़ो धीरने सांग ला मेरे अंगका उखाड़े नाहितो जाय सब काज मेरो । इंदा कहे ऐसे में कर बाए नहया त्राहि २ जगदम्बे मैं शरण तेरी ॥६१॥

ज० दुर्गा का

दो०--ताकूँ तो भुजबलन को, हो भारी अभिमान।
नेकहि में हिरिआगयो. अब कैस मलखान॥

झू०--कैसे गयो हिरियाय मलखानमनेप मेरीबात को रास विश्वास बेटा । हनुमानकोप्रवलबलधारिके तन याकी सांगको सके उकास बेटा।एकवार जाए कोसी रकखदूंगी आखिर होयगो स्वर्ग में वासबेटा इन्दा कहे तो शीशपर काल छायो अब त जिवन की छोडदे आस बेटा ॥६२॥

जवाब मलखान का

दो०--ऐ अंबा मोइ मरनको, तनक न शोच बिचार।
वामनगढ में ते करी,मेरी अजय तलवार॥

झू०--मेरी अजे तलवार तें करी जननी मेरे जियत मम कोट नहिं शत्रु लूटें। धीर अवल को मानहो जाइ खंडन मोबलदेखने हानननिज शीश कूटें।पागस और लाहा के में प्राण सोकूं कंठीकान्ह के अंगोटे अधर खूटें। जीन युद्ध प्रथीराज का क्षत्र काटूं यह वर देउ अम्बा जब मम प्राण छूटें ॥ ६३ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो०--अरिदल जीते जीतले, मल्लयुद्ध में कान्ह।
चत्र काटले शाह को, तव जूझै मलखान॥

छं०--जूझेगो तव तू सुर पृथीराज मारे तीर हैं। पारस धवल लोहा हने चोंड़ा को कसी जंजीर है॥ वायौं लगा कर पैर दीजो सांग सुरउखा रके। कर सांगतिल्लर धीर के गल माहि दीजो डारके॥ सीधो न होय यों हान दल पे क्रांति सबकी होयगी। वह वर तुझे विन भस वन्नाफल नसीधो होयगी॥ ६४॥

जवाब मलखान का

दो०--तीर चलावे हाथ निज, पृथीराज चौहान।
मैं मारा जाऊँ यहैं, टूटे बाकी आन॥

छं०--चौहान टूटे आन मोपैं बान छोड़े मान है। फिर शाहपन मिटजाइगो नोकर के होय समान है॥ परिमाल आल्हा के मुकाबिल अगर तीर चलाइगो जगदम्बिका चौहान तो कुजपश जगत में पाइगो॥ मोपर चलाए तीर अपने नाम जगत डुवोइगो॥ ६५॥

जवाब रंगा का

दो०--कहि इतनी तत्री चलो, धवल बीर मलखान।
आयो अपनी कचहरी, बैठो सिंह समान॥

चौ०--बैठो सिंह समान ध्यान निज जगदम्बा को कीनो। लाल विशाल चढाय दोऊ दृग फिर धीरा को चीन्हो॥ गर्ज तर्ज नाहर समान सिंहासन से उठ दीनो॥ झपटे बाज कीर यों लट्टू वाप पग गहि लीनो॥

हो०--धवल फिर ठोकर मारी। सांग गज तीन

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उछारी ॥ फेर लेकर बलधारी । तिल्लर करके सांग चबल धीराकी गर्दन डारी ॥६६॥

व. मलखान का धीरा से

दो०—तू धीरा अब जा चलो, दल अपने के माहिं ।
यों कहियो पृथीराज से, मलखे माने नाहिं ॥

चौ०—मलखे मानें नाहिं टोनाहं नगलतुमसे लड़ि है । क्षत्री पनका कुछ है अरमान तो आमें बढ़ि है ॥ कोई चौहानन में करदे याहि सीधी सांग पकड़ि है । बिना करे संग्राम सो मेरा ले लेउ सरसागढ है ॥

दो०—कहो यह मलखे भाई । कहो निज दलमें जाई ॥ समर भुज मुंडन तोडूं । जो सीधीनहीं होय सांग चौहान वंश नहिं छोडूं ॥६७॥

रंगा का

दो०—सुन इतनी धीरा चलो, निज दल में बलवान
बलप्रताप मलखान को, निजमुख कह्यो बखान

चौ०—मुखसे कह्यो बखान सांग निज मलकी सबै दिखाई । भुजबल मलखे का निहार भट सुभट गये घबराई ॥ तिल्लर दबी सांग बादशाह अंगुली दांत दबाई । आगे सभाको कान्ह गिरे करसी से नीचे आई ॥

दो०—निरख मलखे के बलको । तप चढो नौलख दलको ॥ कंपे थर २ बलवीरा । दृगसे आंसू डार लगो फिर कहने सत्री धीरा ॥६८

व. धीरा का

दो०—अब तक कुछ बिगरो नहीं, दादाजी सुनलेउ ।
याही में कुशलात है, दिल्ली को चल देउ ॥

चौ०—दिल्ली को चल देउ दस्तको मतना दाग लगा ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यो नौलखदलपै सांग मेरी नेक सीधी तो करवाओ।।
जो सीधी सांग कर दे मलखे से वाहि कहाओ।
वा कलिहा सों अटक जनम अपनेमें मती थुकाओ।।
दो०—ये माहिल है हत्यारो। करो इसको मुख कारो।। जिसदम कलिहा कोपैगो। नौलखदल में वा नाहर को कौन जंग रोपैगो ।।६९

ज० पृथीराज का सब सूरों से

दो०—सकल सुभट रजपूत हो, मेरी बात सुनलेउ।
मलखे मोडी सांग यह, सीधी तो करदेउ ।।
चौ०—सीधी तो करदेउ उठो सर्दन मर्दन दोऊ बीरा
ताहर चौंडा पारस बूंदा लोहासिंह रणधीरा ।।
रंगा बंगा जोगा भोगा जाउ सांग के तीरा।
रूसी चीनी काबुलवारे पंजाबी कशमीरा ।।
दो०—सुनो सब रुहेल खंडी। उठो भट बुंदेल खंडी।।जगत में कीरति होई। मलखे मोडी सांग इसै कर दीजे सीधी कोई ।।७०

ज० रंगा का

दो०—सुनकर राजाको हुक्म, उठे सकल चौहान।
इक इकसे दो २ भये, दश २ मिलगये आन।।
चौ०—दश २ मिलगये आन रुहेले बीस२ उठधाये।
सौ २ मिलकर बुंदेल खंडिन नें फिर जोर लगाये ।।
मिल २ के हज्जार फेर लाखन जुट जोर जनाये।
सांगन सीधी भई नौलखा चौहान दहलाये ।।
कड़ा—प्यारेजी कान्हराय नेआइ आपनो जोर लगा
यो। सांग न सीधी भई सून कानन भर आयो ।।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दु०-नहिंसीधी सांगमहं भटकी दसनोंउलाल पचहारो है।सबक्रांतिहीन डोगएसूर जहाँ धांधू आ ठलकारोहे

दो०—पार नहीं ताके बलको । अंश है बन्नाफल को ॥ सुमर मन देवी लीनी । घर आल्हा को ध्यान सांग धांधू कर सीधो कीनी ॥७१

व० चन्द्रकवि का

कवित्त—श्रीमान समझाये बहमानो नहीं एक मेरी देखें समरमध्य मांह कहा करनी करोगे । एक २ योधापे मलखेनहि जोगोजाय आल्हाको हार कदम दिल्ली को धारोगे ॥ इकले पे नौलाख एक संग है जा करौ अधरम कों करोगे तो अन्त नर्क परोगे । मासों महाराज तुम लौट चलौ दिल्ली कों माहिल सीख मान बिन आई मौत मरौगे ॥७२

ब० माहिल का

दो०—या भटरा कीबात पर, आपकरोगे ख्याल।
बामनगढ ठट्ठा करे, तुमरो सब भूपाल ॥

चौ०—कहँ तुमें भूपाल कोनजो धर्म तजोराजनके।
बिना लड़े दिल्ली जाओ वो हंसी होयगी बनके॥
मनमें हिम्मत बांध सजो महाराज साज सबरनके।
हार होय या जीत इरादा कोल लीजिये मनके॥

दो०—सीख भटराकी मानों । न तुम्हरो लगे ठिकानों ॥ समर से जो दहलानो । कायर कुर कुटिल गाडू सो जन्म हीजडा जानों ॥७३॥

जवाब चन्द्रकवि का

दो०—जो माहिलकी बात पर,जमों धनी चौहान।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सत्यानाश कराइहै, सच्ची लीजो मान ॥

चौ०— सांची लीजोमानये पाजी केसे गालबजावें।
पुरखान तककी बेइमान इज्जत किरकिरी करावें॥
महा काल मलखान जो घडी तेगा छेअरावे।अपिव
दिल्ली जान न देगी सबै यहीं निवरावे ॥

दो०—मती बेडो नाहर को । लौट चलिये नृप
घरको ॥ बचन लेउमान हमारो। चढा गधा फाइवें
निकारो करदीजे मुहा कारो ॥४७॥

म० माहिल का

दो०—देखौं क्षत्रिन के कहा, राज नीत में धर्म ।
कायर तुम्हें बनावता, ये भटरा बेधर्म ॥

चौ०—ये भटरा बेशर्म नीति क्या राजन की पहचानें।
भीख मागनो जोत देनो पाति खाइबो जाने ॥
खाइ बापको नोंन बिरद वैरी को बडो बखाने।
पिली मंगता को दीवानी क्यों ना अपनी ताने॥

दो०—हरामी गय भाट को। है उल्लू निरो काठको॥
बुरो ये माकूं लागत । दीजे इसे निकार भाटको
दीजे भिक्षा मांगत ॥७५.   ज० रंगा का

दो०—शिक्षा माहिल की लई, भूपति उर में धार।
चौडा क्यो बुलायकर, दुर्योधन अवतार ॥

चौ०—दुर्योधन अवतार तुरत इत चौंडा वीर पठायो।
तीन लाख ले सुभट सरसमा के धूरे पर आयो ॥
मोंहरा बन्दी २ तोपन को मदपर आन ठगायो।
इत में नर मलखान वीर माहु डंका बजवायो ॥

दो०—हुई लडने की त्यारी । कनकदे समर ३

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जारी ॥ बहोरन तबही आयो । हाथ जोर मलखा
न बीर को ऐसे बचन सुनायो ॥७६

ज० बहोरनलाल का

दो०—दादा मोह मंगायदे, छोटी सी तलवार ।
कुमर बहोरनलाल है, अभिमन्यू अवतार ॥
चौ०—अभिमन्यू अवतार युद्ध में मोह अगारी कीजो
चौहानों को अलीगोल में हुकम जरा दे दीजो ॥
नोऊलाख दल गिरा जमीं पर देख आंख से लीजो।
जनम जलैया नर ऊदल को मैं हूं पिता भतीजो ॥
दो०—सिंह मलखे का बेटा । नहीं लडनेमेहटा॥
जन्म अगले को चीन्हों । गये पिता क्याभूलयुद्ध
में चक्रव्यहू में कीन्हों ॥७७॥

ज० मलखान का

दो०—कुमर तोय परवाह क्या, जो पकरे तलवार।
अभी कन्हैया मुख तेरे, बहे दूध की धार ॥
चौ०—बहे दूधकी धार दूध माता को तेरो न छूटो ।
सिंह पिता तेरे ने बेटा बावनगढ को छूटो। बीरम
हार को मारो पथरो इन्द्र प्रस्थगढफूटो दिल्लीसम्भर
गढ़ फेर दई सो तेगा नहिं टूटो ॥
दो०—समर में विजय करैया । हैकायमतेराकन्है
या ॥ मार दिल्ली ठेलेगा । चौहानों के रक्त रङ्ग
तेगा होरी खेलेगा ॥७८॥

ज० बहोरनलाल का

दो०—छोटोना मो देखियो, मो भुजबल को वेग ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

थर २ कम्पैं रिपु कटक, चलत हमारी तेग॥
चौ०—चलत हमारी तेगगैद से गिरैं मुंड कट धरसे। धुर धवल सामन्त धरणा ऊपर ओरे से बरसै॥ सुन लख कार नोलाख के तेगा छूटैं करसे। जो तुम्हार पर जन्द बादशा सिर काटे खंजर से॥
दो०—सिंह मलखे का बेटा। नहीं लड़ने से हेटा॥ जन्म अगले को चीन्हों। गये पिता कथा भूल विजय मैंने चक्रव्यू का कीन्हों॥७९

ज० मलखान का

दो०—तेग विदित तो पिता की, जानत सकल जहान।
जीता मैंने समर में, अमित वार चौहान॥
चौ०—अमित बार चौहान भजे सन्मुख से छुत खा कानी चक्र दिग्विजय तेग मेरी दत्त त्रिनकोके ठनिशानी॥ अब चौहानन बीच सुना मन छाहूँ नहिं दत्त्रानी। ऐसे युद्ध करूं रणमें चौहान मांग जांय पानी॥
दो०—सब अरि के दल द्वारा। है का ये मेरा दुधारा॥ मार दहलों दलेगा। चौहानों के रक्त रंग तेगा होरी खेलेगा॥८०॥

ज० रंगा का

दो०—बेटा को समझाय कर, ले गोदी मलखान।
मात कलकदें के चरण, छूए वीर ने आन॥८१

ज० मलखान का

दो०—सिरपर देवी मातकी, देव आंख सैं लेउ।
मात आपने हाथ सैं, तेगा मोकूं देउ॥
छंद—निज करसे दीजै तेग मोहि देर न कीजै मात ऐसे लै खान दल के बीच में इकलौ तैरो खनावो दंठोक

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मेरी पीठ मोढ़ों मेरो निजकर से लई। मलखेनने अपने कुमर की जननी विजय सुन बोलदे॥ ओपनगोरी लता माता माफ मेरी कीजियो। कहें इंद्रजाऊंसवर जय हरनाम मेरी कीजियो ॥८२॥ ज० कनका का

दो०—समर अकेले जात है. मेरे प्राण अधार।
बेटा ईश्वर करेंगे, विजय तेरी तलवार ॥

छंद—होगी विजय तलवार सुत हुशियार रणको जाइयो। वैरिनके सन्मुख कुमर तू डट डट के तेग चलाइयो॥ ऊदल न तेरे संग सुत मेरी कोख मती लजाइयो। वैरिन में तेगा लाल कर सूरत दिखा जाइयो॥ लावेगो छत्तर काट तो भर ढलि प्राण नौछावर करूँ। जूझे बिना करनी करे तो खा जहर मलखनपरूं ॥८३॥

बहोरनलाल का कनका से

दो०—दादी मेरे शीश पर, धरदे अपनो हाथ।
छोटी सी दे तेग मोह, जाऊं पिता के साथ॥

छंद—दादा के संगमें जा समर में रहूं युद्ध प्रचंड है। माता मेरी को ले बुला पूजे मेरी भुजदंड है॥ सिंगार मेरो सकल रजपूती का आज बनायदे। कंधे पे धरदे ढाल तेगा कमर में बँधवाइदे॥ तो कृपा से दादी मेरी जाऊं मैं सूर लहरता। होते चचा ऊदल तो मैं काहे कूं तेग सम्हारता॥ बेटा साईं जापैंद है हजारा जो जगनामहै। जिंदा रहूं तो मिलूं नहीं दादी मेरी परनाम है ॥८४॥

ज० कनका का

दो०—ए लौना बोले मती, ऐसे वचन कराल।
गोदी मेरी आइजा, कुमर बहोरनलाल ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छंद-बेटा बहोरनलाल तू नादान क्यों घबरातहै। तेगा उठावत में कुमर जायलचकि तेरो हाथ है॥ पलना में पोढो तुम कुमर मानों हमारी कौन है। सुन चन्द्रमुख शोभपवी तू देखेगे तेरे नैन है॥ हा तौ ऊदैचंदलालक्यों चौहान चढके आवतो॥ काहे कूं बेटा बहोरनऐसो मन घबरावतो॥ कहीं होयतो ऊदलमेरी कहणाश्रवण धरलीजियो॥ भइयापे विपता आपडी बेटासहाई कीजियो॥८५॥

ज० मलखान का

दो०—भइया में मरजाउंतो, इतनों रखियोख्याल। हित चितसेतापालियो, मेरोकुमर बहोरनलाल॥

छंद-माता बहोरनलालको गोदामें बैठा लीजियो। कर पकर के सौंपूंतुझे काऊ विधिसेदुख मति दीजियो। जो समर में मरजाउंतो संतोष उर में मानियो॥ छोना बहोरनलाल को मलखान करके मानियो जबयाद सुन मेरी करे समझाय धीरज धारियो॥ बहलाइयो फुसलाइयो मुख चूमियो पुचकारियो॥ करजोरदेके प्रदक्षण परनाम चरणान में किया। ऐसा सेतजमोह हो निरमोह रण को चलदिया॥८६॥

॥ इति प्रथम मंजिल समापत॥

ज० रंगा का

दो०—आयरहे चौहान दल, टीड़ी के अनुमान। इत सेना ले समर में, पहूंचगयेमलखान॥

ज० मलखान का

दो०—चहतचाय विद्युत सरिस, प्रलय काल सोंगर्ज। टूटो नौऊलाख मे पंचानन सौ तर्ज॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौ०-पंचानन सों तजें झपट अरीनारगणोंतनमें। तेग थामकर टाप दई गजरूपी चोडाननमें॥ अमित मरी भट पटक पछाकं किलकिलाकर रन मों समर भूमि दई काटकाट भुजदंड रुंड मुंडन में ॥

कवित्त-टापन बिदारे चार खायमुल पांचवें कूं मल्लुम मलंगराग भंगनाद नाचो जो। तेगा चलावत मुंड मेघवर सावतमें फागुन रस वश किंह जंग रंग राचोजो॥ केहरि हंकारदे पुकार रह्यो कटक बीच आयो बीर झेले मलखेन को तमाचो जो। मार अस्त्र शस्त्र छत्र काटूं प्रथवीराज सबै दिल्ली तक रेदूं बच्छराज पुत्र सांचोजो

दो०-कौन जोधा बलधारी। सो आओ मेरे अगारी। तुम्हें बल नौलाखन को। बेठ लेउ रण फाग भरोसो मोकूं मेरी भुजनको॥८८ ज० धीरा का

दो०-जब मलखेने अमित दल, दीनों धरण गिराय। तबै बीर चौंडिया नें, हाथी दयो बढाय॥८९

ज० चौडा का मलखान से

दो०-चन्देले के रहसवा, क्यों इत बढ़ौ अभिमान। मार २ नौकरन को, गरजे सिंह समान॥

चौं०-गरजे सिंह समान तुझें कुछ तोलन मेरे बलकी जिसदम धरूं अगं ले रण में त्यार करूं अरिदल की॥ काट सुंड रुंडन यों बिखरूं जैसे कली कमल की। जो चाहे कुशलात मंगादे गजमोतिन की पलकी॥

दो०-करें बातें बढ २ के। फतह क्या पावें सडके॥ मेरा बल बिदित जक्त में। जहां करूं संग्राम कमठ कम्पे भू छिपे रक्त में॥९०

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो०-बरणत तेरी मर्दमी, थके शारदा शेष।
ब्रह्मा ने लियो पकड़ के, करो जनाना भेष॥
चौ०-करो जनानो भेष बीन तुम लीनों ढाल दुधारो। बदा दई सारी लंहगा पहरायो घुमघुमारो॥ चुरी बीछिया मस्तक बिंदी नइनन सुरमा सारो। ऐ ही डोला गजमोतिन तोकूं देहु मलहारो॥
दो०-अमित दल चौहानन को। बनूं मैं काल सब नको॥ तुम्हें बल लौंउ लाखन को। लेउ लड़ूं रण फाग भरोसो मोकूं मेरी भुजन को॥९१

ज० चौंडा का

दो०-अवतक कछु बिगड़ो नहीं, सुन कनका के लाल।
प्रबल शत्रुदल मरदनी, मेरी तेग कराल॥
चौ०-मेरी तेग कराल माफ काटे अनेकन क्षत्रिन के। टुकड़े कोर गुलाम हाथी फिरे भरोसे किन के॥ काट २ भट सुभट मुंड अम्बर देउंगा चिन के। सरसागढ़ को तोड केश गहि लाऊं गजमोतिन के॥
दो०-करें बातें बढ़ २ के। फतह क्या पावे लड़के॥ मोर बल विदित जक्त में। जहां करूं संग्राम कमठ कंपे भू छिपे रक्त में॥ ९२॥

ज० मलखान का

दो०-सुन २ कर बातें तेरी, फड़फडात भुज दंड।
धर थरात नवखंड लखि, मेरी तेग प्रचण्ड॥
चौ०-मेरी तेग प्रचण्ड खंड भुजदंड ढेर करूंगा। नवलख दलकी कुमति घेर धरणी पर गेर करूंगा। दौंट दंड तेरी पाजी ना पलकी देर करूंगा। बंग

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मैं चौहान म्यान पीछे शमशेर करूँगा ॥

दो०—प्रबल मम क्रोधानल है । पजारे नवलख
दल है ॥ चुरूटिहा वाहन वारे । किसके चोके
फिर रहे दिल्ली तक मारूं सारे ॥ ९३ ॥

जंग रंगा का

दो०—गुस्सा खाइ तन बदनमें, वीर चौंडिया राय ।
मारो शेल घुमाइ कर, मलखे गयो बचाय ।
चौ०—मलखे गयो बचाय तमकि चौंडा फिर गुर्ज सम्हा
रो । दयो तान मलखानके जोर शोर कर मारो ॥
वांयो मनसुख कियो चोट दूजीसे बचो प्रहारो । जब
हन मारो पजल गयो तकि तीजे दयो दुधारो ॥
दो०—ढाल पे मलखे लीनों । उकाइ चोटें तीनों ।
बचगयो सरसावारो । धवल चौंडिया से बोलो
ऐसे बछराज दुलारो ॥ ९४॥

जवाब मलखान का

दो०—सम्हर२ गज पर तुरत, ऐ चौंडा बलवान ।
अब आवत ऊपर तेरे, बहनोंई मलखान ॥
चौ०—बहनोंई मलखान आनअब घेरानों धननननहै
घोडामें हई ऐड उडो मनसुख ऊपरसननननहै ॥ गज
पे आय म्यान सों खींनों खड्ग खेंच खननन है ।
मारो हाथ कटी अम्बारी गिरे कलश झननननहै ॥
दो०—काट सरसा होदा को धरणी पर दयो गिरको ।
कसा चौंडा महांनों । छाती पर चढमारनको मैं
ननिन दुधारो तानों ॥ ९५ ॥ ज० चौंडा का

दो०—सुन सुपुत्र बछराज के, करो म्यान तलवार ।
ब्रह्मघात अब मत करे, हिरदय दया बिचारि ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

झूलना–हिरदय दया धारी द्विजको मती मारो मर्जी क्षमा कीजे पुन्यवान मोकूं । आहिर दरबार में शरण तेरी बकसो दीन दुरबल मिस्क जान मोकूं । सात जन्म तक नहीं अहसान भूलूं इष्टदेव गुरुदेवकी आन तोकूं । इन्द्रा कहै मैं हूं कपिला गाय तेरी दीव प्रान को दान महखान मोकूं ॥ ९६

जवाब महखान का

दो०–समम नीति श्रुति शास्त्र को करी म्यान तलवार ।
विप्र जान नहीं बध कियो हिरदै दया बिचारि ॥

चो०–हिरदै दया बिचारि जान सें नहीं वोदियामारो । हाथ हथकडी पैरन बेडी तोख गले में डारो । दई बिनोती चोहानन को भेजूं कुरुप करि भारो । मुंडियां काट उभार मूंछ फिर कियो तुरत मुख कारो ॥

कवित्त—करके बिकाल रूपकठिन कराल ताकी बिखरे मुख बाल करी सूरत भयावनी । कारोमुख भारो अंधियारो सो दीखन लगो बडोही भयंकर मानो भादों की यामनी । मैलो सो सारी फटो लहंगा हराय ताको बिकट बिचित्र रूप सूरत डरावनी । भयको सो भवग दीखै जमकी जमात कधों चामड के चुडैलके पिशाचकी कामिनी ॥

दो०–भयानक रूप बनायो । तुरत एक गधा मगायो । चौंडिया घवल चढायो । प्रथीराज के पास सुभटको कर बेहाल पठायो ॥९७॥

ज० रंगा का

दो–चोंडाकी गति देखकर, माहिल हंसतो जाइ ।
पृथीराज महाराज से, कही हसताइ जाय ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो०—नरपति भूपति छत्रपति, पृथीराज महाराज।
सकल सिद्ध कारज नृपति, भयेतुम्हारेआज॥

चौ०—भये सिद्ध सब काज आपको सुयस चहूं दिश छायो। वीर चौंडियासूरतुम्हारेगजपोतिनले आयौ॥दगे सलामी तोपनकीतुमनेवांछितफलपायो धन्य २ वह जननी निज चौंडासो छत्री जायो॥

दो०—प्रतापी दशो दिशनमें। कोनतुम से विभु वल में॥ भये कारज मन चीते।दीपकवारीषीकेभू पति कोट सरसमा जीते।९९॥ ज० रंग्रा का

दो०—इत भूप पृथीराज से. माहिल रहे वतराइ।
तौलौं गदहा पर चढो, चौंडा पहुंचा आय॥

छंद०—चौंडा गधापै चढोमन्मुखानृपकेपहुंचोजाय के। लायौं सनाको भूप कुसीसे गिरेभंगायके।उठ गयेहोसहवासनशपृथी राज कोगयो आइके। यहहाल कासे उरही नृपति माहिल कहे समझायके॥१००

ज० माहिल का

दो०—अच्छे भेजे सूरमा, जङ्ग जीवते काज।
ये बेहाल करावते, तोहिन आई लाज॥

चौ—इसेन आई लाजमरदते वनआयो हालतुराई छत्रितजात पिटभरा बाह्मन कव २ तेग चलाई। मैं जानी मलखे कोजीतो सरसा लियोछिनाई।यहक्यों भेज दयो लडने को तुम्हें कहा वन आई॥

दो०—मती मन संशय लाओ। धवल कोप्रबल पठाओ॥ युद्ध में नहिं हारे। लोहा के देउभंज मरहारे हि बार २ करि हारे॥१०१॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो०—सुनकर माहिल के वचन, बोहा दियो पठाय ।
सन्मुख आ मलखान के, कहन लगो समझाय ॥
ज० बोहा का
दो०—आ मलखान मुकाबिले, होकर बहुत हुसयार
आ रंगा की धारसे, लूंगा शीश उतार ॥
चौ०—लूंगा शीश उतार काट रुंड हि भुजदंड उखारूँ
मोकल विदित विश्व में मैं नहीं अस्त्र शस्त्र से हारूं ॥
जो भट भेद भिरे रन में तन चूर २ कर डारूं। अतुल
अथाह अँखड मेरो बल गहि गजराज पछारूं ॥
दो०—जो है क्षत्री रण माहे। सो सनमुख होजा
ठाढे। न मैं बाँदिया चबला हूं। बोहा मेरा नाम सबर
गंजन और मादिल मल्ल हूं ॥१०३
ज० मलखान का
दो०—आदिल मल्ल विकाल तु, बोहा सिंह सरदार।
मैं भी नर मलखान हूँ, तो मुख मर्दन हार ॥
चौ०—तो मुख मर्दन हार हथारी तेरी आज ठनी है।
ठऊं गेंद सो उठा पटक अंग समेत घरनी है॥ सागर सेन
तेग मंदराचल भुजबल शेष फनी है। रतन निकारूं गढ़
सरसा मथि डारूं सकल अनी है ॥
दो०—समर अगि परूंगा। लाशपर लाश धरूं
गा। सबन के गाल भरूंगा। आग लगाय दऊं
दिल्ली के पास स्याह करूंगा ॥ १०४ ॥
जबाब रंगा का
दो०—हुए खड़े रण रंग में, बोहा और मलखान।
समर भूमि के बीच में, मचो महा घमस्यान ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौ०—लोहा ने अपने हाथ कुठारो लीनों । खींचि उम के वीरमल्ल के शिर पर दीनों । महाराज बड़ाई डाल मलहारे ज्वान । घोड़ा दयो उड़ाय आपनो फेर वीर मलखान ॥ ऊपर से घोड़ा आयो तुरत उतारके । गजके मस्तक पर टापें दीनी धरके ॥ महाराज तेग दई मलखेने ललकार । वज्र अंग लोहाके तनपे टूट गई तलवार ॥ जब गुस्सा ह्वाइ मलखे गयो आगे बढ़के । लोहा को हस्ता लीनों तुरत पकर के । महाराज ढकेला बलकर मारो जी । भुजा पकर गहि चरन धरणपर पलट पछारो जी । लोहा लोहे को अङ्ग मरे नहिं मारो । मलखान वीर अब करमें गदा सम्हारो । महाराज तुरत छाती पै हो असवार । मार २ कर गदा सकल लोहा तन कीनों क्षार । भागी है सगरी सेन मरत लोहा के । इतने में सूरज छिपा सांझ भई आके । महाराज गयो इत सरसा को मलखान । इत लोहा को मरन सुनो गिर परे धनी चौहान ॥

दो०—विकल देखे दिल्ली पति । बांध पारस मन हिम्मत ॥ पास भूपति के आयो ॥ गर्ज तर्ज के पृथीराज को ऐसे वचन सुनायो ॥ १०५

व० पारस का

दो०—क्यों उदास मनमें भये, शब्दवेध चौहान ।
कोट दऊं ब्रह्मांड को, कौन चीज मलखान ।

चौ०—कौन चीज मलखान ताहि एकहि कृपान से मारूं । जितने सूर कोट हस्सा में सबके शीश उतारूं ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रोका नहीं कालकी मानूं अरिदल दपट पछारूं ।
मुंड रुंड भुज दंड मास ततकाल खंड कर डारूं ॥
दो०—मैंहूं पारस दल गंजन । मान क्षत्रिन को भंजन ॥ फजर होते ही जाऊं । क्यार कौतुक करूं देखियो इसदम नहीं सुनाऊं ॥ १०६ ॥

ज० एंगा का

दो०— कहि इतनी सोयौ तुरत, पारस तम्बू आय ।
प्रात होत चतुरंगिनी, सेना लई सजाय ॥
चौ०—सेना लई सजाय तुरत मारू डंका बजवायो कोट सरसमा पर तोपन को म्होरा आइ लगायो । इस मलखेकी गाय पशवन परसा ग्वाल सिधायो । लखि पारस को कटक गाय लौटाय सरसमा लायो ॥
दो० बांध लुटन ते गइया । गयौ कहां कनका महया ॥ लट्ठ कंधा पर धरके । मात कनकदे से बोलो तब नैन सुर्ख दोउ करके ॥१०७

ज० परसा ग्वाला का

दो०-तुरत उतारो मोहया, अंटी लई चढाय ।
चौहानन महया बहुत, ऊधम रखो उठाय ॥
चौ०-ऊधम रखो उठाय सुहर चढ आए तोरन सरसा । गइयन केखुटाबीलन को नेक मोहदीजियोफरसा॥ काटि करूं खरिहान मुंड भुज की बरसाऊं बरसा । डरूं थूथरो चौहानन को मेरो नाम है परसा ॥
कवित्त-गयो हो बजार कठा लायो हूं सकारे मोल पोला लगवाइके पोलादी बनवाई है । फरसाके ऊपरमें हीरो चढवाइ लायो आजही सबेरमें खुरापिया पैनाई है

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नैक सतखंडा चढि माता तू निहार देख परसा ने तोप आइ किले पै लगाई हैं। कहत कवि इन्द नैक सुन से आशीष दे पारस बेईमान को मैं बनूंगो जमाई है।

दो०—संग लऊं दोसे ग्वाला। भयंकर वीर करा ला॥ मार पारस की सैना। पीछे आइ चवाइ लऊं ले घर रख मेरो चबैना॥१०८

व० कनका का

दो०—तू परसा भूलो फिरे, समझ सोच नादान।
डगमगाय धरणी चलत, परसा भट बलवान॥

चौ०—पारस भट बलवान चढे जहां वांते तावे दैया। तासों लडने जाइ तोइ बहकायो कोन जलैया॥ विना मोत मत मरे आपनो जाउ चशमन गैया। सोइ रह्यो मलखान मेरो पारस को गाढ लैया॥

दो०—जगाऊं भेजूं इनको। चराय ला त गइयन को॥ समझ बेटा मन मांहे। पारस को पारस कौं तन है तोपे रण जितनों नाहे॥१०९

व० पारस का ग्वाला से

दो०—ए माता मन धीर धर, शोच फिकर कर दूर।
मैं देखूं कैसे बली, पृथीराज के शूर॥

चौ०—पृथीराज के शूर घूरतो जबरण में डोलूंगा। फरसा से चोहानन के सिर खूंटासे खोलूंगा। ताहर पारस धांधू धीरा सब के बल तोलूंगा॥ रैन बैन कर कटक वीर मलखे की जय बोलूंगा॥

कवित्त—आयो तो लोन सो समानों हम२ मेरो कहा कोई जाने भयो पाराग्वाल धनी है। चोहानन

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को कटक सागर सूरनकी तरंग जामें आज हाथ मार पार उतरूं बैतरनी हैं ॥ पोषो तें शरीर दूजे पीर वीरमलखे की जोसे निजमात की उजागर कोख करनी है । कहत कवि इंद्रमात सोवनंद मा-लिक को पारस के म्हार ग्वाल परसा की बरनी है ॥

दो०-चरण पूजूं महतारी । ठोकदे पीठ हमारी ॥ घरथा नभ मंडल हालें । पारस के मुकाबिले जब परस को फरसा चाले ॥१००

ज० कनका का

दो०--बेटा वाकी तेग लखि, थरथरात ब्रह्मंड ।
सुभटन में है आगरो, पारस धवल प्रचंड ॥

चौ०--पारस धवल प्रचंड को वाको समरथ रोपें । धकधकाय चहुंचक्र वो कलिहा जबकोधकरकोपें ॥ दऊ मुकाबिल भेज न तू मरवावेजावे मोपें ॥ वैरी को समर ठठेते नाहिं झिलेगो तोपे ॥

दो०—शस्त्र सों मारो तनयं । घाव नहीं होय ब-दनमें ॥ समझ बेटा मन माहें । पारस को पारस तन है तोपें रण जितनों नाहें ॥१११॥

ज० परसराम का

दो०--एक दफे पारस भजे, पटके समर कृपान ।
तो मलखे को ग्वाल में सांची लीजो मान ॥

चौ०-माता सांची लीजो मान नहीं पारससे रण हारुंगो । अस्त्र शस्त्र से वेश परे ना तोकुशीमा कैंनो नौऊलाख दलवेर समर गहय्यासी वेराकंगो । वांमुट्टा किसान काटे रण ऐसे शिर झारुंगो ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो०–चरण पूजू महतारी । ठोकई पीठहमारी ॥ परगा नभ मंडल हाले । पारस के मुकाबिले जब परसा को फरसा चाले ॥११२ ज० कनका का

सो०–दरद आवतो मोह, अरे ग्वाल परसा तेरो। समर विजय तोइ होय,मुखभरदऊंअशीषये॥

ज० रंगा का

दो०—होसो लीने ग्वाल संग, महावीरविकराल। नर पारस के मुकाबिले, चालो परसाग्वाल

चौ०–चालो परसा ग्वाल हाल को।घिरकराकरित साके।आउगिनों नहि लाउ एक संग परोसमर मेंशाके है २ के ललकार ग्वाल दई मारहि मार मचाके। सनके से पोना बोना क्षत्रिन के दये बिलाके॥

दो०–ग्वाल कोई लट्ठ चलामें ।कोईफरसाचप-कावे ॥ ये गतिजब समर भई है । तब परसा के मुकाबिले पारस ललकार दई है ॥११४॥

ज० पारस का

दो०–संभर २ रण खेत में, छन सठ परसा ग्वाल। मेरी ओर विलोक तु, मैं हूं तेरा काल ।

चौ०–मैं हूं तेरा काल तेने क्या पाजीढंदमचायो। होके जात कमीन मुकाबिलत क्षत्रिनकेआये॥तज जीवन की आश आइ शिरकालतुम्हारेछायो॥एक मल आइ हाथ तो मैंना कान्हराय को जायो ॥

दो०–चोट एक समर चलाऊं । मुंड भुज भूखि गिराऊं । करे रण शूर सिपाही । जा घर अपने लौट कमीना क्यों कम्बख्ती आई ११५

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज० परसनाथ का

दो०—मालिक एकै जानकर, चढ आयो दलसाज।
वा दिन की तू याद कर, तेग डार गयो भाज॥

चौ०—तेग डार गयो भाज आज कहा गरजरहो मारसों। तूं गो करसा तान मूछ कतरूं तेरो गाजरसों॥ खा हराम के माल बडो मोटो है रहो मगरसों। एक लट्ठ के मारे ही तू लोट जाय सुअरसों॥

दो०—चकेले जान मलखा री चढो दल लेके भागे। नही मन दहलाऊंगो। मारे२ लट्ठन के सब पे वा सुलवाऊंगो॥११६॥

ज० पारस का

दो०—चन्देले परमाल को, मालिक तेरो गुलाम।
तू गुलाम को गुलमदा, कहा करे संग्राम॥

चौ०—कहा करै संग्राम जीत को ग्वाल गँवार कहावै। जा सरसा को लोट बहुत पाजी क्यों जीभ चलावै॥ कहदे जा मलखे से यों आकर संग्राम मचावै। अगर सबर नहिं करे तो डोला गजमोतिन दे जावै॥

कवित्त—गइयन को चरैया टूकखात फिरे घर घर के घास खोद लावै तब तू पावै छदाम है। हाथ लेवक मोरी छाब मांग लावै सबके से कुत्ताओ घर२ में फिरै सुबह शाम है। ग्वारिया गमार सार जाने कहा कवने की कायर कमीन कहां कौनों संग्राम है। गुलाम के तिलाम कहा मेरी तेरी निस्बत है तू ग्वाल सरसा धवल पारस मोर नाम है॥

दो०—अरे तू सुने गमरी। करे क्यों इतनी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गयी ॥ रहैं रण सूर सिपाही । जा घर अपनै मौट कधौना क्यों कम्बख्ती आई ॥ ११७ ॥

ज० परसा ग्वाल का

दो०—ब्याहन गजमोतिन गयौ, घरके सिर पर मौर
देख लई शोभा तेरी, गजराजा की पौर ।

चौ०—गजराजा की पौर गयौ गजमोतिन ब्याहिन कायौ । जिनको कहै गुलाम तिन्हीं नेकाको ब्याह रचायौ ॥ पृथीराज और कान्हराय पै कन्यादान करायौ मेरे मालिक ने महा बहनोंई तेरौ बनायो ॥

कवित्त—गुलाम के सिलाम को संग्राम देखसमर बीच करते अंगारी चोट करे गती बरसा है । सहज को न पट्टा हंसी ठट्ठा करि पीते गट्ठा महा तेज वाला बलवकालो कोट सरसा है । सनके है पौना छौना क्षत्रिन को बिकाऊं रण काटि फरसा से करूं मुंडन की वरसा है । और कान्हराय के बसि गोरधोफिरैं काऊ की तेरौ नाम पारस तौ मेरौ नाम परसा है ॥

दो०—गुलपटा के गुलाम से । निकले परसराय से ॥ बहुत क्यों गाल बजावै । तोसे गांडू से लडनैं क्या मालिक मेरो आवै ॥ ११८ ॥

ज० रंगा का

दो०—आपस मे बतवढ भयो, कहे गुलाम सिलाम ।
पारस पारसा में तबै, होन लगो संग्राम ॥

चौ०—होन लगो संग्राम उठा फरसा परसा अनिनौं । बडे जोरसे हांत परसा के उ हाथ से तानो ॥ काट पेतरा पारस की खुपडी पर हनों निशानो ॥ टूट

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गयो परसा को फरसा जब मन में रिसियानों ॥
दो०—चचल पारस बलदाईं। तेग फिरि हाथ उठाई।
शीश परसा को काटो । ग्वाल कोई हटे न डाटो ॥
दई बत्ती तोपन में । सुनत गर्जना शूर वीर
मलखान जगो महलन में ॥ ११९ ॥

जवाब मलखान का

दो०—माता तेगा दीजियो, जाउं समर दल साज ।
अबके योधा कौन सो, भेजो प्रथीराज ॥
चौ०—भेजो प्रथीराज कौन निज आकर तोप चलाई।
फड़की भुजा क्रोध की ज्वाला सकल बदन में छाई
प्रथीराज को कटक काटि धरणी पर दऊं बिछाई। पट
ल्हाश पर ल्हाश रक्त की सरिता दऊं बहाऊं ॥
दो०-कौन क्षत्र रण गाढ़ो । जो गढ़ पै आन
दहाड़ो ॥ देख लऊं बाके बल को । मार मार कर
तरवारिन से सुण्ड रुण्ड सब दलको १२०

ज० कनका को

दो०—ये बेटा मलखान सुन, कहा कहूं मैं आज ।
चढ़आयो पारस सुभट, कोट कटक दल साज ॥
छंद—दल साजिकर पारसचढ़ोघाँसरसमागामहिं।
चौहान के योधा पै सुत परसा गयो संग्राम को॥
दरबार में नाहीं करी बजो हमारो ना रह्यो।करके
अतुलबल युद्ध वह रणखेत में मारो गयो॥१२१॥

ज० मलखान का

दो०—सुनत मातकी बातको, फड़कफड़ाइगयेअंग।
चलो क्रुद्ध ह्वैयुद्ध को शूर वीर ले संग ॥
चौ०—शूर वीर लेसंग जंगहितहाथलयो खंजरको

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिनकरौंप बखतर सम्हार तनहुआ। तयारसमरकों॥ ताकूं शीश उतार गिराऊं रणमें पारस नरको॥ देद २ दिल्ली तक मार्ऊं प्रथीराज दुसर को॥

दोहा—चढायें पुरत मनसुखकीपटकपटपरदिशाकोढा। जहांपर फील परसा का अढाया जावहीं पोढा॥

कवित—क्यों रे हरामीतूनामी हरामखोरकहिया गमार मार मनमें गधायो हैकई बार मार अगार ऐसी गयौ भाज है तु निलज्ज नहीं नेकशरमायोहै वही मलखान हूं पहचान अब ले भलीभांति वुहीतर वारतान तोकूं जो भगायौ हैं कहतकविइन्द्रमनमन में गुलाम गम होजा हुशियारवहनोंईतेरीआयो है॥

दो०—देख मेरी कृपान को। जिससे वीराजहान को॥ चीन और खुरासान को। हिंदुस्तानअफगानि स्तां, तुर्किस्तां इस्फहान को॥१२२॥

म० पारस का

दो०—शेरों और मयंद की, करे रहतवा बात।
तुच्छ गधा मारन चहै, ऐराकी के लात॥

चौ०—ऐराकी के लात गधे का बच्चामारनचाहै। मृगशावक केहरि शिशो का अङ्ग विदारन चाहै॥ पीसनहारो का छोरा नभ धरणी फारन चाहै। दंडो का गजमोतिन जो निज प्राण उवारन चाहै॥

दो०—तेरी महतारी रोवे। शाँड गजमोतिनहोवे॥ वचन मैं सत्य उचारूँ। साडू मेरी लगेतासवतेरी तरस विचारूँ॥१२३॥

जवाब मलखान का

दो०—तरस हमारो क्यों करे, कान्हशाह के पूत।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तरस विचारे बल कहै, कायर क्रूर कपूत ॥

चौ०—कायर क्रूर, कपूत, हानि, कुलखोरा, शेखी खोरा । गाँहु भहुए, जन्म हीजड़े बेईमानमखोरा ॥ जंग रंग करि जंग तेग से दुविल दऊँ मुख तोरा । छत्र काढ़ बऊँ पथीराज सो वछराज किशोरा ॥

दो०—देख मेरी कृपान को । जिससे जीता जहान को ॥ चीन और खुरासान को । हिंदुस्तां अफगानिस्तां, तुर्किस्तां, इस्फहान को ॥ १२४ ॥ ज० रंगा का

दो०—बातन बातन बढ़ी, दोऊ ओर तकरार ।
खट२ खट२ खटाखट, चलन लगी तलवार ।

लावनी बहर शिकस्त—ये सूर बांके लड़ लड़ाके समर में बरसे हैं गोले गोलों । रंग रंगीले हुए हैं बहुत रं० बजे परस्पर निसान होली ॥ इधर मलहार के सूर मारे समर के अन्दर लड़े गरज के । उधर किनारे मैं दिलको वार चलाते खंजर चमक तरज के । दुतर्फी से रण का रङ्ग छाया जमी असमां रहे लरज के । हैं शूर वीरों के शोर शोहरा जुझाऊं बाजे रहे हैं बजके

रेखता—किसी के हाथ में तेगा कोई लाये दुधारा है किसी के किर्च हाथों में, किसी के कर कटारा है । सिरोही लेके बूंदी की कोई आकर दुधारा है । कोई शमशेर लेकर के फिर करता मिरारा है ॥

ला०—समर२ कर लड़े सूरमा अलहदे चस्तर भ-बहदो टोली ॥ रंग० वेबीर जूझे कछू न सूझे हटक के अंदर लड़े हैं हटके । ये भाले बरछी क्या आड़ी तिरछी बदन पे झेल न जामें हटके । हजारों के सिर गड़ाके

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मारे गये फूटकर बिलाले मटके ।। किसी के तनपरहै जख्म लाखों किसी के मुख नाक गिरे हैं कटके ।। रेखता- सिपाही सूरमा, बांके धवल, योधा लड़ें रनमें। फिरें गजमत्त से घूमत लिये हथियार हाथन में । गिरें शस्तर से भूपर । फिर उठ भट क्रोध कर मनमें । किसी के भिरल चलनी के हुए हैं छेद सब तन में।। लावनी- किसी के तीरों तमंचा लागे जाई चटक बखतरों की चोली । रंग०।। वो तोप गरजे हैं भिरक बहल महा भयंकर चले धमाके मघा निछत्तर सी गोली बरसे सूरों के सननन सननन सनाके ।। वो खंजर पड़े है सरपे सनन सनाकर कर सनाके । छपकछपाछप चले सिरोही वदन पै झेल है वीर बांके ।। रेखता।। प्रबल बलवीर भटयोधा, समर रण खेतन में जूझे पकर धरमारदे तलवार, दूजी बात न सूझे ।। जहां तोपों की सड़ाक से, बना भटभाड में भूंजे। कदम धरते न पीछे को, अड़े रन शोर से गूंजे ।।ला०—दोनों कूत बल में वे लड़ाके हैं सरदार हजारों काटपट कटी थल में । भगाई पारस की सैन पल में नदी रक्त की बहादी थल में नरों के धर से रुधिर में डोले कच्छ मच्छ यों तरे हैं जल में ।। रेखता—उसी क्षण शिर मल्हार के मार्ग पारस झुकाया है । बचा कर दावपर मलखान निज खंजर चलाया है ।। टूटगई तेग मलखे की वो पारस फिर लिलियाया है । दुधारा हाथ में मलखान मूर्छित गिराया है ।। ला०—जखम से निकले हैं रक्त धारा पारस के सन्नतरबतर भिजाको...रंग०।। वेपरह

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जीते हैं तीन पारस जो मोम का होगया बदन में । जो इसको बांधु तो मारदेगा ये शोच आया है तम्बुअमन में । इधर मलहारे को होश आया पलँग पे आ गिरपड़ा भवन में । वो नारि गजमोतिन उस घड़ी पै चूर२ होरही मदन में ॥

रेखता—गई हो याम जब रजनी तो उसने तन सजा करके । किये शृंगार सब सोलह, सकल घज बज बना करके ॥ चली बन ठन बना करके गजगमनी बदान सगा दिखा करके । लगी कहने खड़ी होकर निकट मलखे के आकरके ॥ ला०—मने इन्द्र, गोविंद, गिरंजी नथाराम की कहन अमोलो ॥ रंग रंगीले छैल पड़े बस्तर खोले परस्पर मिथाल होरी ॥१२५॥ स० गजमोतिन का

दो०—बालम रण से आइ क्यों, औंघे पडे पलंग। बालो चित्तर सालियां, इब तुम सोवें संग ॥

माड़—म्हारी से औंढा लाढार बालो चित रसारियां । थे तो शिरताजाहयाजीम्हें अंघगोनार। मरम बोलिये आपनों जी मदछकियाभरतार बालो०॥ रंग रंगीले छैल में जी रहत छायो नित रंग। जंग जंग को रंग है जी सैंजन सेजन रंग ॥ बालो० ॥ जंग करैया को सदाजी त्यार रहत है जंग । वहां पारस से जंग है यहां जोबन सेजंग॥ बालो०॥को हारे जीते पिया जी कौन करे बडिहाथ जोबनकेरे नाग सोजी लहर२ लहरात बालो० जोबनडाली झुकरही जी फूलरही फुलवार । नथाराम द्विजश्वर बुन अब लूटो मौजबहार ॥ बालो० ॥ १२६ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो०—खटक रह्यो पारस हृदय, मोइ न कछू सुहात।
फूलन की शैया तेरी, शूलन तुल्य दिखात॥

ज० जगमोतिन का

गाउ—म्हारी कोकिल बैनी नार, ए मृगशावक लोचनी ए रानी पूछे मतीरी कुछ आज की बात। कहत लाज मोकूं लगेरी, कहैं बिन रह्यो न जात। ए०॥ मो संग पारस धवल कोरी भयो घोरसग्राम मारत २ सुन्दरी मेरे भुजबल थको तमाम॥ए०॥ पारस को पारस बदन छिद नहीं तलवार। कई वार मैंने करे तोऊ मरो न दावादार॥ ए०॥ घरन गिरायो ना किन्हू मैंने जीते बामन कोट॥ तनक चोट पारस दई मैं गयो घरन पर लोट॥ ए०॥ जबतक पारस को प्रिया मैं लऊन शीशउतार॥ चुनी कुसुम सेया तेरी मोइ तवतक लगे कटार॥ एमृग॥१२७

ज० गजमोतिन का

दो०—अहो प्राण प्यारे पिया, तजदेउ सोच विचार।
सबदिन होत न एकसे, कभी जीत कभी हार॥

चौ०—कभी जीत कभी हार वृथा पति चिंता वीचछए हो। कत्ल मार लीजो दुश्मनको क्यापन सोचरहेहो पनियाढार किये गढ तुमने जहां चढिआप गयेहो। ऐसी हार गयेहिम्मत क्या बल हीन भये हो॥

दो०—वीरता और चत्रापन। विदित तुम्हरी चहुं देशन॥ सकल संदेह विसारो। अबतोपचवासेजमेरी पर गऊ २ बढियां डारो॥१२८॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो०—तेरी रगर में पिया, काम रूप रह्यो छाय ।
मोइ परी निज जानकी, ताइ रसरंग सुहाय ॥
चौ०—तोइ रसरंग सुहाय मेरा मन कंहुर भटकरह्यो है । तन मेरा यहां पड़ा प्राण पारस ढिग अटक रह्यो है ॥ आज मोइ भगवान शोकसागर में पटक रह्यो है ॥ वो दुश्मन हर घड़ी मेरे आंखन में खटक रह्यो है ॥
दौ०—सुनो गजराज दुलारी । हमारी प्राणपि-री ॥ बात जो सांची बूझै । मार लडूंगी पारस को तब सेज सोइबो सूझे ॥ १२१ ॥

ज० गजमोतिन का

दो०—समर करन तबतो गये, बडो खाइके जोर ।
आइ धमे अब महल में, जैसे कोई चोर ॥
चौ०—आये जैसे कोई चोर तुझे मैं देख२ शरमाऊं। मोइ देउ शस्त्रशस्त्र सिरोही मैं रण खेलन जाऊं॥ काट काट दल चौहानन के शिर धर धरण बिछाऊं । मार कर प्रथीराज को दिल्ली तलक भगाऊं ॥
शेर—तुच्छ पारस को भयमानों, दिखाई पीठ खेतन में। देख लीनी शकल शरी, दाग लागो धवलपन में। ओढ सारी पहन लहंगा चढा चोली को बाहनमें। लगा लीजै मेरी बिन्दी लो सुरमा सार नैन में ॥ पहन कर बीछिया बजने छड़े झांझन ये पायन में ॥ मार घुघट जनाने बन, लमा छुप करो महलन में॥ जिरह बख्तर मुझे दे दो, पहन जाऊं अभी रन में।
दौ०—मैं हूं छत्रिन की बेटी । न रन लडनेमें हेटी॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पहल पद दखल रहियो । आऊँ पीछे दिखाय तोमाँ । गजराज सुता यवि कहियो ॥१३०॥

ब० मलखान का

दो०—तन मन में ज्वाला फुकी, सुनकर तेरे बैन ।
चटकी बख्तर की कली, अरुणवरुण भये नैन ॥
चौ०—अरुणवरुण भये नैन कोपकर लियो हाथ खँजर को । हट सनमुख ते मेरे सुसर की नहीं काटदूं सरको ॥ दीन रूप घूत डार बदाबत हैं क्रोधानल मर को । देह ताहि निताम बान से फुके मेरे जिगर को ॥
दो०—पारस हनि भेजूं न जो, भौंर पुरन्दर धाम ।
तो कनकादे मात को, मोकूं दूध हराम ॥
दो०—मार पारस को रन में । तभी जाऊँ महलन में ॥ न तोइ मुख दिखलाऊँ । या तो मारूं पारस को नहि खुद मारा जाऊँ ॥१३१॥

ब० गजमोतिन का

दो०—पारस ऐसे ना मरे, प्रीतम चतुर सुजान ।
क्रोध छोड़ नेकु कीजिये, मेरी बात पर ध्यान ॥
रागनी—प्रीतम चतुर सुजान, वचन मेरे चितमें धारो । गुस्सा होकर जाउगे, मोह काम बस छोडाना पारस तुम्पे मरये मेरो तुम्हारी है छ ॥ चाहे लडकडके पति हारे ॥ प्रीतम० ॥ जो प्रीतम मेरी करो आशापूरी आज । तो मारोगे सहज में, वैरी को महाराज ॥ भेद बतलाय दऊं सारो । प्रीतम० ॥ बहन मालती से मैंने पूछो सगरो हाल [illegible] इ बता दियो अपने पति को काल ॥ नाथ सदेह तजो भारो । प्रीतम० ॥ तीन पहर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पत्थर रहे, पारस भट बल धाम। फेरमोम होजावै वा गत चोथायामा तबी धर सिर करियों न्यारो॥ पीतम०॥ बैरी का शिर काटके हमें दीजियो आइ। ताहि मालवी के निकट में दिल्ली दऊं पठाय॥ बोल तकि मैन मेरे मारो॥ पीतम०॥ ब्याही त रहतवा के दयों ताइनों मोइ। मैने कही वही रहतवा, रांड करेगो तोइ॥ मेरो पति गढ सरसा वारो॥ पीतम०॥ दीनों भेद बताय सब, अब तो चलो पलंग। येविजय में जंघ पति करो रात भर जंग। रंग जोबन पै मतवारो। पीतम चतुर सुजान वचन मेरे चित मेंधारो॥

दो०—प्राण पति जोवन मोरा। झुमिझुके लत [illegible] कोरा॥ डुब रही रति के रसमें। लिपट चिपटरहीसो इ पिया में भई काम के वस में॥१३१॥

ज० एंगा का

दो०—सुनकर गजमोतिन वचन, धवल वीर मलखान
प्रेम प्रकाशित प्रियाको निशभर दे रतिदान॥

चौ०—निशिभर दै रतिदान भानु निकसत हीउठे म लखारो। शोच आदि स्नान ध्यान संध्यावंदन कर प्यारो दियो अर्घ आदित्यदेवको मस्तक चंदन धारो। कियो विविसि जलपान आन पुनि [illegible] सकल सम्हारो

दो०—इधर पारसभटसाजा। बजा [illegible] रणका बाजा नगारे की सुन घोरा। पारस क मुकाबिले परपहुंचा। वछराज किशोरा॥१३२॥

[illegible] मलखान का पारस से

दो०—परशुराम त्रेता रचें, समर रूप अति [illegible]।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब कलयुग रण यज्ञ करि, मैंभी होव कृतज्ञ ॥
चौ०—मैं भी होउं कृतज्ञ यज्ञ विधि पूर्वक आज रचूंगा। कटक समग्रि क माहिं क्रोध रूपी वैसांदर धरूंगा ॥ आहुत श्रवा ... तेगा नृप काटि स्वाहि दूंगा। तोरमुंड कर खंड पूर्ण आहुति दे पूर्ण करूंगा ॥
दौ०—बड़ौ मलखान मलहारी। विजय कीन्हीं जग सारी ॥ देख यह बड़ौ दुधारी। जिससे लोहा को मारी ॥ इसी से तुम शिर तोडूं। कनका दूध ... जो तोकूं जिंदा छोडूं ॥१३४॥

ज० पारस का

दो० कहा जूझ रणखेत में, हमसे तोसी रांड ।
परो हमारी चोट में, कलल उबाव गांड ॥
चौ०—परी उबाये गांड रांडसो रण में पांय पसारे। कल्लन भयो उपाय आज क्या मेरी पश्म उखारे। हे पेश रम शरण नहीं आव नाहक बहुत पुकारे ॥ अब करले हथियार कहा बढ़ २ के शेखी मारे ॥
दौ०—जात को ओछो गडिया। बने हैं क्षत्री बढ़िया ॥ कहतवा कहा लखेगो। घर पर सिर नहीं रहे जिस घड़ी खंजर मेरो पड़ेगो ॥१३५॥

ज० मलखान का

दो०—कहा हेत है ताहिनों, पारस कल को मोह।
रे निलज्ज ऐसी कहत, लाज न आवे तोह ॥
चौ०—लाज न आई तोय याकरले नेक उनवातन को वादिन घरके म्हांर भयो तुग जमातिन व्याहनको

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कहती भई मेरी तेरी कहा भूलगयो वा दिनको। मारो तेरो मान ब्याहि मैं लायो गजमोतिनको॥

दो०—आज तू गाल बजावै। न फूलो अंग समावै॥ मार ताहि धरणि गिराऊं। बत्र काटलऊं पृथीराजको तबतो मढिया नाऊं १३६॥ ज० रंगा का

दो०—आपस में रिस बाढकर, लई भेगा हो क्रुद्ध।
पारस ओर मलखान में भयो भयंकर युद्ध।

छद—संग्राम भारी सो भयो बरणौं न मोपै आवहैं॥ कबहूं गिरै पारस धरन मलखान मार हाथ हैं॥ कबहूं गिरै मलखान रण पारस का खंजर खायके। टारेनहीं कोई कदम चटपट लडे रिसियाय के वीर लडत तीनों पहर चौथा लगो जब आइके। करै इन्द्रसव मलखान से पारस कही समझाय के॥ १३७॥

ज० पारस का

दो०—आयो तू शुभघडी में, आज वीर मलखान।
मात पिता को पुण्य कोइ,भयो सहाई आन

चौ०—भयो सहाई आन पुण्य कोई तो तेरी महतारी या ब्रत कीनी एतवार तेरी गजमोतिन नारी। जाघर अपने तेम कुशल मलखान वीर बलधरी। कल्ल फिर चले तेग समर में मेरी और तुम्हारी॥

दो०—जाउ तुमहू महलन को। मैहू जाऊं तंबु अन को॥ बचगयो तेरो मोला। अब हू मान कलक देदीजो गजमोतिन का डोला॥ ३८॥

ज० मलखान का

दो०—भवल थकगयो सुनन कों, कैगयौ हिम्मत हार।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कारण कौन बताइदे, म्यान करी तलवार ॥

चौ०–म्यानकरीतलवारजोरकहायकगयोतेरीभुजन को। भागे पीठ दिखाय पुण्य बरणोंमम मात पितनको करल तुम्हैं तकलीफ होयगी होय परिश्रम रनको। या सों अबही लेत जाउ दऊं डोला गजमोतिन को ॥

दो०–कल२कल२काल्ह कहि, कलकल रहो मचाय। काल्हि२क्यों कहत है तेरो काल गयो आइ॥

चौ०–तेरो काल गयो आइ करे कल२ तोरु कल२ है॥ कहां जात भागो सुसरे के कल२ काहिकर मलहै। करके युद्ध अघाय आज क्यों कल२ करे घवल है। करले अभी करे जो कल२ करे तो करूं कतल है ॥

कवित्त–तड२ तड२ तड़ाय तडित रूप तेगालेगर्ज गर्ज गर्ज२ कटकोंप समाय गयो॥किल।किलाइ किल किलाइ धाइ के पछारे भट तमकि तनातन तमोगुण तन छाइगयो॥ सनन सनासनसन खंग खटकावत खनखन में जहां पारस तोर घोडा बढाइ गयो। सम्हर कान्हरायके तु सम्हर कान्हरायके तु सम्हर कान्ह राय के तू मलखान काल आइगयो ॥

दो०–दुहत्था तेगा मारो। शीश वेरी को झारो॥ तनक ना देर करी है। डोला लियो मँगाय तुरत पारस की लाश धरी है १३९ ॥ ज० रं० का

दो०–डोला में रख लाशको, लीनो बोल कहार। कहन लगो समझाय कें, श्री बघराज कुमार

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो०—आओ दोनो भट विकट, इस डोले के साथ ।
प्रथीराज से जायकर, ऐसे कहियो बात ॥
चौ०—ऐसे कहियो बात दोऊ कर जोर बीनती करना ।
मत दहलाना बीच कचहरी डोला जाके धरना ॥
कड़ा—कहना ये पारसने जाकर मलखे को बंधुआ कीन
सघन लूट करी सरसागढ़की गजमोतिन लीनी छीन ।
दुबोला—गजमोतिन छीन पालकी में बैठार
रवाना की पारस । मलखे कैदी को संग लेकर आ
वे पीछे से भी पारस ॥ १४१

ज० रंगा का

दो०—सुन मलखे के हुकमको, डोला उठा कहार ॥
अति प्रसन्न होकर चले, तनक न करी अबार ।
चौ०—तनक न करी अबार संगमें दोसो सूर सिपाही ।
इतै बीर मलखान जीत का नक्कारा बजवाई ॥
महलन गयो नारि को दोनों फिर पारस को आई ।
इतमें पारस को डोला धांधू को परो लखाई ॥
दौड़—धाइ शूरन से बोला । कौन को है यह डो
ला ॥ कही क्षत्रिन अस बानी । इतमें गजमोतिन
रानी ॥ सुनत धांधू बलदाई । सोच करन लागो
मन में मुख पै छाई जरदाई ॥ १४२ ॥

ज० धांधू का मनही मनमें

दो०—वंश बना जिसको सुजस, छाय रह्यो चहुंदेश ।
सूर न कोई सन्मुख डटे, कांपत सकल नरेश ॥
चौ०—कांपत सकल नरेश महोबा परम नागकी पामी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ताके भये मदों पैदा भट सुवीर संग्रामी । सरसा बागे लिह मलहारो सुभट सूरमा नामी । पारस भट से नर मलखे की करते फिरै गुलामी ॥

शेर—क्यों राम तैंने आज क्या माया दई फैलाय के। बनाफल की लाजको दीनों जहाज डुबायके। मेरे कुटमकी कुल वधू चौहान के घर जात है। अचरज मुझे केहरि भोजन को आज गीदड़ खात है

दो०—मोइ अचरज यह भारी। बीर मलखे बलधारी प्रान बहुतन के लेगो। सहज सुखारी पारसको मलखान न डोला देगो। १४२॥

ज० ंगा का

दो०—डूब रह्यो अति सोंचमें, धांधू सम बलवीर। ताहर पहुंचो आइकर तब डोला के तीर॥

ज० ताहर का

दो०—कैसे धांधू अनमने, क्यों मुख भयो मलीन। इसमें है गजमोतिनी, लेउ विहंसि हंस चीन।

चौ०—लेउविहंसि हंस चीन्ह आप सुन लेउ हमारी बानी। बेवा बनाफल की दुलहिन अब बने मेरी पटरानी धन्य २ पारस जोधा है प्रबल बीर सुज्ञानी ॥ डोला लायो गजमोतिन को छाती मेरी जुड़ानी॥

दो०—इसे महलन में राखूं। प्रेम रस हंसि२ चाखूं। भये कारज मन चीते। होय मंगलाचार घर में घर २ दीपक घीते॥ १४५॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

न० धांधू का

दो०—खगपति को भक्षण चहै, महा मन्दमति काग।
महा तुच्छ शशा चहै पंचानन को भाग ॥

चौ०—पंचानन को भाग तुच्छगीदड़ मुख चाखन चाहैं। गधा जायफल काफ अबरखगुवरीलायाखन चाहै। तीर बैठ दरीय मैंडुका सिंधु उलांघन चाहै॥ ऐसेहि तू गजमोतिन को पटरानी राखन चाहै॥

दो०—बन्द करले जबान को। नहीं ठासूं कृपान को॥ लाज कुलका हरूंगा। अपने जीवतगजमोतिन की डिल्ली जान न दूंगा ॥१४६॥

न० चन्द्रकवि का धांधू व ताहर से

दो०—विटप लतन में सिंहसुत, दीखैश्वानसमान।
निकट जाइ जानों परे सिंह कढे के स्वान ॥

कवित्त—काहे को आपस में वादओविवाद करो डोला खोल देखो क्यों रहे हो वृथा पचके। मेरीतो बुद्धि में भैं है अब यही बात, भेजा है मलहारे ने स्वांग काछ रच के॥ जिनने गये हैं कोट परसा में सूर-वीर उन में से जीवत ना कोई आवे बचके। कैसी गजमोतिन नेंक परदा तो उघार देखो सोऊ विधि मोह थापे पारस रच्यौ जच के ॥ १४७ ॥

न० रंगा का

दो०— ताहर धांधू को रहे, चन्द्रभाट समझाय।
बीच कचहरी शाहकी, डोला पहुंचो आय॥

छं०—डोला सभा के मध्य में रक्खो कहारन आय

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के । जैसे कही मलखान तिय नृप से कही समझाय के ॥ सुनकर उठे प्रथीराज कंठीकान्ह मन हरषाइ के ॥ डोला का परदा खोलके देखन लगे हैं आयकें ॥ पारस को देखत रहाथ दोऊ धरणी गिरे भहराइके । कर हाय पारस हाय पारस रोवते बिलखाय के ॥

आल्हा--पारस पारस कहि कर रोवत राजा प्रथीराज नृपराय । दोना बेटा बदस कहि कंठो कान्ह रहे बिलखाय ॥ माहिल समझावत राजा को तनकन धीर धरे मन मांहि । तीन दिना गए बीत सबन को फिर नहू दियो अन्न जल नाहिं ॥ लाश पड़ी बिगरे पारस की सबने सुधि दीनी बिसराय । इतमें रानी गजमो तिनने दिल्ली शीश दयो भिजवाय ॥ देखत शीश मालती रानी धरणी गिरी तमारी खाय । शीश धुने अरु छाती पीटे करिला नैयासी डकराय ॥ सोच समझ बांदी बुलवाई के ला तुरत लीन सजवाय । सती होन पारस की रानी सरहागढ को चली सिधाय ॥ इत में देख के समझौती माहिल उरई के परिहार । शोक निवारी प्रथीराज को मुखसे बोले गिरा सम्हार । बिगरे लाश परी पारस की याको तुरत देउ फुकवाय सुनकर राजा प्रथीराज ने चंदन अगर लयो मंगवाय

दो०- करी फुकन की त्यारी । तबी पारस की नारी । कटक में आइ भारी । डोला में से उतर मालती ने दै गिरा उचारी ॥ १४८ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो०—दादाजी अब तो तुमन, दई राज करवाय।
सब विधि से अब तुम्हारी, छाती गई सिराय॥
चौ०—छाती गई सिराय करी विधवा मैं अबला नारी। अच्छो करी१ जो कछु अब विनती करूं तुम्हारी॥कर२करुणाकहूं कामना पूरी करो हमारी। सती होउं पति संग दियो सत आनन्द कंद मुरारी॥
दो०—सबै सामान मंगाओ। पती संग सती कराओ॥समय ऐसो नहीं पाऊं। अपने अंग पजार संग भरतार स्वर्ग को जाऊं॥ १४९॥

ज० प्रथीराय का

दो०—शोच समझ मन आपने, होनहार बलवान।
जो होनी सो होगई, तू क्यों तजे पिरान॥
छं०—काहे को तजती प्रान हो चत्रिन की त्रिया गेंवती। सब राज तोकूं बिखरदऊं मति संग सती होवे सती॥ धर धीर मन करले सबर हरबार मत हिलकी भरे। चाहें कोट विधि कीजे यतन ताऊ कर्म रेखाना टरे॥यासे बहु संतोष कर मम बचन श्रवणनमें धरो। नौकासपर कर हुकम बैठी राज दिल्ली का करौ॥१५०

ज० मालती का

दो०—सती होऊं पति संगमें, सत दीनो भगवन्त।
अब दिल्ली के राजको, आइ गयो है अन्त॥
चौ०—आइगयो है अन्त बढाई होगी अफगानोंकी यवन करेंगे कुमति मार हिंदू राजा रानों की॥ बन्द रोज में मिले खाकमें गद्दी चौहानों की। इकदमस्य के बीच सल्तनत होय मुसलमानों की॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो०—सकल सामान मंगावो । मुझे सती कर नाहो ॥ आप मत करिये नाहीं । कुशल नाहीं मैं नाहीं ॥ चंद दिनमें होय भारत । बन्नाफल चौहान चंदेले सभी होयँगे गारत ॥ १५१ ॥

ज० रंगा का

दो०—सुनकर प्रथीराज नैं, दयो सामान मँगाय।
सरपे बैठी मालती, कहन लगी समझाय १५२

ज० मालती का

दो०—दादाजी विनती मेरी, सुनिये कान लगाय
अब तक मेरी बहन से, मोकूं देव मिलाय ।

छ०—दीजै मोइ मिलाय गजमोतिनी से ऐसे समय निरमुख कैसे रहूं वासें । मोपै सदा से बहुत हित प्रीति राखी अपने मरम की बात कह दऊं वासे ॥ सुरत देखा चाव मैं लऊं देख वाकूं इस के सिवा नहिं औरकुछकहूं वासे । इन्हा करूं मेरे बाये प्राण अटकें मरती बेरतो और मिल लऊं वासे ॥ १५३ ॥

ज० रंगा का

दो०—सुनत वचन पृथीराज के, बांदी दई पठाय॥
गजमोतिन के महल आ, कहन लगीसमझाय

ज० बांदी का गजमोतिन से

दो०—अरज श्रवण मेरी सुनो, श्री गजराज कुमारि
भैन तुम्हारी मालती, सती होन को त्यार॥

वा० सती होने को त्यार आइकर सरपर छाइ रही है। [illegible] रूमाल [illegible] प्रदक्षिण मैंन कराइ रह है॥ देखर सिर प्रीतमको दृगनीर बहाय रही है । मरनो समय

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिलन की खातिर तुमें बुलाय रही है ॥

दौ०—तुमारी बहन मालती। चिता पै मार पालती। बेठगई होगी प्यारी। भुजा पसार मैनतेमिलआयों गजराज दुलारी ॥१५५॥

ज० रंगा का

दो०—सुनकर बांदीके वचन, गजमोतिन रानी।
कहन लगी मलखानसे, कर गद २ बानी।

व० गजमोतिन का मलखान से

दो०—परम प्राणप्रिय प्राणपति, प्राणाइश मम प्राण।
प्रतिपाल के प्रियतम प्रजा, प्रियवादी सुखदान॥

बा०—सुखदान प्राणपति मैं अर्द्धंगी नारी। प्रज्वलित प्रतापी, प्रतिप्रतिपक्ष प्रहारी॥ महाराज धुरंधर धं। वीर धीमान। वनिता, वाम वधू बालाकी विनय सुनादे कान। मालती मैन मम सखी होनपहा आई मिलनेकी खातिर ताने मोह बुलाई मेरे पिया तुमरी आज्ञा पाऊंगी। अन्त समय परमैन गालतीसे मिल आऊंगी॥ सर ऊपर बैठी तयारी जलनेकी। मा जाई मैना फेर नहीं मिलने की॥मेरेपिया नेकदेम सुरत आऊंगी। ऊके मोह जहान जो ऐसे वक न जाऊंगी॥जो जाऊं तो चौहान करेंगे ख्वारी। गति सांप छछूंदर की सी भई हमारी॥मेरे पियानखानों अव अनुचितहै मोइ। मोत बुढापो और आपदा सब काहू को होइ ॥१५७॥

व० मलखान का

दो०—प्रेम प्रकाशिन प्राण प्रिय, प्रमदा प्रिया प्रवीन।
पिकबयनी पंकज मुखी, पावन, परमकुलीन।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ला०—कमनीय कुलीन कचालनी कांता कामिनी। मदमन गंजनी नैन खंजनी भामनी। मेरी पिया चतुर चंचल चोर चित लेन। चंद्रका चपला नवला चंपक बरणी सुखदेन॥ जानिको तुम कोनहीं मनाई प्यारी। है इसी बात का डर गजराज दुलारी॥ मेरी पिया भुजंग सुन्दर छुटि मुलकी स्थान। वैशक दगा करें तेरे संग कपटी मटकी हान॥ दगाबाज भरा बल से दिल्लीवारे। विश्वासघात की कुटिल घाति भारे मेरी प्रिया नीति तजि कीनी सदा अनीत। चौहानों को बाबा को भी मुझको नहीं प्रतीत॥ इकली बांदी के संग नहीं भेजूंगा। चतुरंग चमू संग साज में रंग चलूंगा॥ मेरी प्रिया आपनो डोला सजवाय। तेरी मैंन मालती सेचल साऊं तुम्हें मिलाय। जो तरफ तेरी कोई देखे नजर उठाके। मुट्टा सों शिर कंजर देदऊं उड़ाके॥ मेरी प्रिया लखन की मुझे सदा सुधहै। क्यों भय माने नारि सिंहपति जबतक कायम है १५८।

न० रंगा का

दो०—सुनत वचन मलखानके, गजमोतिन सुकुमार। रतन जटित शिबका सुभग सजवाई छबिदार॥

चौ०—सजवाई छबिदार बैठ तामें गजराज दुलारी मिलन चली गजराज सुता से नर मलखे की नारी॥ संग वीर मलखान साहित चतुरंगिन सेनारी। हां मालती मैन वहां कोई क्षणमें आइ क्षमारी

दौ०—उठा परदा गजगामिन निकल बिजली सी कामिन। पास मैन के आई। गजमोतिन से

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नारि मालती बचन कहे बिलखाई ॥ १५९ ॥

ज० मालती का

दो०–तैं मन चीती कर लई, दीनी रांड बनाय ।
अब तो गजमोतिन तेरी, छाती गई सिराय ॥
छंद–छाती भई ठंडी तेरी मैं रांड तैं करवादई। बन मेन लीनों वैर तू किस जन्म की बैरिन भई ॥ मैंने तैंने एक मात की कुख पसार पाय है। सोची न कुछ पति मेरे को दीनों करा कतलाम है। जो कछु होसो अच्छी करी अब वैर को बिसराय के। मर वो दई छोटी बहन को ले गले चिपटाय के ॥
लावनी—चिपटाय गले मिल ले मा जाई मेना। अबकी बिछुड़ी मालती मिलन की है ना ॥ मेरी मेन विनय एक सुनिये कान लगाय। एक कृपा करिये सावन में जब तू पीहर जाय ॥ कुछ खवर लेर पूछे मेरी महतारी। कह दीजो सती हैं गई सुता तुमारी। मेरी मैन आज मैं होउं जगत से दूर। राम २ दीजो आमिर की कर सब माफ कसूर ॥ १६०

ज० गजमोतिन का

दो०–उस दिन की कर याद ले, बोले बचन कठोर।
बोली गोली सी लगी, गई कलेजा फोर ॥
छं०—गई कलेजा फोर कर तेरी बोली तैं मन अपने बड़ो मनहर कीनों। मोसे कही तू ब्याही है रहतवा को तेरो जन्म जगमें है धरकार जीनों॥सुनकर वचन तेरो भयो घाव मेरे मानों मार छाती दुश्मन सेल दीनों॥इहां कहे मैना वाही रहतवा ने तेरे धनक पति को शीश काट लीनों ॥ १६१ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो०—ऐ मैना क्यों नारिको, डूबी रही पजार।
छलकीनों गजमोतिनी, बनके कपट कटार ॥

भजन—मेरो भरतार तैंने मरवायो। मरवाये भरतार मेरो तोह नेक दरद नहीं आयो ॥ छोटा मैन राडकर दीनो अब तो भयो तेरे मनचायो ॥ मेरे भरतार० हत्यारी बन कपट कटारी कबको लीनों दायो। अपने पतिको मेरे पतिको काल बना कतलाम करायो॥मेरे० मेरे पतिको काल पूछतें मेरो सुहाग छिनायो। कैसे भलो होयगो तेरो मेरो मझधार जहाज डुबायो॥मेरो०॥ तैं निज पति को काल पाइके पदम माहिं बतलायो। इन्द्र कहै ना कही किसी से मो दुखियाने अबतक छिपायो। मेरो भरतार० ॥ १६२ ॥

व० रंगा का

दो०—दोनों की सबकही सुन उरई के परिहार।
पृथीराज के पास आ, बोले शिश सम्हार ॥

व० माहिल का

दो०—आज तुम्हारी भगवती, करी सहाई आन।
भूपति अबतो सहज में मरे वीर मलखान ॥

[चौ—मरे वीर मलखान आज येऐसेहो सुन आयो।
माळवतीनेकालपाइकेपदममाहिं बतलायो॥अबनिज मनमें सोच समझ एकनयो मंत्रउपजायो।कान्हराय को दय भेज क्यों तुमने विलम लगायो ॥

शेर—मलखान कएठीकान्हकीकुश्ती कोदोठहरायके मलखे को धरण पछारके डोला कोकेउ छिनायके॥ कर आज इतनोंकाम गढपर कलल तोप लगाइके।म

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुल्लान को फौरी पत्म लो सरसमा लुटवाय के ॥
दो०—बक ऐसा नहीं पाओ । कान्ह कोजरद पठाओ ॥ मेरे मन यही समाई ॥ जीते कुश्ती कान्ह तुरत गजमोतिन लेउ छिनाई ।१६५।

ज० बद्दभाट का

कवित्त—येही महाराज तुम दिल्ली पति बाज रहें माहिल सिख मानों तो हवाब सवखोओगे। अबही तों तुम्हारों कुछ बिगरों नहीं है नाथ लगे कीबटी को ताहि कहांतक फिरधोओगे॥ सुरसा पैपदेहेंउनमें जीवत न आयो एक नाहक में अपनी शान शेखी सब डुबोओगे । अबहू महाराज तुम लौट चलोदिल्ली को याही में खैर नहिं पिछरी बहुत रोओगे ।।१६५॥

ज० माहिल का

दो०—श्रीराजन महाराजजी, इसको देउ निकार ।
तनक न चुपको रहत है यह भटरावदकार॥

चौ०—यह भटग बदकार नहीं कछु काम यहां परजा को। पायो भेद तुमने बैरीकोरह्यो माफ अब काको । शिक्षा देइ बनावे कायर कीनो काम सजाको । अभी निकाल देउ बंगले से बक २ करै भटाको ॥

दो०—सच्चा जोयाको मानों।नतुम्हरो लगेठिकानों ये भटरा नमक हरामी । करौ इसे बरखास्त भाट को करता फिरे गुलामी ॥१६६॥

ज० रंगा का

दो०—माहिल की सिखमानकर.कंठीकान्ह बुलाय
मलके से कुश्ती लड़न, दीनों तुरत पठाय॥

चौ०—इतमें कंठ.कान्ह बल इतमें पारस की नारी।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सखी भई पति संग तुरत त्रिदशालय धाम सिधारी।
डोला बैठ चलीमहलन कोइगजरानइमारी।कान्ह
राय मलखान बीर को घेरो जाय अगारी॥

दो०-सिंहसम करीगर्जना। भयकरमहा तर्जना॥
अंघौरे अपने डोलोताललठोककर कान्हरायमलखान
बीर से बोले॥१६७॥

ज० कान्हराय का

दो०—कहां जात घोडा चढो, कनकाके मलखान।
गांडू नीचे आ उतर, कैसो तू बलवान।

चौ०-कैसोतुबलवान जोरहिल्लादमुजावलनोंको।
मल्ल युद्ध कर संग मेरे ले खोलइरादा मनको।पारस
बदलो लऊं तुमारीनही तोछोडनको।यहसमरसमा
जान न दूंगो डोला गजमोतिन को॥

दो०-जो हैं क्षत्री बलधारी। तो आजा मेरे अ
गारी॥ इरादा मत कुछ राखो। आज समरमें मल्ल
युद्ध की मेरो तेरो साखो॥१६८॥

ज० मलखान का

दो०—काहे को गरजे बहुत, ठोक २ समताल।
गरजत सो बरसत नहीं, वृथा बजावत गाल॥

चौ०-वृथाबजावेगालकहा तूछीने गजमोतिनको
जा दिन दिल्लीगयोयादकरवेलाकेब्याहनको।मुश्क
बांध तोपै पुजवाए ब्रह्मा केचरणन कोता दिन कहां
रह्यो भड़वे ले अपने भुजाबलनको॥

दो०-मैंहूं मल्ल दलगञ्जन तेरो अभिमान प्रम
ञ्जन॥ कुशल ... अगर तू।हट जा हुसर आगे
से मत मेरी रोके डगर तू॥१६९॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो०—बबर बबर क्यों करत है टुकड़े खोर गुलाम।
    बच्चापन मालुम हो, तेरो आन तमाम ॥
चौ०—तेरोखाजतमामकाम कुश्तीमें मार करूंगा।
हाथ मिलावत है खाली पटे कस्मारघरूँगा ।।वेतरह
कर कला जङ्ग तेरे अभिमान हरूँगा । छाती पर हो
कर सवार गुलचन से गाल छरूंगा ।।
दो०—अस्प से आउ उतर के।युद्ध लें मुझ से
कर के। मोहि गंगा की कसम है । जननीदूध हराम
लड़े विन आगे देह कदम है ।।१७० ।।

ज० मलखान का

दो०—सुनत वचन तन वदन में, बाढ़े क्रोध प्रचंड।
    उतरो तुरत तुरंग से, फड़क उठे भुज दंड ॥
चौ०—फड़क उठे भुज दंडजङ्गनकोवस्तरलगे। उ
तारनकसि लंगोट डंड मस्तकरजकरीभूमिकीधारन
वीर रूप बनगयो सिंह ज्यों गजदल लड़ो पछारन ।
शीश नाय धरणी माता को लगो ताल फटकारन।।
दो०—अमर गुरु को सिर नायो। औ मनिया देव
मनायो ।। शारदा सुमरूं मन में । कहे बनर गोबिंद
वीर बजरंग राख पति रन में।।१७१।।

ज० दंगा का

दो०—दोऊ वीर हित युद्ध के हुए तुरत तैयार ।
    ठाठ बाँध ठाडे भये,ताल खम्ब फटकार ॥
चौ०—ताल खम्ब फटकार तुरत आपस में हाथ मिला
यो।हकदास्ती कर कान्हराय फिर खेचअगारी लायो।
लंगर गेर वीरमलखे गरदन पर हाथ जमायो।। का
न्हराय जब कर उतार ततकाल पीठ पर आयो ।।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शेर—चढ़ा बगली लई झटपट दबाया और कश के ।
उंगलिया वीर के मलखे खड़ा आगे उछर कर के ॥
उठा टँगड़ो पै मलखे ने कमरपर बांह के उलदम । मिला
कर टांग कण्टकान्ह कोनी टूट मिल बाहम ॥ लिपट
फिर अलग होकर के करी मलखान ने पटकी । दी
कँठीकान्ह कर फिर की पकड़ दोनों भुजा झटकी ।
ढुकाइन करके फिर मलखान पहुंचा पीठ के ऊपर ।
चढ़ा साडो लई एकदम जमी घोंटू कमर पर धर ॥
तो खोंपी वीर कंठी कान्ह नीचे से निकल आया । प-
कड़ मलखान का मोजा बहुत ऊंचा उठा लाया ॥

लावनी—तब तुरत मलखे झटका दई अढंगी । फिर
कमर पकड़ मारी पिछली इकटंगी ॥ महाराज पकड़
कर पटके करी उखेरा । कान्हराय ने तुरत टांगको स्यो
लपेटा गेरा । तब छुटा टांग को मलखे गया निकसके
चुबक करके फिर चला एक संग धलके । महाराज किया
झट पट चट फोड़ा जी । कान्हराय की पकड़ गर्दन
दिया मरोड़ जी ॥ दोऊ करें परस्पर दाव न एकहु हारे
कोई करता जग कोई धोबीपाट पछारे ॥ महाराज कोई
के बांध कभी हलकूना । एकके छरले बांध नाकसे बहने
लागो खून ॥ हे साली फिर मलखान पिछारी आया
दई बार अगल्ली बरणी कान्ह गिराया ॥ महाराज
पीठ पर पहुंचा मलखे धाई । दस्तरान पर बैठ बीरब
लई सबारी बांध ॥ लछकन का तुरत पकड़ा लंगोटा कमर से
आनन फानन में लीना उठा अधर से ॥ महाराज शीघ्र
तक तुरत उछारोजी । चारों अंटा चित्त कान्ह धरती
पै मारोजी ॥ तब माहिल पृथीराज से बचन उचारे

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऐसे ही लरैया कंठो कान्ह तुम्हारे । महाराज पिट रहे देखो नजर पसार । होखो तुम्हारी धुर होगई दुग,धन अवतार ॥ अबहू गजमोतिन डोला जो चाहो । नौलखदल को हल्ला एक संग कराओ ॥ महाराज सुनत ही नृप माहिल के बैन । पृथीराज ने मलखे पे तब पेको नौलख सैन ॥

दो०—एक संग हल्ला कीनों । घेर मलखे रख लीनो ॥ तबी गुस्सा कर मारे । दोनों कंठी कान्ह जोहो मलखे कर लीयो दुधारो ॥ १७२ ॥

जवाब मलखान का

दो०— चौतर्फा से आज में, लियो दगा में घेर ।
छोड झपट कर हाथ में, लई नागिन समसेर ।

चौ०—लई नगिन समसेर उठा दोनों पर इधर उधर, कोरवाके बीच करवली कपटन जाऊं साफ निकरके ॥ प्रथीराजके जाय तख्त पर मारडल लई पकर के । तब काट लयो खंजर से झटपट उड गया उछर के ॥

दो०—पास रानी के आया । तुरत डोला उठवाया ॥ करी चलने की त्यारी । प्रथीराज को तब आय माता के धरो अगारी ॥ १७३ ॥

ज० प्रथीराज का

दो०—सोच फिकर करने लगो, मीडन लागो हाथ ।
आज हमारी समर में, बिगड गई सब बात ॥

चौ०—बिगड़ गई सब बात हाथ मल२कर अति पछितायो । या माहिल तूने नीचो हमें दिखायो ॥ परदा परी अकल मेरी पै सरसा पै चढि आयो । लोहा पारस मरे कुटम को सत्यानाश करायो ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो०—मेरी मति विधना छीनी । मान माहिल सिख लीनी ॥ अपति अति भई हमारी । तनक रंडियाके बोरा ने इज्जत मेरी बिगारी ॥ १७४

ज० चन्द्रकवि का

कवित्त—माहिल की बात को सबाद सब मिलौं तुम्हैं तनक छोकरा ने दीनी इज्जत बिगार कै। अब एक मानोंमैं भविष्यत बताऊं तुम्हें ताको महाराज लेउ अपने चित धारके॥ हल्ला कर दीजे तबआवैगोलखन फेर अबके फिर तुम्हें लेह तखत पसेडारके देकेबदावौं तापैं घोडा उडवाओभूप नीचे से तान बान दीजो पत्र फार के ॥ १७५ ॥ ज० रंगा का

दो०—चन्द्रकवी के वचन सुन, चतुरंग सेना साज। सरसा पै हल्ला कियौ, प्रथीराज महाराज ॥

चौ०—प्रथीराज महाराज सरसा कोट चहूं दिश घेरौ । चारौं तरफ किले के तब तोपनको मोहडाफेरौ॥ बत्ती दई दिवाय धुआं से भारीभयो अंधेरौ।अररर२ अर्राटे से ग्राम ग्रामिनिन गेरौ ॥

दो०—दनादन गोला बरसे।जिसतरहओलाबरसै। तभी मलखे बलधारी। करो समर की तैयारीतबही भई छौंक अगारी ॥ १७६ ॥

ज० मनमोतिन का मलखान से

दो०—अशगुन पति तुमकोभयौ,रणको कदमन देउ। कुछ दिनको प्रथीराजसे,मांगमुहलतिबतलेउ॥

दोहरा—समझाऊं हरबार जी,मत जाओ लखनको काल तुम्हारो मेले ऊदली, दलबिच कहौपुकारजी मन० ॥ अब चौहान तुईना छोडै दई जानसे मार

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जी ॥मत० ॥ खबर पठाय देइ कनवज को, आवैं दिवर जुझार जी ॥मत०॥ फिर चोहान हटे ना सन्मुख, भागे सस्तर डार जी ॥मत०॥ जोधुमइकले समर कोग. नहीं वचो भतार जी । मत० ॥ इद बिना अब कौन हमारी, खेया खेवन हारजी ॥मत०॥

ज० मलखान का

दो०—जिसदम कर तेगा लऊं, धक धकाय मन शक्र ।
कलमलाय कुर कमठ, चकचकाय चहुं चक्र ॥

चौ०—चकचकाइचहुं चक्र दन्त दिग्गजकेकरेकडा चडातमकि तडातडतजं।भिरल बहलकेकडाकडाकड लूंत खडासर समर लगं लटकाऊं खडाखडाभडाझारि झडाभड़ मुंड रुंड भुज डाकू धरोंगा धड़ाधड़ ॥

शेर—सिहकी वाम डाकरके वृथा शोक करे मन में । अगर छिप महल में बैठूं दाग लागे धवल पनमें । आइकर क्या करे ऊदल, कजा जो आगई मेरी । होय वही जो राम रचराखा, चले मेरी न कुछ तेरी

दो०—पिया तज सोच फिकर को । सुमर मन परमेश्वर को ।मान व शिव शंकर को ।जाउं मैं नारि समर को ।चलाउं तेग दुहत्ती ।गर मैं मारा जाउं प्राण प्रिय होना मो संग सत्ती ॥१७८॥

ज० रंगा का

दो०—श्रीगजराज कुमारिको, समझाकर मलखान।
चलो वहां पहुचो तुरत, जहां कटक चोहान॥

चौ०—जहांकटकचोहानतहांपरआयोवीर मल्हारो हो सवार सन्मुख तुरंग कर लियो ढाल दुधारो ॥शिर सोहे मंदील चमाचम चमके तुर्रा न्यारो । आवत

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो मलखान कियो चौहानन हल्ला भारी ॥

दो०—घेर कर इकलो रनमें । मार शस्त्र बदन में ॥ तबी मलखे रिस खाके । चौहानन के कटक मध्य एक संग परो अशंके ॥१७९ ब० मलखान का

दो०—यथा मत्त गज यूथ में, टूट सिंह किशोर।
तिमि चौहानन में घसो, गर्जं तर्जं घनघोर ॥

चौ०—गर्जं तर्जं घनघोर जोर कर झपट झपट झटाझट खण्ड २ गज सुंड दन्त चटकाए चटक चटाचट ॥ मारि झार घोड़े सवार धरणी दए पटक पटापट । खननन खननन खनन खानाखान झाड़ा करे झाटाझाट

शेर—झानाखान खाँड़ खनकाया इधर छटके उधर छटके ॥ घसत रण गए सहस्रा भट, इधर हटके उधर हटके ॥ काट कर मुंड लाखों के, इधर पटके उधर पटके हजारों मान डर कायर इधर सटके उधर सटके ॥

दो०—दलि मलि दल चौहान को, चलो अगारी धाय।
पृथीराज के मंच पर, तुरत दहाड़ो आय ॥

चौ०—तुरत दहाड़ो आय तमोगुण तनमें छाइ गयो है पकर मंच से पृथीराज धरणी पर डार लयो है ॥ आज बीर मलखान तेरे शिर ऊपर आन भयो है। हो हुशियार कमान तान क्यों देर लगाय रह्यो है ॥

दो०—कलङ्गी लई कतर के । घसीटो टांग पकड़ के ॥ दुर्दशा कीनी भारी । छाती ऊपर हो सवार नङ्गी शमशेर सम्हारी ॥१८०॥ ज० प्रथीराज का

दो०—सुनरण बांके शूरमा वच्छराज के तात।
सौ सौगन्द गुरुदेव की, जो तू छोड़े हाथ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छं०—होवे मती तू हार मोकूं प्राण को दे दानहै भगवान अरु श्री भगवती गुरुदेवकी तोइ आनहै ॥ तोसे गयो मैं हार के दे छोड दिल्ली जाऊंगा । इन्दा कहे अपने जियत नहि सरसमा फिर आऊंगा ॥ १८१ ॥

ज० मलखान का।

दो०—ऐसे छोडूंगा नहीं, पृथीराज महाराज ।
कागज पर दसखत करो, हार जीत के आज ॥

ज० प्रथीराज का।

दो०—दसखत करने में हमें, उजर कछू है नांहि ॥

चौ०—हमदिल्ली को जाहि करूं दसखत मम प्राण
तुम जाओ गढसरसामा, हम दिल्लीकोजाहि। बचादो । करके कृपा कमाल जराघोडेको शैरदिखादो कितना ऊंचा जाय अश्व को एड लगाय उडादो । आसमान में पहुंच विजयका बेशक शब्द सुनादो ॥

दो०—अजब अनमोला घोडा । बदन पर खायन कोडा ॥ इशारे से उडजावै । यों परन्द पक्षी झट पट उड़ आस्मान में छावै ॥ १८३ ॥ ज० मलखान का

दो०—दसखत लिये कराइ के, मलखान करी अवार ।
हय मनहुल की पीठ पर, होकर तुरत सवार ।

चौ०—होकर तुरत सवार अश्व ऊपर को दिया उडाके सननन सननन सनन सन सन आसमान पर जाके। काली बदली पाहृय मनहुल देय पंख फैलाके । अति उतंग अद्भुत तुरग नभ मंडल गया समाके ॥

दो०—पुकारा आस्मान से । कहो यों चौउहान से ॥ अश्वबल दिखलाता हूं। पालर कर जीत आप को घर अपने जाता हूं ॥ १८४ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो०—सुनत चन्द चौहान ने, दयो तान कर बाण ।
पत्र फोर मलखान को, लगो अश्वके प्राण ॥
छंद—आकर लगा दोनों के जब चौहान का शर आन जी। जख्मी हुआ घोडा दिये मलखानने तज प्रान जी॥ जब अश्व से गिरने लगा मलखे धवल मुरझाय के। ऊपर से ऊपर बनसुआ लई लाश तुरत उठाइके। लाकर धरी महलोंमें फिर तज प्राण घोडाने दियो। गजमोतिनी रानी ने सखि सब रुदन महलन में कियो॥ १८५॥

व० गजमोतिन का

दो०—सासुजी सुत आपनों, लीजे नैन निहार ।
रण से आयो पति मेरो, सोयो पांइ पसार॥
छंद—सोवे है पांइ पसार पति की ये कहा गति हो गई। हिलकी भरी उमगो हियों नैनन से टपर रोगई मझधार डूबी नाव मेरी कहा बिपत विधि ने दई॥ कैसे करूं मनमें सबर बारी उमर बिधवा भई॥ का बिध से मैं संतोष बाबू को सुने किससे कहूं। लंकासी तण में लुटगई अब यह बिपत कैसे सहूं। कूआ को बेती पाट साइल सिधु नहिं मोपे पटे। पति बिन बिपत कहांतक सहूं बारी उमर कैसे कटे १८६

व० कनका का

दो०—सोयो पांइ पसार के, मेरो सुत मलखान ।
मो पापी कम्बख्त के, कढे न पापी प्रान ॥
छन्द—नहिं प्रान निकसे हैं मेरे येवज्र कीछातीभई बहुअर में अब सुत के बिना आसा निरासाहेगई। अब ही गयो मेरे पास से मेरो पिरोना लाडजी। कहां से

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अचानक आगयो मलखान सुतकी कालरी। बछडा
बिना ज्यों गाय बिलके सो मेरी गति ह्वैही।छाती में
घूंसा मारकर देवल की देखत रहगई १८७

ज० गजमोतिन का

दो०—तुम सुतकी शैया पिया, सोवत श्री दिन रैन।
बिना बिछौना भूमि अब, परे मूंद दोऊ नैन॥

छंद—दोऊ नैन लीने मूंदके मृतकाकीशैयासोगये।
फूलनकी शैया छोडके रजके निवासी होगये॥रोवे
खडी रानी तुम्हारी नैन तो खोलो पिया। नहिंतरस
तुमको आवतो मुखसे तो कुछ बोलो पिया।हितप्रेम
की बातें सुमन एक संग हमसे तज दईं। हम खाक
देखत नहीं ऐसी निठुरता धरलई॥ १८८।

ज० बहोरन का

दो० दादी अरु माता मेरी कर रही महा विलाप।
कौन नींद में घरन पै पिता सोइ रहे आप॥

छंद—सोवे शोधरती पै पिता जौन आज कहातुम
को भयो।पुचकारके नहिंप्यार कीनों ना हमें गोदी
लयो।मेवामिठाई अरु खिलोना रोज मोकूं लावते॥
हंस२ मेरो मुख चूमत छाती से मोह लगावते।सोए
हो पाय पसार के आंखें पिता नहि खोलत।जानूं
भये मोपै खफा इससे न मुझसे बोलते।अब नेक
उठ बैठो पिता में हाथ पकर उठ लगो। दादी कलेऊ
लायदे खादाके खायन आउंगो १८९

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७९ कनका का

दो०—तन मन में सुरझा गयो, देख तुम्हारो हाल ।
दिल की भर २ आवतो, तेरे बहोरनलाल ॥

का०—मत दिलकी भर २ रोवे कुमर तुम्हारो, पर हतो तुम्हें भगवान हमें अति प्यारो । मेरे लालछबढो मो जापे हब प्यार । आज बहोरनलाल कुमर तेने कैसे दयो बिसार ॥ तेरी बिलखरोवे गजमोतिन रानी । तेरी माता तड़फे यों मछली बिन पानी ॥ मेरे लाल तेरी पलग तिनहीं देखी जाय । बिखर रहे सुकुमार तेरे सब गयो अंग कुमलाय ॥ मैं बार २ तेरे सिर के बाल सम्हारूं मुख हाथ फेर कर अन्चर से झारूं । मेरे लाल चूम मुख छाती लऊं लगाय । हाय हाथ माइ तेरी योबिन बहुता गाय बेटा बेना सुख मेरे कुमार कन्हैया । मलखान मरहारे मो रंडिया के हैया ॥ मेरे लाल हमारे कुमर हजारी जी । आतो से लगजाउ तेरी रोवे महतारी जी ॥ १९० ॥

८० गजमोतिन का

दो०—ऐ पीतम हा प्राणपति, हा मेरे जीवन प्राण ।
हा भरता हा कथ मम, हा स्वामी सुख दान ॥

का०—स्वामी मम जीवन प्राण पति प्यारे । मोइ छोड़ बिलखती तुम सुरधाम सिधारे ॥ मेरे पिया करी मैं काश निराली जी । रहे स्वाकपर लोइ मेरे प्रीतम सुखराश जी अब कौन करेंगे आदर मान हमारा । उठ गयो मेरे सुख सुखकी पूछन हारा ॥ मेरे पिया कौन देखे पतन मेरो जी । हो आलिनक बिना भयो मोह सुख अंधेरो जी ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भरतार कहूँ के प्यारो कहिकर बोलूं ॥ कै नैया खेवन
हारो कहिकर बोलूं ॥ मेरे पियापलक अपनेनकखो
लोजी । अन्तर घटकीवातहनोंअब मुझसे बोलोजी
मैं पंखा लेकर ब्यार तुमारी ढोरूं । मैं चरणनपै सोऊं
और दोऊकर जोडूं मेरे पिया हालगेलगलबधोजी
स्वामी कहूं या कंथ कहु बालम के सैयांजी ॥ १९० ॥

ज० बहोरन का

दो०—लाल तुम बिनाको करे, मेरो आदर मान ।
लाड चाव अरु प्यार सब, उठालयो भगवान ॥

ज०—नादान उमर में पिता हमें तज दीनों ।
कुछ लाड चाव और प्यार न हमसे कीनों ॥ मेरे पिता
उमर वारी में चले बिसार । होगयो आज अनाथतुम
बिना कोन करेगो प्यार ॥ तुम बिना कौन गोदीलें
मोइ खिलावें । को पकर उगरिया घरसेमोइ लेजावे
मेरे पिता कौन कंधा लेइ चढाय । निकर जाउं कहीं
दूर तो तुम बिन कौन ढूंढनेजाय ॥ पितु बिना तुम्हारे
को मेरी धीर धरैया । मेरी मैया की नैयाको पार करैगा
मेरे पितान तुमनेदरस दिखारीजो । कुमरबहोरनलाल
पुत्र नादाद बिसाजो अबतो मोकूं नेक उठकरकंठ
लगाओ । मुख चूम लउ अरु छाती से चिपटाओ ॥ मेरे
पिता खबर नेक मेरे मनको होय । कुमर बहोरनला
ल तुहारो बिलक २ रहो रोइ ॥ १९२ ॥

ज० कनका का

दो०—तू बेटा रावै मती, ऐ मेरे जीवन प्रान ।
आगें देखूंगी तेरी, अबी उमर नादान ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छंद—नादान है तेरी उमर सौना मेरे रोवे मती। घर धीर नेक मनमें कुमर दलगीर तू होवे मती। दुनिया से सेरी छाड सब सुत प्यार बेटा उठगयो। तू रह गयौ बिन बाप को बारी उमर में लुटगयो। मेरे कुमर मलखान को रहो एकली डार है। तो रोके मेरे छाडके मैं कराकिये दूग छाल है॥ अंचर से आंसु पोंछके छौना तुरत पुचकारके। छाती लगा प्यार से गोदी लयो बैठार के॥ ९३॥

ज० गजमोतिन का

दो०—ए सासु मैं, जगतमें सुफल करूं निज अंग
सत दीनों भगवान मोइ, सती होउं पति संग॥

छंद—हूंगी सती महुवे तथा कनवज खबर पहुंचाय दे। ब्रह्मा को या उदैराज आल्हा जेठ कूं बुलवाइदे बिगरेगी पति की लाश तबतक तेल में लेउ गेर के। अब महलके फाटक सुनों सासुल हऊं मैं फेर के। चौहान घस आवें कहूं तो बहुतसी ख्वारी करें। इज्जत गई फिर ना मिले हम छान की धारी मरें॥ जेठौत देवर जेठ मेरे जब तलक आवें नहीं॥ जब तलक सासुल महल के फाटक खुलन पावें नहीं। अंचरसे आंसु पोंछती आई मैं उठकर दरजी॥ निज धर्म की दे आन दीनी मार तुरत किवार जी। कुछ शरम मो मे हो तौ तुम चरसे मत हालयो यती। कहै इन्द्र वन्नाफल बिना महलन के पट खुलियो मती॥ ९४॥

। इति मलखान संग्राम सम्पूर्णम्।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ सां० ध्रुव चरित्र लिख्यते

मंगलाचरण विष्णुस्तुति

दो०श्रीकान्तं श्री शुभाङ्गम्, श्रीयुत शान्ताकार ।
शुक्लाम्बर धर शङ्करम्, शशि वर्ण साकार ॥

चौ०–शशि वर्ण साकार सदन सुखमा सुशील सुराई शम सुमिरत सदा शेष सनकाऽदिक शारदा शिवा गिरीशम् । सन्तत साधि समाधि टेक्य ध्यावत साधुसन्त योगीशम् । सर्वेश्वर शरणाऽगत वत्सल शरण जगदीशम् ॥

दो०–शोक संताप प्रहारी । सुराऽरिन के संहारी ॥ शक्ति युत आनन्द कन्दम् । शक्ति देउ हरि भक्त ध्रुव चरित रचूं सचिदाऽनन्दम् ॥ १ ॥

कथा प्रारंभ

दो०–सब पुरिनमें अवधपुर, सुंदर सुखद अपार ।
जहां राम रघुबंश मणि; लीन्ह मनुज अवतार ॥

चौ०-लीन्ह रामअवतार उन दिनों अति रमणीक नगरथा॥किसी समय उत्तानपाद भूप वहां ताजअफसर था॥ सबै सुखी था मगर न प्रभुने दीना एक पिसर था॥महाराज महारानी के बस यह शशपञ्ज जिगर था॥

दो०–रात दिन दोनों प्राणी रहैं गमगीं परेशानी बड़ी दिल चिन्त मानी । एक रोज रानी सुनीति से भूपति बोले बानी ॥ २ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क० राजा उत्तानपाद का रानी सुनीति से

दो०—सब कुछ प्रभुने रक्खौ, राज पाट धन धाम,
मगर एक संतान सुख, क्यों न हमको गम ॥

चौ०-क्यों न प्रभुने पुत्र सब तरह ओछौ कर्म हमारो
जाने पूरब जन्म कौनसौ पाप बनिगयौ भारो ॥ बिना
एककुल दीपकके सब जग दीखे अँधियारो। धूल
समान धाम धन धरणी राज पाट सुख सारो ॥

दौ०-प्राणप्यारी सुकुमारी जो इच्छा होय तुम्हारी॥
मैंने मन यही बिचारी। बनमें चल हरि भजन करें
करि पुन्य सम्पदा सारी ॥ ३ ॥

क० सुनीति रानी का उत्तानपाद से

दो०-सुमिरहु श्रीजगदीशको, मति पति होउ निरास।
ब्याह कीजिये दूसरो, पूरन होगी आस ॥

क०—प्राण प्यारे कहन मेरा हृदय धरना मुनासिब
है। ब्याह सन्तान के कारण तुम्हें करना मुनासिब
है ॥ धर्म क्षत्रीन के स्वामी अनेकों ब्याह करते हैं।
सोचमें, रंज में गम में न पति परना मुनासिब है ॥
हमारी कोख से सन्तान अब होती नहीं दीखे।
दूसरी नारि बन बाम्मा तुम्हें बरना मुनासिब है ॥
सिर्फ एक पुत्र के होते ही सब तजि हरि भजो
बनमें। खामखा मान दुख दिल में न दिल दृग
भरना मुनासिब है ॥ ४ ॥

जवाब उत्तानपाद का

दो०—क्यों रानी अपने लिये, खड़ा करे उत्पात।
सौत चूनकी भी बुरी, समझ सोच कर बात॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौ०-समझ सोच कर बात कलहकी नीव धरी इस बाते। एक म्यान में कौन तरह दू जी तलवार समावै॥ दो नारी को पती कभी नहीं सुखसे सोवन पावे। प्यारी तेरी बात न मुतलक मेरी समझ में आवे॥

कव्वाली-ब्याहदूजा कराबैगी न प्यारी सुक्ख पावैगी। मुहब्बत प्यार सब तासे आइकर वह छुडावैगी॥ औरतें सौतसे अक्सर जला करतीं हैं दिल अन्दर। साथ तेरे लड़ाई से हमेशा पेश आवेगी॥

दो०-समझप्यारी मन माहिं। तुम्हें सुख मिलनो नाहिं॥ बहुत झगडा बढ़जावै। ब्याह दूसरा करने में मुझको नहीं कुशल दिखावै॥५

जवाब सुनीतिरानी का

दो०-शादी कीजे शादहो, भली करें भगवान।
शायद उसकेही कोई, पैदाहो सन्तान॥

बहर तवील-एक सिरफ संतती के लिये प्राणपति जो पड़ें दुक्ख सुख सब उठाऊंगी मैं। बो बनावे ह-हलनी टहलनी बनूं उसे सरताज अपनी बनाऊंगीमैं॥ जो निकाले मुझे तो निकल जाउंगी कुछ ज़रा मैल दिलपर न लाऊंगी मैं। ता उमर खूब खातिर खुशामद करूं जो कहेगी हुकम सो बजाऊंगी मैं॥६

जवाब उत्तानपाद का

बहरतवील-वो तेरे साथ में आन नेकी बदी क्या करे जाने कुछभी ठिकाना नहीं। चाहे दुख पाइयो चाहे सुख पाइयो बस शिकायत मुझे फिर सुनाना नहीं॥ तू समझती ये हो सौत मिलके रहें सो रहा आजकल

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

थी जमाना नहीं। तेरे कहने से शादी करूं दूसरी फिर कोई दोष मुझको लगाना नहीं ॥७

कथा

दो०—अस कहि वचन सुनीति से, गये भूप दरबार।
मंत्रिनसे का मशवरा, जरा न करी अवार॥

चौ०—जरा न करी अवार जाबजा भूपति खबर पठाई। कई जगह के राजाओं ने भेजी अवध सगाई॥ उत्तम कुल घर समझ एक नृप टीको लयो चढाई। चढे बरात सजाय वेद विधि फेरे सात गिराई॥

चौपाई॰भूपति ब्याह दूसरी रानी। चले अवधपुर आनँद मानी॥ जहां तहां करि मगमें विश्रामा। पहुँचे कौशलपुरी ललामा॥ बधू आगमन सुना सुनीती। सजवाकर आरती सप्रीती॥ संग सखी लै गामन हारी। आई द्वार मगन मन भारी॥

दो०—मनहिं मन हुलसावति है। रहस मंगल गावतिहै॥ तभी आ पहुंची डोली। निरख सौति की शकल नई रानी राजासे बोली॥८

अथाव नईरानी सुरुच का

दो०—डोला से पीछे कदम, रक्खूंगी भरतार।
पहले मेरी सौतिका. यहां से देउ निकार॥

कव्वाली—सौतिके साथमें स्वामी नहो मेरा गुजारा है। निकालो महल से इसको यही कहना हमारा है॥ देउ जो मेर खाने को और घरमें रहे जाके। कोइस महलका खाली न कुछ इसका इजारा है॥ बांस दे दीजिये करमें उड़ावे काग चढि महलन। जोमैं कह

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ती हूं सो करदो भला इसमें तुम्हारा है ॥९

जवाब उत्तानपाद का

दो०—सुनत वचन ऐसे निठुर,थर २ कांपै अंग ।
क्या इसने कीनी खता, रानी तेरे संग ॥

छं०—क्या खता रानी ने करी जो पैज ये ठानै कठिन । तेरा हुकम निशि दिन बजावै सच समझ मेरे वचन ॥ दो बार सहीने दिलके रह और देखले चालो चलन । यदि बदी तेरे संग की तौ मत इसे दीजो रहन ॥ सच २ कहूँ भगवानकी खाऊँ शपथ हरचन्द में । रानी सुनीति सुशील अति नाहिं किसी छल फन्द में ॥१०

जवाब नई रानी सुरुच का

दो०—एक न मानूँ आपकी, चाहें कहो हज़ार ।
कहन हमारी ना करो, मरूँ कटारी मार ॥

छंद—मारूँ कटारी कंठ में भरतार प्रान गमाऊँगी। बिन निकालें इसको न मैं प्रियतम महलमें आऊँगी गाढे के कपड़े दो इसे पोशाक जेवर छीन कर।कहना मेरा करना पड़े नाहिं फर्क होगा बालभर ॥ नफ़रत है मुझको मौत से स्वामी सही सुन लीजिये । घर नाम काग बिडारनी महलों से बाहर कीजिये।।११

जवाब राजा का

दोहा—नई नारि आगे न कुछ, जाती देखी पेश ।
तब सुनीति से ये वचन,बोले अवध नरेश ॥

जवाब उत्तानपाद का सुनीति से

दोहा—कीनी थी पहल मनै, तुमने मानी नाहिं ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब क्या सोचौ हो खड़ी,रानी मनके माहिं ॥

छंद—सोचौ कहा रानी खड़ी खाली महल कर दी जिये।जाकर रहौ घर दूसरे जो सेर भर नित लीजिये॥ पोशाक ज़ेवर लाइये पलकी न देर लगाइये। ले बांस काग उड़ाइये निज किये का फल पाइये॥होता मुक़द्दर का लिखा जाती नहीं कुछ पेश है। मोइ ब्याह दूजा करनका अच्छा दिया उपदेश है॥१३

जवाब सुनीतरानीका उत्तानपाद व नई रानीके

दो०—जोकुछ ये रानी कहै, वही करूं महाराज।
सहूं मुसीवत बदन पै;एक पुत्र के काज॥

लावनी—नहीं उज़र मुझे महाराज विनय सुनलीजै छोटी रानीजो कहै सो कहना कीजै महाराज लिखा जो कुछ मेरी तक़दीर। होनहार नहिं मिटै करौचाहे कोटि २ तदबीर। पोशाक और जेवरलो सबीउतारूं लाओ गाढ़े के बस्त्र बदन पर धारूं॥ महाराज बांस दे देदो मुझे इहाग। मैं अपनी छोटी बहना केमहल उड़ाऊं काग॥ मानी न आपकी फल ताकोये पायौ। रानीसे काग उड़ानी नाम धरायौ॥ महाराज अखीरी अरज़ ये है करजोर। रहै महरकी नज़र नाथमो ग़रीबिनीकी ओर॥ ना रंज मुझै कुछ तुम पति मत सकुचाओ। मैं निकल चली बहना तुम महलन आओ॥ मेरी बहन तोइ ये मुखभर दऊं अशीष। राजी रहौ फलौ फूलौ संतान देइ जगदीश॥१४

[illegible]

दो०—मुख भर अस आशीष दे, रानी गई सुनीति।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तब मनहीं मन कहत नृप, गद् गद् कंठ सप्रीति॥

रा० राजा उत्तानपाद का मनही मन में

दो०—जो रानी दासीन युत, रही महल दरम्यान।
ताकी इकले द्वितीय घर, कैसे हो गुजरान॥

चौ०—कैसें हो गुजरान मुसीवत महा कठिन पावैगी। रात दिवस रोवेगी घबरावैगी पछितावैगी॥ कांस उठावत नरम कलाई मुरकि २ जावैगी। षटरस भोजन करने वाली कैसें जौ खावैगी॥

दौ०—फटी जाती है छाती। न कुछ भी पार बस्याती। हमारा दिल रोता है। दो औरत वाले पतिका इस कद्र हाल होता है॥ १६

कवि वाच का

दो०—अस असमञ्जस वस नृपति, जाय नहीं कुछ पेश।
नई नारि सँग आखिरश, कीनो महल प्रवेश॥

चौ०—महलन कियो प्रवेश नई रानी के फँस चक्कर में। गई सुनीति नृपके बतलाए हुए दूसेर घरमें। छोटी रानी मौज करे दुख पावै बड़ी ज़िगर में। रोवै काग उड़ावै दिनभर लियें बांसको करमें॥

दौ०—कर्म गति टरै न टारी। बिचारी महा दुखारी॥ न दिल धीरज लावैहै। करे विनय करुणाऽकर श्री रोवै है पछितावै है॥ १७

अथ रानी सुनीति का करुणा करना

दोहा—श्रीपति जगपति विश्वपति, सुनो दीनकी टेर।
मो दुखियाको दुख हरो, स्वामी करो न देर॥

लावनी लँगडी—श्री सच्चिदानन्द भक्त के दुख हर॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हरैया तुम्हीं तो हो। मो दुखिया को धार से पार लै गैया तुम्हीं तो हो॥ दीनानाथ दयाल मुनिन के के चित्त बसैया तुम्हीं तो हो। अन्तर्यामी प्रभु मेरी टेर सुनैया तुम्हीं तो हो। अपने जन के काज अनेकन रूप धरैया तुम्हीं तो हो। मैं हूं अबलाकरूँ का यतन बतैया तुम्हीं तो हो॥ कौन पार पा सकै गतीं को सृष्टि रचैया तुम्हीं तो हो। मो०॥ निर-धन के धन निरबंशिन के बंश चलैया तुम्हीं तो हो। हे करुणा ऽकर दीन संकट कटैया तुम्हीं तो हो। रानी सेवी काम उबारी मोह बनैया तुम्हीं तो हो॥ सुख बालिन के हाथ में बास दिवैया तुम्हीं तो हो। इन्द्र गणेश चिरंजी के सिधिकाज करैया तुम्हीं तो हो। मो दुखियाको धार से०॥१८

जब व काब का

दो०—कर २ करुणा रोवती. रानी बड़ी सुनीति।
इस प्रकार दुख भोगते, चन्द रोज गए बीति

चौ०—चन्द रोज गएबीतिबहावत रहीनारि अँसुवन को। एक दिवसकी बात गए राजा शिकार खेलन को॥ अर्द्ध राति होगई बनी में लौट राज भवनको॥ भूपति आइ नींद बस देखे पहरेदार सबनको॥

दौड़—पाइकर इस अवसरको। बड़ी रानीके घरको॥ गवन जल्दी से कीनो। जा सुनीति के दरवाजे पर राजा हेला दीनों॥१६

तुवाब उत्तनपाद का -ना सुनीत को जगाना

दो०—सोती हो तो जागपड़,जगती हो दे बोल!

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राण प्रिया पंकज मुखी, जल्द किवाड़े खोल॥
बहरतवील–खोलो जल्दी किवार मेरी जान मन
किस लिये देर इतनी लगाई प्रिया। आज मुश्किल
से उस बेवफा वाम के मिली चुंगलसे मुझकोरिहाई
प्रिया॥ कुछ हुई महर उस सच्चिदानन्दकी जोछः
मासी उसे नींद आई प्रिया तेरे दुखकी सुनूं अपने
दुखकी कहूंइस सबब तुझको सोती जगाई प्रिया२०

जवाब राणी का

दोहा–सुनत बचन निज पतीको, लियो बोलपहचान
खोल किवाडें कहे यों, करि आदर सन्मान २१

जवाब रानी का नीत [illegible]

दोहा–आज हुआ दीखे मुझे, सीधा श्री करतार।
कम नसीब कम्बख्त घर, जो आए सरकार॥
छंद–आओ श्रीमहाराज बस खातिर से हूं लाचा
र में। भगवान ने सब तौर सेली कर रखी हू ख्वार
में॥ मुझको तो ब्रह्मा ने लिखे जो सरभर तकदीर
में। क्या प्राणपति सेवा करूं होती हूं दिल दलगी
र में॥ एक रोज़ वह था पलँग पचरङ्ग पर तुम्हें बै
ठालती। अफसोस सद अफसोस अब टूटा खटो
ला डालती॥ करिये इसीपर गुजर साहि दुख आज
रैनि बिताइये। भरतार चरण दबाइ दासी को सफल कर
जाइये॥ आराम के बदले पिया आफत उठानी हैयहां॥
रानी तो है रणवास में कौवा उड़ानी है यहां॥२२॥

जवाब कोल का

दोहा–सुनत बचन महाराजके, भरि आयो दृगनीर।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कंठ लगाकर प्रेम से, दयो प्रियाको धीर ॥

कबित्त–काम मदमाती नारि पीतम सँगाती पाइ उर लगावे उर अति हरषात है। रतिरस प्यासी शुभ बिज्जु की बदासी हरक पचकी लता सी हँस गरे लिपटात है। एक बाजि द्वै बाजि बजन तीन लागी कैन मोइ तेरो घट घोर शोर ना सुहात है। एरे घड़ियाली बजमार नेक मौन साधि मोगरी न मारमो गरीबिनी की रात है ॥

छंद–दम्पति परस्पर प्रेमकी बातें करें हरषाइ के। मनमथ के मदमें मस्तहो मनमें रहे सुख पाइके। कीन्ही कृपा श्रीपति उसी निशि गर्भ रानी को रह्यो। नृप भोर उठि कीनो गवन लघु नारि ग्रह पहुंचत भयो २३

जबाब कराब लई रानी का उत्तमपाद का

दो०–प्रियतम कैसें आपके, भये नींद बस नैन।

सकल अंग कुम्हिला रह्यो, कहां बिताई रैन ॥

दादरा ईमन–कैसे बदन मलीन है, महाराजा प्राणपति। आभा शोभा कान्ति नशाई, हुई सकल छबि छीन है ॥ महाराजा० ॥ दीदे दोऊ उनींदे दीखें अंग अंग बलहीन है। महाराजा० ॥ मैं तो रही तड़फती निशि भर, जैसे जल बिन मीन है ॥ महाराजा० ॥ रात रहे तुम पास सौतिके आयो मोइ यक़ीन है ॥ महाराजा प्राणपति. कैसे० ॥ २४ ॥

जबाब उत्तानपाद का रानी से

दोहा–सोई तुमतो रातभर, मुतलक रहा न होश।

तिसपर भी उलटा हमें; लगी लगाने दोष ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौ०—लगी लगाने दोष तुम्हें हम देखा दे २ द्वार । दरवाज़े पर कटी रात गिन २ कें चंदा तारे ॥ जगत न भयौ भोर नींद बस थाके नैन हमारे । खुले कपाट द्वारके बस आए हैं पास तुम्हारे ॥

दौ०—सत्य मानी जानों तुम । न उसके पासगए हम ॥ प्यार तुमपर ही भारो ॥ जबसे त्यागी उसे न तबसे मतलब कछू हमारो ॥ २५

[illegible]

दोहा—विविध भांति समझायकर. रानी को भूपाल ।
जाय कियो दरबार मुनि, आए संध्या काल ॥

छंद—निशामें सुरुचि संग केलिकर नृप उठ गये परभात को । रानी नई को भी गरभ बस रह गया उस रात को ॥ नौ मास पीछे प्रथम रानी बड़ी के जनमो कुंवर । भारी हुई नृप को खुशी जिस दम सुनी सुत की ख़बर ॥

लावनी—उत्तानपाद राजा मन मांहि सिहावे । सुत के उत्सव में बिप्रन द्रव्य लुटावे ॥ महाराज लिये पंडित ज्योतिषी बुलाय । पूछ रह्यो शुभ घड़ी मुहूरत बार २ शिरनाय ॥ इतने में राज भवन से बांदी आई । नई रानी के सुत भयो य खबर सुनाई महाराज भूप सुनि फूलो नहीं समाय । छोटे सुत के घड़ी महूरत भी नृप लिये दिखाय ॥ दस दिवस बाद दशौंन भूप ने कीनों । धरि द्विजन नाम दोऊ लड़कन को दीनों ॥ महाराज बडे को ध्रुव बतलायो है । छोटे को उत्तम कुँवार पंडितन सुनायो है ॥ निज

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बढ़े शशि कला के समान दोउ भय्या ॥ पालन कर तीं अति लाड़ चाव से मय्या ॥ महाराज हुए जब पांच बरस के लाल । करें बाल लीला विचित्र हिल मिल के खेलैं ख्याल ॥ एक दिवस खेल रहे दोनों राज भवन में । लखि बाल चरित राजा प्रसन्न अति मन में ॥ महाराज पास जब दोऊ सुत पहुंचे आय । उत्तम की उंगली पकड़ी नृप ध्रुव लीयो गोद उठाय ॥

दो०। भूप मन आनन्द भारी । रहे दोउन पुचकारी ॥ देख ये छोटी रानी । गुस्सा हो उत्तानपाद से ऐसे बोली बानी ॥ २६

अथ सुरुचि का उत्तानपाद और ध्रुव

दो०। बस २ यों हीं आपसे, होय मेरी तकरार ।
ले रक्खा सुत सौतका, गोदी में सरकार ॥

ठुमरी—देरी करौ मती महाराज गोद से ध्रुवको जल्द उतारौ ॥ तअज्जुब मुझै सख़्त सरकार । मगन हो किसपर करते प्यार । ये उत्तम है आपका कुमार इसे गोदी में लो पुचकारौ ॥ देरी० ॥ खड़ा घरणी मम प्राण अधार । चढ़ा रक्खा गोदी बदकार । जान लीनी मैंने भरतार । सौत से है सम्बन्ध तुम्हारौ ॥ देरी० ॥ अभागे जा मैया के पास । करै मत इस गोदी की आस उत्तर नहीं गाली दऊं पचास । निकल महलन से करि मुख कारौ ॥ देरी० ॥ जनम लेतौ मम कुक्षा आय । तौ चढ़तौ नृप की गोदी जाइ ॥ जनौ सौतिन नें पाप कमाइ । बता कैसे हो राजदुलारौ ॥ देरी करौ मती० ॥

दौड़—पाप सौतिन ने कीनो । जनम तैं जिसके ली

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नों ॥ पुत्र बड भागी मेरा । उराम बैठ गोद्‌का नहीं
पाजना तेरा ॥७

जवाब [illegible] का

दोहा॰ऐसे कह झुंझलाय अति, पकड धुरूकी बांह ।
झटक उतारे गोदसे, नृप कुछ बोले नाहिं ॥

चौ॰॰नृप कुछ बोल नाहिं मनहीं मन अपने भए दुखा
री। भर भर हिलकी लट्ठे कुवर रोवे है धुरू अगारी ॥ क्रो
सरोप तब नारि पकेला दया न दया विचारी । ड्योढी
अपनी से बाहर ध्रव दोनों तुरत निकारि ॥

दौड–रोवतो धुरू विचारी । आपने भवन सिधारौ॥
मातलिए कंठ लगायो । जुडै उसास न सुतको तब जन
नी ये बचन सुनायौ ॥१८

जवाब कनीज [illegible] सुरुच [illegible]

दोहा–मो दुखिया के खिलौना, छौना प्राण अधार
किन मारो तोइ कहा भयो.रोवै आंसू डार ॥

चौ॰–रोवे आंसूडार बता क्यों मेरे कुँवर कन्हय्या ।
रोवत २ लाल बदन परभयो तुम्हारो ढय्या॥कछू पिता
नें कही कही अथवा कुछ छोटी भय्या । या लड पडे खेल
खेलत में दोनों भय्या भय्या ॥

दौड–लाड्ले प्राण पियारे। भेद सब मोइ बतारे ॥ रोव
तो कैसे आयौ । कै काई गेर निपूते हत्यारे नें तोइ स-
तायौ ॥ १६ ॥

जवाब ध्रव की माता कनीज [illegible]

दोहा॰माता मेरी सब तरह, है ओछी तक़दीर ।
कर्म हीन कम्बख़्त मैं, कैसें धारूं धीर ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कलङ्गड़ा—कैसे धीर धरूं महतारी ॥ उत्तम लेल न २ मोकूं महलन गयो भिखारी । आइ पिताने मोइ मोद से मात गोद लीनो बैठारी । कैसे०॥उत्तम की तो उंगली पकरी रह दाउन पुचकारी । लाल २ कर दोनों आंखें मौसी उठी क्रोध करि भारी॥कैसे० बोली या गोदी में बैठे उत्तम कुँवर हजारी । तू शठ न या गोद के लायक उतर जल्द मत करै अबारी॥ कैसे०॥ले तो जन्म धुरू तू आकर जो कहीं कोखि हमारी । राज पाट गादी गद्दी को तो मूरखहो तौ अधिकारी ॥कैसे०॥ अस कहि झटकि उतार गोद से दयो न दया बिचारी । पुनि धक्का देकर महलन से दोनों मोइ तुरन्त निकारी ॥ कैसे धीर धरूं०॥२॥

जवाब सुनीती माता का ध्रुव से

दोहा॥बेटा छौना लाडले, मतहो दिल दलगीर । सुन २ तेरे रुदनको, दृगसे बरसे नीर ॥

लावनी—कर सबर मती गेवे मम कुँवर हजारी । तोइ बिकल देखकर छाती फटै हमारी ॥ मेरे लाल बचन सुनि आयो सोच अपार । अनुचित उचित सौति नहीं सोची क्या मन लई बिचार । या दुखमें मेरो कोई नहीं सँहाती । बस नहीं करूं क्या भवक रही है छाती ॥ मेरे लाल किये थे जप तप पुन्य महान । जैसे तैसे चौथे पन पायौ तू जीवन प्रान ॥ जो चन्द रोज़ पहले जन्मते कन्हया । क्यों काग बिड़ारिन होती तेरी मय्या ॥ मेरे लाल सेरभरजौ क्यों मिलते मोइ । काहेको ताने काइंके सुनने पड़

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से तोड़ ॥ कोई पाप उदय पुरबले को है आयो। जो तेरे बापको दूजो ब्याह करायो ॥ मेरे लाल करम गति टरे नहीं टारी। वो पटरानी काग उडानी तेरी महतारी ॥ २१ ॥

दो०—सौति बैरिन हत्यारी। कराई मेरी ख़्वारी ॥ नीर क्यों बरसावे है। कोई कुछ ना कहै समय खोटो दुख कहवावे है ॥ २१

[illegible] ध्रुव [illegible] सुनीती मात। [illegible]

बहर तवील॰ऐरी मैया न मुझको तसल्ली कहै बोली गोली सी मौसीकी लागी जिगर। बड़ी सख़्ती से झटका मुझे गोद से बता कैसे करूं आज दिल में सबर ॥ ऐसे जीने से मरना ही बहतर मेरा मौसीकह नेमें बाकी न रक्खी कसर। ओछा किस्मत में लाए लिखाके हमीं है सभी तौर भगवतकी टेढ़ी नज़र २२

[illegible] सुनीता [illegible] ध्रुव [illegible]

बहरतवील॰ऐरे छैया कन्हय। तू रोवै मती तेरी म य्या को होता सबरही नहीं। कौन मेटे लिखी जो विधाता करम हेगी इसका किसी की खबरही नहीं। पार गोली सी बोली हुई सौति की बदी करने में र क्खी कसरही नहीं। जिसने पैदा किया सुत उसे यादकर करो बिलकुल जिगर में फ़िकर ही नहीं ॥

[illegible] ध्रुव का सुनीता मात से

बहरतवील॰ऐरी माता बता याद किसको करूं कोई दुनिया में दीखे हमारा नहीं। जब कि मौसी ने झटका मुझे गोद से तो पिता भी तरस कुछ विचारा नहीं ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का सगे बापकी याद कानूनको करके आंखों से आंसू की धारा नहीं। मैं मरूंगा कहारी मरने मार के मैया जीने का मेरा सहारा नहीं ॥२४

कथाब सुनाती माता धरू को

बहरतवील—ऐरे बेटा कन्हया मेरे लाडले तेरी आंखों से आंसूकी धारा कुँवर। जिसने दीना है दुख वही देवैगा सुख मुझे उसका ही भारी सहारा कुँवर ॥ चाहे माता तजै चाहे त्यागै पिता चाहे दे छोड़ संसार सारा कुँवर। बेटा जपरामको बेटा जप रामको वोही संकट हरैगा तुम्हारा कुँवर ॥२५

कथाब धरू का माता सुनाता से

दोहा—तू कहती हरबार ये; राम २ जपतात।
कौन राम कहां पर रहे, जिस को सुमिरूं मात ॥

सवैया—जान अजान नदान महा मममात वृथा सुत को बहकावै। मैं मनराम जपूंगो जभी कहां राम रहै यह मोइ बतावै। रंग कहा वाको रूप कहा वो करै है कहा अरु का विधि पावै। चिन्ह कहा है कितक बड़ो करि भिन्न मती अब देर लगावै ॥२६

कथाब का माता धरू से

दोहा—नभ पताल मृ चतुर्दश, भुवन प्रकाशक राम।
जड़ चेतन पक्षी पशु, सबमें व्यापक राम ॥

सवैया—व्यापक राम चराचर में दुख संकट भक्तन केर हरे है। रूप विराट तोऊ अपने जन हेत अनेकन रूप धरे है चारि भुजान में पंकज चक्र सशंख गदा बनमाल गरे है ग्राम पहाड़ उजाड़ बनी सब ठांम में राम स-

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रो रो मरूंगी। कहे मात जो मां करो लाल क्यों ना॥ मेरे०॥ तमन्ना मेरीभी करो राम पूरी । लऊं देख आंखों तेरा व्याह गौना ॥ मेरे०॥ यहां पै रहोगे तौ आराम पाओ। बनी में पड़े घास पत्तों पे सौना। मेरे०॥ किसी जीव जन्तू के आहार होगे । मझे कर जीते लड़ते खिलौना ॥ मेरे०॥ खड़ा हाथ जोड़ूं करूं बीनती मैं । सपूती से मोकूं निपूती करो ना। मेरे पूत छौना मेरे पूत छौना ॥ ४२

[illegible]

दो०—मुझे ग्राम और धामका, नहीं सुहाता नाम ।
अबतौ मौं नीको लगै, नाम राम श्रीराम ॥

गजल—राम के बस नामपर मैं तो दिवाना होचुका राम के ही नाम का मुझको फ़िसाना हो चुका ॥ व्याह गौने बाद फिर मौका मिले या ना मिले। इस घड़ी मौसी के ताने का बहाना हो चुका ॥ मात विमाता पिता भ्राता धाम धन धरणी को तजा राम राम रामही में लौ लगाना हो चुका ॥ फेंक कर पोशाक ज़ेवर रंग लिये भगवा बसन। रुकनहीं सक्ता मेरा सन्तों का बाना हो चुका ॥ मात चाहे प्राण तजि चाहे जो चहे सन्तोष कर ध्रुव कुँवर तेरा नहीं अबतो बिगाना हो चुका ॥ राम का मैं लाड लाहूंराम मेरा मातु पितु। कर बिदा सबतोर समझा ना बुझाना हो चुका। रामको लू देख आंखों मेंकहूं तब अन्नजल। राम के दरशन बिना पीना व खाना होचुका ॥ यातो परिपूरण प्रतिज्ञा हो हमारी होयगी

या ख़सम दुनियां से मेरा आबदाना हो चुका ॥४४॥

कथन माता का स्वामी से

दो०—दीवाना ही हो चुका, राम नाम पर तात।
बन शरणागत उसीका, वही तेरा पितु मात॥

छन्द—माता पिता तेरा वही लेता रहे हरदम ख़बर। हज़्ज़र शिला पर दिये पर मैंने तो करलीनों सबर। आशीष ये मुखभर दऊं वन में रहो आराम से। मम कोखकी लज्जा रहे तू जाय मिल श्रीराम से॥ कहना मेरे भोगाय कपिला की विनय सुन लीजियो। सालिपुरी को आइ कर जल्दी सपूती कीजियो॥ हे दयानिधि मेरो पुत्र अबही अज्ञान अबोध है। रहियो सहायक सदा ये बालक तुम्हारी गोद है॥

ब०त०—मेरे बालक के मालिक हो स्वामी तुम्हीं हो चुका ये तुम्हीं पै दिवाना प्रभू। मल विभूती बदन पीत पहने बसन कर चला साधु सन्तों का बाना प्रभू। जो प्रबल प्रण किया मेरे प्रिय पुत्र ने सो पड़ेगा तुम्हें ही निभाना प्रभु। हे प्रणत पाल पूरण परब्रह्म तुम भक्तों को झांका चतुर्भुज दिखाना प्रभु॥४५॥

कथन श्रवण का सुनाते में

ब०त०—तेरी आशीष मुझको फली मात हो अब अरज य अख़ीरी सुनाता हूं मैं। कुल ख़ता माफ़ करके बकस दूध दे तेरे चरणों में मस्तक नवाता हूं मैं॥ बस करूं दंडवत अन्त की माँ तुझे, सरको धरके हथेली पे जाता हूं मैं। या गमाता हूं जीको या मिल राम से तुझ आके सपूती बनाता हूं मैं॥४६

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हाय करै है ॥ २७ ॥

[illegible]

दोहा—जैसा तू मुख से कहै, जो ऐसाही राम ।
तो अब इस संसार में, नहीं किसीसे काम ॥

चौ०—नहीं किसीसे काम राम का नाम जपेंगे मनमें ।
राज साज बिसराय वस्त्र भगवां पहनेंगे तन में ॥
ग्राम धाम सब छोड जाय विश्राम करेंगे बन में ।
लीन होंयगे परब्रह्म पुरुषोत्तम राम भजन में ॥

कव्वाली—राम से मिलन जाऊंगा ये ये दिल समाई है । कथा श्रीरामकी सुनकर लहर तबियत पै आई है ॥ पिता माता भ्राता अब नहीं कोई हमारा है । हमारा रामही सब कुछ कि जिसमें लौ लगाई है ॥ कुटम परिवार धन बेकार थोथा जाल सब जननी । जपे श्रीरामको मनसे होय जग में बडाई है ॥ मोह बिसराय दे सुत से रहूं जिंदा मिलूं आके । नवाऊं शीश पद पंकज मेरी करदे बिदाई है ॥

दो०—राम श्रीराम जपेंगे । निशि दिवस बिपन तपेंगे कभी तो मिलें रामहै । जबतक मिलेन राम हमेंख ना पीना हराम है ॥ २८

[illegible]

दोहा—मो दुखिया के दूध मुख, बनकी ठान न ठान ।
ललन बरस छोना तेरी, अभी उमर नादान ॥

ल,वनी—सुत मान कही मैया तेरी समझावे । बन २ डोलै भटकत न राम को पावै ॥ तज लाल पाल हटको मत मोइ रुलावे । घट २ बासी है राम

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कहां तू जावे ॥ मेरे कौन मगेगो मुझको [illegible] ।
सिंह भालु मर्कट बनमें कोई खाइ लेगो [illegible] ॥३९

जवाब ध्रुव का माता से

ला०—सोचो समझो मेया कहां ज्ञान तुम्हारो । हो
ज्ञानवान भूले मोइ अचरज भारो ॥ तू कहती है सब
जगह राम रखवारो । तो सिंह और ह क्या कर सके ह
मारो ॥ मेरी मात लिखी विधि ने जब तक की स्वास
तब तक कोई न मारन हारो तू क्यों होइ उदास ॥४०

अथ माता का ध्रुव से

ला—मतहोय दृगनसे न्यारो कुँवर कन्हय्या । ऐसे त
डरूंगी यों बछरा बिन गय्या ॥ ऊजर दीखेगो भवन
तो बिना छैया । निशि दिवस बिलकती रहे तुम्हारी
मैया ॥ मेरे लाल कौन विधि मन समझाऊंगी । तेरे
बिन ध्रुव कुँवर कौन से २ गाजाऊंगी ॥४१

जवाब ध्रुव का माता से

ला—ना कोई किसी का पिता न कोई माता । ले२
प्रणाम दे हुआ तेरा सुत जाता ॥ जो सच्चा जग
का मात पिता कहाता।उससे अबतो जुड़ गयाहमारा
नाता ॥ मेरी मात रमगया रूम २ में राम । बिना राम
इस ननीराम को नहीं कहीं आराम ॥४२॥

जवाब सुनीति का ध्रुव से

दोहा—कुँवर बन निकट जानको, कहा तुम्हारो काम ।
सुबह शाम नित प्रति यहीं, घर बैठे जपराम ॥
गजल—मेरे पूत छौना मेरे पूत छौना । जपो राम
श्रीराम हाथै खिलौना ॥ मेरे०॥ तुम्हारे बिना दर्श

जी जानेदो रामसे; मिलने मुझे जरूर ॥
चौ०--जाऊं दिलू जरूर रामसे क्यों लौटामन आए।
भोले बन आंसू ढलकामन लोभ दिखामन आए॥
काट नाक वाहवा दुशाला हमें उढामन आए।
धक्के मार निकाल फेर महाराज मनामन आए॥

पंजाबी टप्पा--क्यों चिकनी चुपड़ी बातें पिताजी बड़ी करते हो साडे नाल। जब हमको गोद से उतारा तब न पिता कुछ आप बिचारा। छोड़ो २ डगर हमारा॥ हमें न चहिये राज तुम्हारा। कैसी कैसा कैसी कैसी बातें पिताजी बड़ी करते हो साडे नाल। क्यों चिकनी चुपड़ी बातें पिताजी बड़ी करते हो साडे नाल॥ ५७॥

जवाब उतानपद का

ब०त०लल लड़कपन व नादानपन बानदट हो सही मेरे नैनोंसे न्यारा कँवर। कुछ बरस पांच की है तुम्हारी उमर कैसे बनमें करोगे गुजारा कँवर॥ को खिलावै पिलावै और ले गोदमें कौन दुख सुख सुनेगा तुम्हारा कुँवर। कर भवनका गमन भूल जाओ न बन मानो २ ये कहना हमारा कुँवर॥५८॥

जवाब ध्रुव का

बहरतवील--जब जगतके पिता का सहारा लिया तबतकें क्यों तुम्हारा सहारा पिता। वोही पालन करैं वोही ले गोदमें वोही दुखसुख सुनें सब हमारा पिता। जाओ २ जी जाओ तुम्हें क्या पडी चाहें जैसे करेंगे गुजारा पिता। न मैं बेटा रहा आपका आजसे टूटा नाता

हमारा तुम्हारा पिता ॥५६॥

श्र॰ बाप का

दो॰—कठिन पैज ध्रुवकी निरखि, लौट चले भूपाल।
शीस नाइ तब अवधको, कहै सुनीती लाल ॥

कुंवार ध्रुव का अवधपुर को दण्डवत करना

दो॰—अब तक तोमें अन्नजल, किया अजुध्याधाम।
अब दाना पानी उठा, लीजो मेरी प्रणाम ॥

बहरतवील—अबकरूं हूं अखीरी तुम्हे दंडवत सदा सूः वस बसो हे पिताके नगर। मेरे ऊपर महरकी नज़र रखियो छोड़ तुमको लऊंमैं बनोकी डगर। सेरको मैं सवरकर करैथा गुजर कुछ नहीं पेश होनीसे जाती मगर। अबतौ जाते कमाते हैं लौं रामसे फिरकभी आमें हो आबदाना अगर ॥६१

कबीर बाद का

दो॰—सगुण सच्चिदानन्दके, चरण कमल लयलीन।
अवधपुरीको नाइ शिर, ध्रुव बनको चलदीन॥

चौ॰—ध्रुवबनको चलदीन रामक रंगमें रचा हुआहै
रामानन्दी तिलक भाल के ऊपर लगा हुआ है ॥
पीत बसन गल रुद्राऽक्ष का कंठा पड़ा हुआ है।
सुन्दर सुघड़ अनूप रूप साधू का बना हुआ है ॥

दो॰—लगी लौ राम भजनमें चला जा रहा बिपन में ॥ वही विज्ञान विशारद। अकस्मात बीणाकरली ये आ पहुंचे मुनि नारद ॥६२

अ॰ नारदमुनी का ध्रुव से

दोहा—क्यों आया बन विकटमें, ऐ बच्चे नादान !

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[illegible]

दो०-ऐसे करि बिनती बहुरि, मात चरण शिरनाइ।
माया मोह बिसारि ध्रुव, चले [illegible] मनाइ॥

छंद-गणपतिको कर वंदन चले ध्रुव [illegible] के रंगमें मगन। हित चित [illegible] वचन से भगवान पद लागी लगन। चरचा अवधपुर में भई पहुँची खबर रणवास में रानी नई कहने लगी बुलवाइ नृप को पासमें ।४७

[illegible] रानी नई [illegible] का उत्तानपाद से

दो०-[illegible] सौतिया डाह बस, बिसरायो सब ज्ञान
[illegible] ध्रुव का पिया, किया मैंने अपमान

ब०त०-मैंने अपमान कीया ध्रुव छौन का मुझे पातक लगा ये छुटाओ पिया। होके साधु वो जाता है मैंने सुना जल्दी जाओ पिया. जल्दी जाओ पिया। जो वो मांगे सो दीजे न कीजे उजर उसे सम[झा] बुझा करके लाओ पिया। जिस तरह से बने उसत[र]ह ले ललन को मनाओ मनाओ मनाओ पिया॥

नृप को।

दो०-सुनकर रानीके बचन, चले नृपति अकुलाय।
पहुंच ध्रुवके पास यों कहन लगे समझाय ४९

जवाब उत्तानपाद का ध्रुव से

दो०-बेटा छौना लाड़ले, कुँवर पुत्र सुत तात।
कुल दीपक सुखमा सदन, हमें छोड़ कहां जात

कव्वाली-ऐ मेरे लख्ते जिगर आहि किधर जाते हो। राहतेजान पिसर आहि किधर जाते हो ॥५०

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जबाब ध्रुव का

क०—नहीं मालूम है हमको कि किधर जाते हैं। जि-धर मिलजाय हमें राम उधर जाते हैं॥ ५१

जबाब उत्तानपाद का

क०—राम है लापता उसका न ठिकाना कोई। बे खबर घर से निकर आहि किधर जाते हो॥ ५२

जबाब ध्रुव का

क०—भेष दरवेश किये कोह बियां में फिरें। कहींपर भी तो मिले राम जिधर जाते हैं॥ ५३॥

जबाब उत्तानपाद का

क०—जोगके योग नहीं कम समझो नादांहो। रहो महलों में कुंवर आहि किधर जाते हो॥ ५४

जबाब ध्रुव का

क०—रामके रंगमें रंगे रंग न चढ़ैगा दूजा। रखना अपनी इनायत की नज़र जाते हैं॥ ५५॥

जबाब उत्तानपाद का

दो०—आंखों के तारे मेरे, नहो नैनसे दूर।
तू राज़ी जिस तौरहो, वही मुझै मंजूर॥

छंद—मेरे बुढापे की तरफ़ मेरे ललन टुक हेरले। जो के बदल गोधूम तू एक सेर के दो सेरले। इस परभी हो नाराज़तो एक गांवले दो गामले॥ जोराज चाहै राजदूं नाहींनहीं बेटा मेरा मतजा कहीं मतजा कहीं मतजा कहीं बेटा मेरे॥ ५६

जबाब ध्रुव का

दो०—मेरी ही राजी तुम्हें, करनी है मंजूर।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जा जा जा घर लौटजा,कही हमारी मान ॥
चौ—कही हमारी मान यहां कहां मरने आयालड़के
लौट अभी बस लौट अभी जाना मत आगे बढ़के॥
महा भयानक झारखंड जावे आफ़त में पड़के।
सिंह आदि बन जीव कोई भक्षण कर लेइ पकड़के।
दौ—नाम अपना उचारो। को माता पिता तु-
म्हारो॥ मेरे ये अचरज मनमें। जिन्ह चक्रवर्ती के
ले रे फिर क्यों बिचरे बन में ॥६१

ज० ध्रुव का नारदमुनी को

दो—परःब्रह्म परमात्मा, असल मेरा पितु मात।
प्रगट लोक पितु मातका, कहूं नाम प्रख्यात ॥
कव्वाली—पिता उत्तानपाद सबकी हमारा है।
सुनीती मातकी कुक्षा से जन्म धारा है॥ मुझे म-
हाराज सभी ध्रुव कुँवार कहते हैं। विमाता नेकिया
अपमान मेरा भारहै॥ उसी अपमानसे तज अपने
पिता माता को। पिता श्रीरामपर इस जानको नि
सारा है॥ उसी को खोजने निकला हूं विकट जं
गल में। रामका नामही प्राणों से मुझे प्यारा है।
कहीं तो पाइगा उस्ताद मुझे इन्दरमन। कि मुझ
नादान ने जिसका लिया सहारा है॥६४

जवाब न:रदमन का

क०—अरे नादान बचा किसने तू बहकाया है।
कालको शीश पर अपने बिठाके लाया है। सैकड़ों
मरगए ऋषि मुनि जती खोजत २। किसी न रामको
लेकिन कहीं पाया है॥ शर चोंते वगैरह से नहीं तू

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बच सका। कजा की बन गिजा मरने क्यों यहां आया है। लौट घर चल न रे माता पिता को समझा दूं। राम मिलना नहीं उसकी अपार माया है ॥६५

[illegible]

कल्दारानी—आप किस वास्ते दहशत मुझे दिखाते हो। राम के रंग में रंग उनको भी बहकाते हो॥ लिखा विधिने मेरा मरना जो शेर चीतों से। आपक्या डेगें बचा जो मुझे समझाते हो॥ नतीजा कुछ नहीं महाराज थोथी बातों में। राम मिलने का न ये वक्त था क्यों बताते हो॥ रामसे बिन मिले हरगिज न मैंघर जाने का॥माफ करिये हमें जाओ जहांको जाते हो॥ हमें मत छेड़िये हम रामके दीवाने हैं।सुहाते हमको न जो आप गीत गाते हो॥६६॥

[illegible]

दो०—जंगल झाड़ी भयानक, बनी पहाड़ तमाम।
खोजत २ जाय मर, कहीं न मिलना राम॥

ब०त०—ना मिले राम ऐसें तुझे बालका क्यों मेरी बात पै ख्याल लाता नहीं। जो करे भक्ति झांकी उसी को मिलै विना भक्ति दरश कोई पाता नहीं॥उस परब्रह्म पुरुषोत्तम की गती जान सक्ते हैं शंकर विधाता नहीं। कर किसीको गुरू जी मिले रामसेबिन गुरू के किये ज्ञान आता नहीं॥६७

[illegible]

कहरनबीर—अब तुम्हें छोड़ किसको बनाऊं गुरू दे गुरू मंत्र चेला बनाओ मुनी।सब किया भक्ति तपकी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व जप योगकी कर कृपा दृष्टि मुझको बताओ मुनीश ।
मेरा अज्ञान हर ज्ञान उपदेश दो सुनों देरी न देरी ल
गाओ मुनी । सच्चिदानन्द पूरण परःब्रह्मसे बस मि
लाओ मिलाओ मिलाओ मुनी ॥६८

[illegible] का

दो०—जपतप भक्ती योगकी. सुनले क्रिया तमाम ।
सबसे पहले सीख सुत. साधन प्राणायाम ॥

चौ०—साधन प्राणायाम करो सब मनकी त्यागि क-
लपना । जमुना तीर मधपुरी में एक टीला उसपर तप
ना ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय मंत्रको जपना ।
भूख पियाशादिक हरपावे बेटा मती डरपना ॥

दो०—इंद्र अप्सरा पठावै । तुझे छलनेको आवै ॥
समाधी मार्गेरहियो । चितको मती डिगैयो । तु निश्चय
मिलेरामसे । सबजगमें विदय । तहोय ध्रुवटीला सेरेनामसे

[illegible] का

दो०—नारदसे ले दीक्षा, तनक न करी अवार ।
करि बिनती पदनाइ शिर, श्री ध्रुव राज कुँवार ॥

चौ० श्री ध्रुवराजकुँवार पाइ शाशनचाडा धारीका ।
जाता चला नाम जपता श्रीराम निर्विकारीका । चलत
चलत मथुरा पहुंचा छीना मुनीत नारीका । लगा तीर
जमुना के आसन बाल ब्रह्मचारी का ॥

क०—इधर रो २ सुनीती मा हुई नैना बिहीना है ।
उधर ध्रुव चित्त श्री भगवान के चरणों में दीना है ॥
बिना आहार निर्जल पवनके आहार के आश्रय ।
रहै निर्भय निडर श्रीराम जगदाधार के आश्रय ॥
समाधी साधि आसन मार होकर मौन तपता है ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चढ़ा ब्रह्माण्ड प्राणायाम मनमें जाप अपना है ॥
हुई मुद्दत भजन करते न चित अपना डिगाया है ।
तपस्या से दिनों दिन तेज हो मुखका सवाया है ॥
तनक बालक ने ऐसा उग्र तपकर तन तपाया है ।
कि डोला इन्द्र का आसन अमरपुर थर थराया है ॥

दो०-इन्द्र निज दुक्ख निवारने । परी भेजी तप टारन ॥ रची उन आकर माया । ऋतु बसन्त दरसाय ध्रुव पर इश्क जाल फैलाया ॥७०

[illegible]

दो०-शम्स कमर गंधे दहन, ऐ महबूब जवान ।
तेरे हुस्न जमाल पर; हुई सनम कुरबान ॥

खमसा-हां काहे कारन कंचन काया कानन माहिं तपावत है । जो मैं कहती हूं मेरे कहने पै इनकार करो । किस लिये नौ जवानी जोग में बरबाद करो ॥ गले लग लिपट जाओ जग दिलशाद । बताऊंगी मज़ा ऐसा उमर भर याद करो । हां जपतप में वो मज़ा नहीं जो काम केलि में आवत है । हां काहे०॥ स्वर्ग ओर मोह को तकलीफ ये उठाता है । खोल आंखें ज़रा देख स्वर्ग नज़र आता है ॥ मुक्ति मारग भी तेरे सामने दिखाता है । ज़रासी देर में भव पार हुआ जाता है । हां लग २ छतियां हस २ बतियां कर क्यों समय गमावत है ॥ हां काहे० ॥ विधाता लोक व कैलाश परमधाम सबी । हमारे पासही रामहैं मारग सबी ॥ किस लिए सहरहा वारिश व शीतघाम ॥ मुहब्बत मुझसे कर पूरनहों तेरे काम सबी ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हां यवन अप्सरा स्वर्ग भवन है आवागवन छुटावत है हां काहे०॥ जल्द उठ चल तेरे लेने के तईं आई हूं। देवताओं ने मुझे स्वर्ग से पठाई हूं। तरस करले तेरी उलफतकी सताई हूं॥ हां जो कलपावत कामवती कों सो न कभी कलपावत है॥ हां काहे कारन कंचन काया कानन माहिं तपावत है॥७१

[illegible] का दूष।

धुन थियेटर—उठो सैयां लऊं मैं बलैयां गले में डार बैयां पड़ूँ मैं पैयां पैयां॥ तन पर ये काम करत घात। हिल मिलके पोढ सनम साथ॥ तू प्यारा मैं प्यारी तू प्यारा मैं प्यारी हां॥ उठो सैयां०॥ जप तप में खाक ना बिसात। वस्लत से होती है निजात॥ ऐ प्यारे बलिहारी। ऐ प्यारे बलिहारी॥ हां उठो सैयां लऊं मैं बलैयां गले में डार बैयां पड़ूँ मैं पैयां पैयाँ॥७२

[illegible] का

दो०—चित न डिगो ध्रुवको परी, कीने जतन अनेक
तबतक ढोले से निकस, भूत आगया एक॥७३

[illegible] भूत [illegible] कों डराना

धुन थियेटर—उठजा २ उठजा २ उठजा लड़के तू नादान। जगह हमारी पे क्यों आसन उल्लू तैंनें लगाया आन। नाम हमारा शेख दरिद्री मूछ मरोरा मोरा तान॥ कैई कल्प गुजर गए मुझको रहते टीले के दरम्यान। बालक बूढे दुबले मोटे हट्टे कट्टे पट्ठे ज्वान दो २ सौ का करूं कलेऊ चाहे जैसे हों इन्सान॥सद

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मल डाँगर मक्खी मच्छर पिस्सू मेरे चबैना आन ।
उठजा०॥ हाथी घोड़ा साबित निगलूं काटूं कुम्भ
करण के कान । चौपायों में सिरफ चार पाई असछूटा
गई भगवान ॥ जलचर नभचर तक नहिं छोड़ूं ऐसा
बिकट बली शैतान । मैं समन्दर को पी जाऊं देख
अगस्त हुआ हैरान ॥ हंड कमंडल उठा अभी नहीं
खोदूं जगसे नाम निशान ॥ उठजा २ उठजा २ उठजा
ऐ लड़के नादान ॥ ७४

जवाब [illegible]

दोहा-परी भूत आदिक अमित, हुंइ उपस्थित व्याधि
मगरश्री ध्रुव कुँवर की, डिगी न तनक समाधि॥

छंद-नहिं डिगी ध्रुवकी समाधी भगवान राखी
टेक है । भूताऽदि की अपसरान की माया चली नहिं
एक है ॥ जबपरी नें कोई तरह आती न देखी पेश
है । तब हारि उन ध्रुव मातको धारण कियो निज
भेष है ॥ उत इन्द्रने आंधी चला ओलेनकी बरषा
करी । जाड़े के मारें सकल जीवन की गई वँध थरथरी
ता समय पर वह परी जो रानी सुनीती बनरही। ध्रुव
ध्यान टारन हेतयों तहांपर रुदन करती भई ॥ ७५

जवाब परी का ध्रुव माता के भेष में

दो०। कुंवर तुम्हारे पिताने, मुझको दिया निकाल ।
ललन खोल लोचन निरख, महतारी को हाल॥

बहर तवील॥ एकतो पतिने तजी मेरा अपमानकर
दूजे जंगल में आ ये मुसीवत पड़ी । सरपे गोले
से ओले भड़ाभड़ पड़ें इस घड़ी दुर्दिशा है हमारी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पड़ी ॥ मारे सरदी के तनमें बंधी कपकपी हा मेरे जौन में हूं दुखारी पड़ी । तू ज़रा भी न देखे पलक खोलकर सब मुहब्बत तजी। कारी छाती कढ़ी॥७६

[illegible]

दो०—पचि २ हारीं अपसरा. कर २ कोटि उपाय ।
इन्द्रलोक को हार हिय,कीनों गवन लजाय ॥

चौ० ७परीं गईं धूवराज मगन है इतमें राम म नमें ॐ नमो भगवते बासुदेवाय जपें है मनमें॥दिनपरदिन तप तेज बढै खलबलो भयी त्रिभुवनमें।भचगयोहाहाकार महा तेतीसकोटि देवन में ॥

छ—सब सुरन मिलि गी लोकमें जा ली शरण भगवानकी । स्तुति करी हा दीन आरत बिरनुकृपानिधानकी । व्याकुल निरख सब देवतन को ना बिलम प्रभुने कियो । धरकर चतुर्भुज रूप आ मधुवन दरश धूवको दियो ।७७

[illegible]

दो०—पूरण तप तेरा हुआ.श्री धूवराज कुँवार ।
मांग २ वर मांग वर, ध्यान समाधी टार ॥

[illegible]

दो०—सुनत मृदु बचन धव तुरत,देखा नैन उघार ।
कर दरशन भगवानकी, स्तुति रहा उचार ॥

[illegible]

दो० अलख अगोचर अजित अज,अच्युत आनदकंद शान्ति रूप सुखमा सदन, सगुण सच्चिदाऽनन्द॥
छद भुजङ्ग प्रयात॥नमो सच्चिदाऽनन्द निर्गुण रूपं । विभु व्यापक ब्रह्मवेदः स्वरूपं ॥ नवाम्भोज

नेत्र नमो निर्विकारी । रमाकेलि पात्रं खरारी मुरारी। नमो शंख चक्रं गदा पद्मधारी । गले माल आरण्य सन्ताप हारी ॥ स्वयम्भू सुस्वछन्द सृष्टिरचंजन्ता । भरन्ता हरन्ता अनादी अनन्ता ॥ दिये दर्श श्रीवत्स आनन्द कन्दा । कटै क्लेश फन्दा भये हैं अनन्दा नथाराम मांगे यही हस्त जोरी । मिलै भक्ति तोरी। मिलै भक्ति तोरी ॥ ८०

विष्णु का ध्रुव को बरदान देना।

दो०—अमरनाम और अचल पद, अविचल दीनों राज
दई भक्ति अन पावनी, ध्रुव कुंवार तोइ आज॥

छंद—श्री ध्रुव कुंवार जा अवधपुर में चक्रवर्ती राज कर । पालौ प्रजाको प्रीति यत मेरे वचनको हृदय धर ॥ हरि मातको दुख होगई अंधी तुम्हारे शोक में । कर राज छात्तिस सहस सम्वत फेर आ मम लोक में॥ आवा गवनसे हो रहित अमरावती सुख पाइये। केजू तुम्हें अब इन्द्र के संग सुत अवधपुर जाइये ॥ ८१

जवाब काव्य का

दो०—दे दर्शन ध्रुवको भए, श्रीपति अन्तर्ध्यान ।
सुरपति दीनो भेजकर, कृपा सिंध भगवान ॥

छन्द॰ सुरपति सुरनकी सेन लै मधुवन में पहुँचे आइकर । ध्रुव कुंवर को श्रृङ्गार कीनों राजसी हर-षाइ कर ॥ साधू से करके चक्रवर्ती शीस पर रख ताज को । ऐरापती गज पै चले लै गोदमें ध्रुवराज को ॥ देवन की सैना सङ्ग भारी भीर ये परमानहै। कम्पै कमठ बाराह अहि दिग्गज लगे दहलान है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पहुँचे अजुध्या के निकट जब शोरपुर चहुँदिशिपड़ो उत्तानपाद नृपाल ने समझो कोई बैरी चढ़ो। ले भेट पुरजन सङ्ग ले खातिर मिलन की चल दयो। देखौ श्री ध्रुवराज ने अपनो पिता आवत भयो॥ सहसा उतर गजसे सुनीती के सुअन अकुलाइके। अतिप्रेमबस पुलकित हृदय दण्डोत कीनी धाइकें॥८१

कथन ध्रुव का उत्तानपाद से

दो०—पिता आपको अधमसुत, खलकपूत ध्रुवनाम।
चरण कमलमें डारि शिर, साविनय करे प्रणाम॥

लावनी—दंडवत पिता बेटा कपूत की लीजे। जो ख़ता हुई हो उसे माफ़ कर दीजे॥ मेरे पिता जन्म भर भूलूं ना अहसान। मौसी और आपकी कृपा से मिले मोइ भगवान॥ जो मुझे आप गोदी से नहीं पटकते। मेरे वचन बाण मौसी के नहीं खटकते॥ मेरे पिता न बन जाता ना मिलते राम। ये फल बस आप की कृपा ही का महाराज तमाम॥ दंडवत मेरी मौसी से जाकर कहना। उत्तम भैया पर प्यार पिता कर देना॥ महाराज मेरी जो काग बिड़ारनि माय। भेज दीजियो उसे कृपाकर मुझ सेती मिल जाय॥ नो मास उदर जिसके में किया निवास। उसके दर्शनकी पिता बड़ी अभिलाषा॥ महाराज इन्द्रसनकी है सब बानी। माता के कर्ज़ से उऋण नहीं हो सका प्रानी।८२॥

कथन उत्तानपाद का ध्रुव से

दो०—चौंक पड़ा मैं एक संग, सुनत ध्रुव का नाम।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रूप पुलकावली, छाई अंग तमाम ॥

छं०—पुलिकावली सब अङ्ग छाई कंठ मम गद्गद् भयो । छाती भरी हिलकी बंधी आसू न दृग रोको गयो ॥ आ गोद में बेटा तुझे छाती लगा पुचकार लूं । सुहृत में दीखो चन्द मुख सुत लाड़ले का प्यार लूं ॥ मौसी भी तेरी रात दिन हो विकल पछितात है । रो २ के अन्धी होगई तेरी सुनीती मात है ॥ सब कुटंब विरहाऽनल तेरे में छौन शोकाऽकुल परौ हे दरश मुख पंकज ललन चलकर उन्हें शीतल करौ सब शोक को बिसराय के चलघर धुव हरषाइके । गद्दी तुम्हें बैठाइके मैं हरि जपूं बन जाइके ॥८४

जवाब ध्रुव का

दो०—गोदी गद्दीको पिता, उत्तमको अधिकार ।
मुझको इस संभारसे, माफ करौ सरकार ॥

बहरतवील—गोदी गद्दीका मालिक है उत्तम कुँवर वोही असली तुम्हारा दुलारा पिता । मैं तो हूं कोपा रहानी का सुत, मेरा गद्दीमें क्या है इजारा पिता ॥ हाइ इसी गोद गद्दीपै मौसी ने मैं दकें धक्का महल से निकारा पिता । ऐसी गोदी को और ऐसी गद्दी का बस दूरसे ही प्रणाम हमारा पिता

जवाब उत्तानपाद का

बहर तवील—मतगई गुजरी बातों का करतू गिला रोक आंखों से आंसू की धारा ललन । होनी हाकैरहै है न टाली टलै, चलता इसमें किसीका न चारा ललन । मेरी आंखों के तारे धरम से कहूं मुझे उत्तम से ज्यादे तू प्यारा ललन ॥ मेरे कुल दीपक हैबड़ा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस लिये राज गद्दी का हक़ है तुम्हारा ललन ८६

जब व घरूका

बहर तबील—कुछ सल्हा मामसीसे करी या नहीं या योंही मुझको गद्दी बिठारो पिता। होखफ़ाजिस घड़ी पै तौ हरके तुम्हीं फिर न अनुचित उचित कुछ बिचारो पिता। जो वो चाहैगीसो तुमको करनापड़ै कोई ना बस बस्यावे तुम्हारो पिता। जैसे गार्दोसेपद्ध के उतार मुफ़्तेसे गद्दीसे फिरभी उतारो पिता ८७

[illegible]

बहर सवाल—सतबचन बाणोंसे मुझको घायल करी पहली बातों में अब खाक डालो ललन। दिलसेगम को अलमको व शशपंजको और वहमको दुई को निकालो ललन। घर चलो चलो राजके काजसब देखो भालो प्रजा अपनी पालो ललन। सल्तनत राज गद्दी तख्त छत्रको अब संभालो २ संभालो ललन ८८

[illegible]

दो०—जैसें तैसें घुरूको, बिबिधि भांति समझाइ।
गाजे बाजेसे नृपति, घरको चले लिवाइ॥

छंद—सुरनाथ इस होकर बिदा निज लोकको कीनो गवन। इत नृप घुरू को संग लै पहुँचत भए अपने भवन॥सुत सौतको लखिकर नई रानी महा लज्जित भई।सोसीसेपद शिर धरिसुनीतीके सुवनऐसे कही

[illegible]

दो—तनक धकेलामें मेरो, करदयो बेड़ापार।
फिर माता क्योंकर रही, तैंने नीचीनार॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छन्द—कर रही नीची नार कृपा अबभी तेरी टेढ़ी नजर। जो तू कहे मो फिर करूँ तुज से न कुछ गजको उजर। तेरा गया और धकेला गमकोरो सुखदायक हुआ॥ है धन्य धनि मैया मुझे दे,ना मिला भगवानसे। नहिं उऋण होना जन्मभर तेरे मैं इस अहसानसे॥ अति दीनहो विनती करूं पदकमलमें शिर डारके। अबतो लगा छाती मुझे कर प्यार लो पुचकार के। ६०

जवाब रानी सरुच का ध्रुव से

दो०—बेटा मैं पछिताउं यों,अपने दिल दरम्यान।
तासे पूत सपूत को; कियो मैंने अपमान॥

छंद—अपमानकर पछिताती हूं कर नागिनीसी आपनी। जगमें न होयगीसो सम अभागिन पापिनी। धनि२ हमारे भाग धन तेरी सुनीती मातको। हरिभक्त रत गुणशील निधि जिन जनो तोसे तातको। धनिधन्य तोसम साहसी भगवान को दरशन कियो। मस्तमारि दऊं आशीश य बेटा मेरे जुग२ जियो॥ अब ललन अपनी माताको धीरज बँधाओ जायकर। तो बिरह में अंधी भई नैनो से नीर वहाइ कर॥६१

जवाब ध्रुव का

दो०—मौसीसे आशीष ले प्रभुद प्रफुल्लितगात।
गवनकीन पहुंचे ध्रुव,जहां सुनीती मात॥

छं०—जहांपर सुनीति मातश्री ध्रुवराज वहां पहुंचत भए। जननीको देखी दुर्दिशा। देखत २ के देखत रह

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गए ॥ बेटा के बिरहानलमें शोकाऽकुल दुखाग होर हो ॥ कहैं इन्द्रमन गमकी पिटारी हो बिचारी रही ।

दो०-अबतक छौनाकी कोई, खबर मिली नापाइ ।
हे परमेश्वर मौत दे, जाऊं दुखसे खोइ ॥

गगनी सिंधु भैरवी-ऐ परेशाम जीने से आरी हूं मैं जब से आखों का तारा हमारा गया । प्यारा फूल हजारा दुलारा गया मेरा महलों का चंद उजारा गया ॥ सारे सुखका पिटारा हमारा ललन, ऐसा बोली का खाके कटारा गया । हा पती की मतीपै अचंभा मुझै कैसें गोदी से बेटा उतारा गया ॥ बच्चा बाल अबोध अजान समझ, जरा दिलमें न तरस बिचारा गया । मेरा पांच बरसका लडैता लला, देकै धक्का यहां से निकारा गया ॥ भूखा प्यासा तपस्वीका भेष बना, हा बहाता वो आंसू की धारा गया ॥ प्यारा० ॥ मेरी गोदी को तज मेरा पूत प्रभू, तेरी गोदी का लेकै सहारा गया । हे रमाके पतीहे जगतके पिता, यहां से रटता ही नाम तुमारा गया ॥ तेरे दरके गदाकी न पाई खबर जाने जिंदा अभीहै कि मारा गया । जो मिलाना प्रभू तौ मिलादो अभी, मेरे मरनेका अब आ किनारा गया ॥ गुरु जेठ बदी परवा के दिवस हो चिरंजी का कूँच नगारा गया ॥ प्यारा फूल हजारा दुलारा गया मेरे महलों का चंद उजारा गया ६२ ॥

ब०त०-जिस के गममें तू रो २ के अंधी हुई वोग

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

या आय कर तेरा प्यारा ललन। लगा छातीसे मुख चूम पुचकारके बिठा गोदीमें अपना दुलारा ललन॥ जरा दुख सुखकी बातें तो मा पूछ ले कहां फिरता फिरा मारा २ ललन। हो मगन मनमना शुक्र भगवान का जिसने बिछड़ा मिलाया तुमारा ललन ६४॥

व॰ सुनीता का

व॰त॰—मेरा बनके लखा सती मुझको छला चाहें काटले तेरा दुदमसे गला। ऐ अधर्मी मो दुखिया के जीको जला तेरा परलोकमें कैसे होगा भला॥ धिक् तुझे धूर्त धोखा धूर्त सुतका कर बरमखा चाहता तू मुझे ही बला॥ क्यों तू अंधीका आया दुखानेको दिल जा चला जा चला जा चला जा चला॥ ६५॥

जवाब धन का

व॰त—न तू धोखा समझसारा शकदूर करमत खमा आंसुओं की झड़ी दमबदम। कर तसल्ली जिगर छोड रज़जो अलम; जो मुसीबत के दिन थे सोहू एखतम। मैया तेरी कृपा सेमुझे रामने दीनी झांकी रखी मेरी लज़्जा शरम। मैंही तेरा लला मैंही तेरा लला माता तेरी क़सम माता तेरी क़सम। ६६॥

व॰ सुनीती का

बहरतबील—जभी जानूगी मैं तुझे सच्चा धुरू जो वे करतूत मुझको दिखावे अभी। बिना आंखें फिके टक्करें मारती मो अँधरिया को आंखें दिखावे अभी॥ अपनी मौसी पिता कुल नगर और मुझे बुला राम की झांकी करावे अभी। ये हों बातें सभी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुनीती तुझे बिठा गोदी में छाती लगावे अभी ॥ ६७

जवाब धुरूका भगत न से विनय • रना

व०—जो मैं सच्चाहूं सच्ची तपस्या करी सच्चे दरशन किये तो न कीजे विलम । मेरी माता की पूरण पतिज्ञा करो आके राखोशरम आकेराखोशरम ॥पिता मौसी व माता सकल नग्रको देके झांकी स- बोंका मिटाओ वहम । बाले सच्ची कसम खा प्रभूकी कहूं खा कटारी अभी दम करहूं खतम ॥६८॥

जवाब कवी का

व०—सुनी टेरीं धुरूकी न देरी करी आके प्रगटेप्रण त पाल पावन परम । दे चतुर्भुज स्वरूपकी झांकी स- वें भ्रम मिटा भक्त अपनेकी राखी शरम ॥ मा सुनी- तीके नैंना खुले एकदम लेकें गोदी में सुत को किया धन धरम । जैसी ध्रुव की फिरी तैसी सब कि फिरे जे अटलक्षत्र की हुई लीला खतम ॥६९

दो०—अवधनाथ पुनि जोडकर, पुरजन सकलसमाज
ध्रुव को दीनों राजपद, उत्तम को युवराज॥

ला०सिंधु भैरवी—जो कोई नर राम भजन में सची लगन लगावेगा । या जग भोगे सुक्ख अंतको मुक्ति पदारथ पावेगा ॥ सची लगन ध्रुवने साक्षात दरशन पाया । अनपावनी भक्ति अविचल पद अमर लेकर आया ॥ हुआ चक्रवती महाराजों का महाराजा कह लाया । क्या था क्या होगया देखलो राम भजनकी ये माया ॥ रामनाम सुमिरन वाला भवबन्धन से छुट

जावेगा। या जग भोगे ० ॥चेतो २ रटो रामको पु-
लकी नींद न सोओ तुम। काम क्रोध मद लोभ मो
हके मती नशेमें मोओ तुम ॥ हो मदान्ध भोगमें
विषयमें योंही उमर न खोओ तुम ॥ अंत समय पर
कुछ न बनेगा मूड़ पकरके रोओ तुम। अष्टयाम लो
रामनाम यमदूत निकट नहिं आवेगा॥ या जग० ॥
संवत श्रीविक्रमाऽदित्य नृपका उन्नीससौ तिहत्तर
जान। ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा ब्रहस्पति शाम छेबजे
के अनुमान ॥इन्द्र अखाड़े मांहि सुकवि उस्ताद चि-
रंजीलाल महान। ये असार संसार छोडकर सुरपुर
कोकर गए पयान॥ नथाराम द्विज गौडअगारी अब
साङ्गीत बनावेगा॥ या जग० चार अअगस्त
ईसवी सन १९ १६ उन्नीससौ सोलह सुनो
सुजान श्रावण शुक्ला नागपंचमी और दिन शुक्र-
वार पहचान॥इयि श्री आख्यान ध्रुवचरित्र कीनों कृ-
पा करी भगवान। भूलचूक जहाँ कहीं होयलीजो सु
धार सज्जन गुणवान॥पुत्रवान धनवान होय जो प-
ढे व सुने सुनावैगा। या जग भोगे सकल अन्तमें
मुक्ति पदारथ पावैगा।

इति श्री ध्रुवचरित्र सम्पूर्णम्

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बिला-मुहर की पुस्तक-चोरी की समझी जायगी।

ऐतिहासिक-सङ्गीत [illegible]—दल।

-सङ्गीत-वीर-केसरी-

महाराणा प्रताप।

जिसको उन्नाव प्रदेशान्तर्गत-पड़री ग्राम निवासी बच्चूलाल सुत शिवदयाल जैसवाल ने-मनोहर चौबोला छन्द-लावनी-दादरा-कवित्त-बहरे तबील ग़ज़ल इत्यादि राग रागिनियों में निर्मित किया।

इसका सर्वाधिकार शिवदयाल के स्वाधीन है किसी को छापने का स्वत्व नहीं है।

पं० द्वारकाप्रसाद तिवारी प्रिण्टर व प्रोप्राइटर के प्रबन्ध से
भारतभूषण प्रेस लखनऊ में छपा सन् १९१७ ई०।

पहली बार २०००]   [मूल्य ।)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूमिका।

आज कल नगरों ही में नहीं ग्राम ग्राम संगीत का प्रचार देखा जाता है लोग इसकी रसभरी तानें गली गली गाते देखे जाते हैं-परन्तु दुःख के साथ कहना पड़ता है कि संगीत ग्रन्थों में से अधिकांश ऐसे हैं जो महाशृंगारिक और प्रेमरस से सराबोर हैं ऐसे सङ्गीत ग्रन्थ बहुत कम देखे जाते हैं जिन से मन के उच्च भावों का विकास हो, इन्हीं बातों को ध्यान में रख कर मैंने-हिन्दू सूर्य्य वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप का चरितांश सङ्गीत रूप में आप महानुभावों के सम्मुख रखने का उद्योग किया है, जिस समय भारत में सम्राट अकबर का आतङ्क भारत के कोने कोने में व्याप्त होरहा था, और उसकी नीति कुशलता तथा प्रबल प्रताप से भारत-आर्य्यभूमि-भारत के बड़े बड़े राजे महाराजे अपना सर्वस्व अर्पण कर दासता के फांस में बंध चुके थे, उस समय ऐसे कराल अवसर में मेवाड़ महीप महाराणा प्रताप ने अपनी स्वतन्त्रता और पूर्व गौरव की रक्षा कैसे पराक्रम और कितनी कष्ट सहिष्णुता से करके जन्मभूमि प्रेम का ज्वलंत दृष्टान्त उपस्थित किया इन्हीं सब बातों के दिखाने के लिए इस संगीत की रचना उदार हृदय टॉड कृत राजस्थान के आधार पर करके मैंने अपनी जिह्वा तथा लेखनी को पवित्र किया है आशा है कि पाठक और श्रोतागण मुझ अल्पज्ञ की त्रुटियों पर ध्यान न देकर इसे अपनाएंगे।

आश्विन शुक्ला
विजयदशमी संवत् १९७४

भवदीय–शिवदयाल जैसवाल

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥

संगीत महाराणा प्रताप ॥

मंगलाचरण विनय।

जै बालेश्वरी चंडिका, शत्रु प्रहारी चंडिका, विघ्न संहारी चंडिका, दंगलभारी चंडिका, जै रुजनाशन ज्ञान प्रकाशन, जैजगदेश्वरी चंडिका, आनंद की दाता तुही मइया, करनदास के काज गुरु सनेहि के नामकी। राख सभा मैं लाज ॥ १ ॥

दोहा। अखिललोक भुवनेश्वरी, सरस्वती सुखदानि।
सकलकला विद्यादि की, माता तुम बरदानि ॥

चौ०। माता तुम बरदानि, पाणि मैं जोड़ू तेरे आगे, हटै तिमिरि अज्ञान, ज्ञान उर अंतर मेरे जागे ॥ बनै काव्य सुखमूल, भूल भ्रम इससे सगरे भागैं। होय कथन ज्यों रतन, कवी शिव जोड़ जोड़ कर मांगैं ॥

दौड़। सहारा तेरा भारी, मातु यह विनय हमारी।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दासकी ओर निहारी, पूरण करदो काज। आय करके मयूर असवारी ॥ २ ॥

दोहा। कगिरदि कन्या शैलकी, खगिरदि षट्मुख माय।
गगिरदि गङ्गाधर त्रिया, घगिरदि घटमें आय ॥

चौ०। घगिरदि घट में आय, चगिरदि चौगुनि उर बुद्धि बढ़ावै। छगिरदि छंद प्रबंध, जगरदि जननी मम मुझे पढ़ावै॥ झगिरदि झट से आज, टगिरदि टेढ़ी पर कामें आवै। ठगिरदि ठोंके शत्रु, डगिरदि डटिके मोहिं बिजे दिलावै॥

दौड़। ढ़गिरदि ढूढ़ै सिंहसवारी, तगिरदि तरवारि निकारी। थगिरदि थांभे दलआके, दगिरदि, दंगलमध्य धगिरदि ध्यावत शिवदयाल गाके॥ ३ ॥

दोहा। कगिरदि कर करवाल ले, खगिरदि खप्पर हाथ।
गगिरदि गरजे सिंह चढ़ि, घगिरदि घूमे साथ॥

चौ०। घगिरदि घूमैं साथ, नगरदि नादानहुँ रक्षा कीजे। चगिरदि चारहु ओर छगिरदि छै दुशमन की करदीजे॥ जगिरदि जननी आज, झगिरदि झट धार ए मद की पीजे। टगिरदि टेढ़ा काम, ठगिरदि ठाना मैं मदद करीजे॥

दौड़। डगिरदि डंका बजवाऊं, ढगिरदि ढंगस्वांग

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिखाऊं । तगिरदि तुम्हरी मग हेरें, थगिरदि थभे न धीर दगिरदि दंगत्रं में शिव कवि टेरे ॥ ४ ॥

दोहा । जै जै श्री सम्राट मम, पंचमजार्ज भुवाल ।
राज्यसहित होवो अमर, शत्रु होय पामाल ॥

चौ० । शत्रु होय पामाल, मुल्क मुल्कों झन्डा गड़ि जावै । मचा जहांपर समर, शत्रु पर ईश्वर बिजै दिखावै । प्रजापाल भूपाल तेज रवि, सम भगवान बढ़ावै । जितनी भारत प्राजा नम लै लै तव मौज उड़ावै ॥

दौड़ । शाह भारत के भारी, विनय नित यही हमारी । ईश अकबाल बढ़ावै । करो सदा आनन्द सुकवि शिव हरिसे यही मनावै ॥ ५ ॥

रणतीर्थ ।

दोहा । समरभूमि जनुतीर्थ है, समर दिवस जनु पर्व ।
रक्त नदी अस्नान में, धसे वारवर सर्व ॥

चौ० । धसे वीरवर सर्व, योगिनी भिक्षुक भूत बने हैं । काट देत भट शीश, लेत शिर शंकर मगमने हैं ॥ काक कंक बैताल, तालदै शुभदिन अपन गने हैं । रणतीरथ दैदान, सुभट सुर पुरमें ठानठने हैं ॥

दुबोला । जात देवलै स्वर्गलोक तहँ रम्भा चवँर दुरावैं हैं । रणतीरथ उन्नाव प्रान्त पड़री के शिव कविगावैं हैं ॥

दौड़ । चलावैं तेग दुधारैं, कदम आगे को डारैं शत्रु के

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिरजे फारैं। मारैं औ मरि जायं शास्त्रमत देव लोक पगधारैं ॥ ६ ॥

(रंगत)

दोहा। मुल्क हिंद के बीच में, माड़वाड़ यक देश।
शहर एक चित्तौड़ का, क़िस्सा करता पेश ॥

चौ०। क़िस्सा करता पेश, उदयसिंह वहां छत्रधारी था। बीर श्रेष्ट परताप उसी का पुत्र तेज भारी था ॥ जन्मभूमि के हेत, अपन सरबस्व बलाहारी था। देशकरौं उद्धार, यही चिंता चितमें जारी था ॥

कव्वाली। भए चित्तौड़ के राजा उदयसिंहवीर ब्रत धारी। कुंवर बाइस हुए तिनके, बड़ेही तेज बलधारी। बड़ा परताप सुत तिनका बड़ीही नारि से जाया ॥ हुवा छोटी से सुत जगमल सुनो ए हाल चितधारी। दिया छोटे को नृप गद्दी बड़े परताप को छोड़ा। बड़ी रानी पै थे गुस्सा न दीन्हों राज्य छलकारी, रहे छोटी त्रिया से खुश पुत्र ताही के गद्दी दी। इस अनुचित कामसे मंत्री किए थे रंज चितभारी ॥

कड़ा। प्यारे जी, खूब किया संग्राम। यवनदल काटि गिरायो, देश हेत बहु दुःख बीर परताप ने पायो ॥

दुबोल। लड़ा बरस पचीस मगर अकबर से मुखको मोड़ाना। छोड़ा ना शाका अपनी ना सन्धि किया कर जोड़ना।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दौड़। एक परताप का मामा, वीर झालौर ललामा। तख्त जगमल्ल ने पायो, सुनि झालौर विहाल सेन पति चन्द्रावत बुलवायो ॥ ७ ॥

ज० झालौर।

दोहा। धावन तू जावै तुरत, चन्द्रावत के भौन।
कहै बुलाया, झालवर, संग करौ मम गौन ॥

ज० रंगा।

दोहा। धावन भट झालौर का, गा चन्द्रावत द्वार।
हाल सकल कहिके तिन्हें, ले आयो दरबार ॥

ज० चन्द्रावत सरदार-

दोहा। सोन गढ़े सरदार सुत, सुनौ झालौर राव।
क्यों बुलवाया मोहिं तुम, सचसच भेद बताव ॥

चौ०। सच सच भेद बताव, आप काहे मोकूं बुलवाया। पातेही फरमान, पास फरमाबरदार मैं आया ॥ मेरे लायक काम, जौन तुमने होवे ठहराया। बिलाशक शुभा कहौ करूं यदि मेरा बनै बनाया ॥

दौड़। जौन मुझ से हो आवै, न देरी होने पावै। काम तुम्हारे को बनावैं, करैं करैं हम करैं सपथ शंकर की तुम से खावैं ॥ १०

ज० झालौर सरदार-

दोहा। भानज है परताप मम, मेरा प्राण अधार।
गद्दी तेहि चित्तौड़ की, होनी चहिए यार ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौ० । होनी चहिए यार, राज्य जेठाही सुत पावे है । रीति यही संसार, शास्त्र ऐसा ही बतलावे है ॥ होते होते आप, राज्य क्या छोटा ले जावे है । तिस पर ए इंसाफ जहां में हक हकीक पावे है ॥

दौड़ । तिलक परताप करावो, शीश पर छत्र धरावो । जगत में यश तुम पावो, क्षीर नीर करि बिलग हंस बनि तुम यह न्याय चुकावो ॥ ११ ॥

ज० चन्द्रावत-

दोहा । हरे झालौर राव सुन, मन में मति घबराय ।
चन्द्रावत के जियत क्या, जगमल नृप ह्वै जाय ॥

चौ० । जगमल नृप ह्वै जाय, छत्र परताप शीश धरवाऊं । जो इतना ना करूं, तो मैं चन्द्रावत नहीं कहाऊं । कोटिन केऊ कहै, तिलक परताप के शीश चढ़ाऊं । लिए तेग सामंत सकल नित प्रति आदाब बजाऊं ॥

दौड़ । कल्हि ही छत्र धराऊं, देर अब नहीं लगाऊं । सचिव जगमलें बनाऊं, वीर श्रेष्ठ परतापसिंह को कल्ही तख्त बिठाऊं १२ ॥

ज० रंगा-

दोहा । हामी भरि झालौर से, चन्द्रावत सरदार ।
धावन को बुलवाय के, कहन लगो तेहि बार ॥ १३

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज० चन्द्रावत का धावन से-

दोहा। धावन तू जावै तुरत, पंडित जी के पास।
साथ आपने लिवा के, आए मेरे बास ॥ १४ ॥

ज० धावन का-

दोहा। जाता हूं सरकार मैं, विप्र पास यहि काल।
लाके उनको साथ मैं, आता हूं ततकाल ॥ १५ ॥

ज० रंगा-

लावनी। सेनप के सुनिकै बैन तहां हरकारा। चल के पंडित के भौन में आय पुकारा॥ महराज हाल सुनि पंडित जी तेहि बार। करी जरा ना देर तुरतही आये सेनप द्वार॥ चन्द्रावत आवत पंडित जबै निहारा। फौरन पंडित के चरणन में शिर धारा। महराज विप्र असीस दैतै तेहिबार॥ कुशल प्रश्न के बाद विप्र का सेनप किया सत्कार १६ ॥

ज० पंडित-

दोहा। क्यों बुलवाया मोहि तुम, चन्द्रावत सरदार।
जल्दी से बतलाव अब, करो न नेरो अबार॥ १७

ज० चन्द्रावत-

दोहा। छत्र धरूं परताप के, मैंने कीन्ही टेक।
पंडित जी मुझ को जरा, बात बताओ एक॥

चौ०। बात बताओ एक, विप्रवर टीका की तइयारी।
सामा चाही कौन तिलक में, कहिये आप विचारी॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तिलक होय परताप, हुक्म परताप का होवे जारी।
सचिव और सामंत सभी ने मन में यही विचारी॥
दौड़। देर होने ना पावे, तिलक कलही होजावे॥
विघ्न सामान बतावो, करो नृपति परताप और जगमल्ल को सचिव बनावो॥ १८

ज० पंडित-

दोहा। सुनिए चन्द्रावत बचन, मन में लेहु विचार।
प्रथम नगर सजवाइए, मन्दिर गली बजार॥
चौ०। मन्दिर गली बजार, पताका ध्वज घर घर बंधिजावे। बन बाटिका सजाय, कामिनी मीठेश्वर से गावें॥ गंगा जल को आनि, सकल तीरथ जल फौरन आवें। कवि कोविद बुलवाय, महूरत शुभ में लगन चढ़ावे॥
दौड़। रीति मैंने बतलाई, शास्त्र न योंही गाई। होति याही चलि आई, सब सामान मंगाय, मोहिं इत्तिला दियो पठवाई॥ १६॥

ज० चन्द्रावत सरदार-

दोहा। हाजिर सब सामान है, सुनो पुरोहित बात।
तिलक चढ़ावै कौन भट, काहि उचित है तात॥
चौ०। काहि उचित है तात, बात तुम सांति सति हमें बतावो। सचिव प्रजा का मता, वेद का भेद सकल कहि गावो॥ और कौन को तिलक, यहां देखन हित मैं

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बुलवावौं। जैसी होवे रीति, पुरोहित पात्री मोहिं समझावो॥

दौड। तिलक तुम बहु करवाए, बहुत नृप छत्र धराए। पुरानी उमर दिखाए, करो वेगि इरशाद काम अच्छे में देर न लाए॥ २० ॥

उ० पंडित का-चन्द्रावत से-

दोहा। सुन चन्द्रावत बीर बर, पुर के शाहूकार।
सचिव सेन सामंत गण, बुलवावो यहि बार॥

भजन। टेक—यही अब होना चहिए मीत, साहूकार बुलाव शहर के, यही पुरानी रीत। १ यही अब १॥ जितने हों राजा महराजा, जिनसे तेरी प्रीत॥ २ यही अब २॥ सचिव और सामंत सुहृद गण, नृप जो लाया जीत। ३ यही अब ३॥ शिवदयाल सबको बुलवावें, यहि उत्सव सह प्रीत॥ ४ यही अब होना चहिए मीत॥ २१ ॥

उ० रंगा।

दोहा। सुनिके पंडितके वचन, चन्द्रावत सरदार।
साहूकारन नेवत दै, बुलवायो दरबार॥

चौ०। बुलवायो दरबार, ग्वालियर नृप फौरन चलि आए। भई भीर दरबार, सचिव सामंत अनेकन छाए॥ फौजन के सरदार फौज ले ले फौरन तहँ आए। कोलाहल मचगया, तिलक देखन को रैय्यत धाए॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दौड़। बाजने मंगल बाजे, द्वारपर कलश बिराजे भाट जै जै करि गाजे। बांधे बंदनवार दसौ दिसि मंगल द्रव्यन साजे॥ २२॥

ज० पंडित।

दोहा। शुभ मुहूर्त शुभ लग्न है, चन्द्रावत सरदार।
तिलक चढ़ावो आनतुम, देरन कर यहिबार॥

ज० चन्द्रावत।

दोहा। चन्द्रावत सरदार मैं, शुभ मुहूर्त सुनि कान।
मंगल द्रव्य सजायके, तिलक करूं सुखदान॥

चौ०। तिलक करूं सुखदान, विप्र सब वेदध्वनि कर दीजै। फौज करै आदाब अदबसे जमी शीश धरि लीजै। सचिव और सामंत खिलत दै झुकि आदाब करीजै॥ जगमल मंत्री हुए, इन्हें सब लोग अदब नित कीजै॥

दौड़। दान ब्राह्मण लेजाएं, भाट आनंद मनाएं। प्रजा खुशहाली शोचे, बैठे तख्त प्रताप॥ प्रजा का दुःख सकल अब मोचे॥ २४॥

ज० पंडित का।

दोहा। सुनो सभाके सभ्यजन, मंगल गान हमार।
नित्त रहो आनंद में, शिव कवि कहे पुकार॥

भजन। टेक। राजन राज करो सुख पारे, राजकोष भंडार रतन धन, दिन दिन बढ़ै तुम्हारे। १ राजन १॥ बढ़ै सुयश परताप जगत जिमि, दुतिया शशि छबि

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धारे ॥२ राजन२॥ सूर्य्य वंश में सूर्य्य सदृस हैं यवनतिमिर हनि डारे। ३ राजन ३॥शिवदयाल कुल आर्य्य कमल के अब तो दल खिलवारे ॥४ राजन राजकरो सुख पारे ४॥

ग़ज़ल। धन राज धर्म बाढ़ै राजन सदां सदां को। आनन्द तव प्रजा घर, होवे सदां सदां को ॥१॥ सब देश होय तेरा, बल बुद्धि हो घनेरा, कीरति प्रताप तेरा, बाढ़ै सदां सदां को ॥ २॥ दुशमन कि नास होवे, चहुं ओर शांति गोवे। सुख नीद पड़ के सोवे, रय्यत सदां सदां को ॥ ३ ज्ञाता हो न्याय गुनिए, कवि शिव दयाल सुनिए। भारत के दुःख हनिए, नृप बरसदां सदां को ॥४॥२५॥

रंगा-

दोहा। गाना सुनि बर विज्ञ सों, दीन्हो बहुत इनाम।
पुनि प्रताप सब सनपन, बुलाकह्योनिजधाम २६

ज० प्रताप।

दोहा। राज पाट अब होगया, अच्छे गुजर हाल।
अहेरिया त्योहार का, है कुछ तुमका ख्याल॥

चौ०। है कुछ तुमका ख्याल, साल भरका है शकुन बतावो। सकल साहिब सरदार, लोग क्यों इसका हैं बिस, रावो ॥ इतना सुनलो कान, वेग फौजैं हमरी सजवावो अहेरिया त्योहार मनाने फौजे सब ले आवो ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग़ज़ल। परिचय है आज सबका, भट बाहुबल दिननका।
भावी औ सुःख दुखके सम्वतके कुल दिननका १
आलस कि नींद छोड़ो, घोड़ों को तुम न मोड़ो।
लखिके शिकार तोड़ो, छोड़ो न तुम दिननका २
खेलो शिकार दिन लो, बलि देव देवि को लो।
फल एक वर्ष गिन लो, अच्छे बुरे दिननका ३
भारत के भाग जागें, तजि देश शत्रु भागैं।
कवि शिवप्रताप मांगैं, भारत में सब दिननका ४
दौड़। हुक्म मम बाजै डंका, फौज सब चलै अशंका।
बीर मेरे जे बंका, खुसी खुसी सब चले जरा भी मन में करैं न शंका ॥ २७ ॥

जं० रंगा।

दोहा। हुक्म मानि परतापका, जितने थे सरदार।
जंगल में नृप साथ हैं, अश्व तजे यकबार ॥
चौ०। अश्व तजे यकबार, भई जंगल में हाहाकारी।
बाजैं चहुंदिशि टाप, अश्वकी कीने सब असवारी ॥
सचिव और सामंत, नृपति आगे से भए पिछारी।
शक्तसिंह परतापसिंह, भाई दोउ बढ़े अगारी ॥
दौड़। तीर दोऊ भट मारे, कोलके तनको फारे ॥
गिरा बाराह तहां रे। शक्त कहा में हनो कहा परताप कुवर में मारे ॥ २८ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज० प्रताप का छोटे भाई से।

दोहा। पाजी नामाकूल तू, शक्तसिंह बेइमान।
जो कहना माने नहीं, लै लूं तेरे प्रान॥

चौ०। लै लूं तेरे प्रान, सुवर तू कैसे शठ मारे है। पाजी नामाकूल बृथा ही धनुष बांण धारे हैं॥ मैंने मारे सुवर, हमीने उसका तन फारे है। कहे झूठ तू खड़ा, तेरी क्या सामत बेचारे है॥

दौड़। हमें तू मू न दिखाए, सामने से हट जाए। बके जो झूठ यहां रे, तौ तेरे हिरदै को पाजी अभी अभी हम फारें॥ २९॥

ज० शक्तसिंह का परताप से-

दोहा। रे पाजी परताप सुन, बकता क्या बदमाश।
सुवर पछारे खेत हम, तू करता निज पास॥

चौ०। तू करता निज पास, हमें शठ जगमल्ल मती बनाना। तख्त छीन के मूढ़, बना कुम्भल में बैठा राना॥ तेरी ए औकात सुवर को मारे तू यक बाना, बिन शक्तावत सिंह, सुवर को कौन हने मरदाना॥

दौड़। अबे तू हमें न जाने, वृथा में भाला ताने। समर रे मूर्ख गवांर, ज्यादा तू जो बकै काट के कर देऊं दो फारे ३०॥

ज० रंगा-

दोहा। आपुस केरी फूट ने, खोया हिन्दुस्तान।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भारत गारत होगया, कहंलो करूं बयान ॥

चौ०। कहं लो करूं बयान, विभीषण रावण नास कराए। कौरव पांडव सहस-सक्त परताप एक के जाए। भाय भाय की फूट, देश यह सत्यानास कराए। दोऊ बिचले समर, नहीं कोउ माने काहु मनाए॥

दौड़। फौज ठाढ़ी मन मारे, रोकते सचिव बिचारे। बहुते समझा के हारे, बंद न देखा युद्ध आय गये प्रोहित पुत्र तहांरे॥ २१

जं० प्रोहित पुत्र-

दोहा। शक्तसिंह तुझ से बड़ा, है परताप नरेश।

भाई की गम खाय ले, आव न ऐसे पेश॥

चौ०आव न ऐसे पेश, दश इज्जत की कुछ सूझे है। बनता है नादान, तेरी दानिस में क्या सूझे है। बे फजूल बे काम, बनाना दान वृथा जूझे है। ठहर ठहर तू ठहर, कब उलटी सीधी बूझे है॥

दौड़। कहे न मेरी तुम माने, हाथ ना भाला ताने। हमारी दोउ सुन लीजे, एक पिता के जने, सहोदर हो ऐसा ना कीजे॥ ३२॥

जं० रंगा-

दोहा। प्रोहित सुत दीखो तहां, मानैं कोउ न हमार।

शोचा दे दूं प्राण तो, अच्छा हो यहिबार।

चौ०। अच्छा हो यहिबार, गया दोउन के चखिके

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आगे । पश निसाने मध्य प्राण सुरपुर के मारग लागे ॥
द्विज हत्या को समझि, दोउ जन सोवत से हैं जागे ।
चित्र लिखे से रहे, युद्ध तजि दोउ शोच मैं पागे ॥

लावनी । हां ब्राह्मणके चितमैं ए बात समाई । राजाके नास से प्रजा नास होजाई ॥ महराज मरा द्विज देश हेत तेहि ठाम । आज तलक मेवाड़ भूमि पै है प्रसिद्ध तेहिनाम मरगया बीच परि निसदम ब्राह्मण जानों, दोऊ भाइनके हृदय दुःख सरसानो ॥ महराज किया मनमैं बहु शोच विचार । क्रिया कराई जंगल मैं हैं ब्राह्मण की तेहिबार ॥ जब शक्त और परताप दोउ घर आए, तब शक्तसिंह को रानाने निकराए । महराज शक्त अकबर के पहुंचा पास, सेनापती बनाके अकबर कीनो आसस्वास ॥ राणा प्रताप कुम्भल मैं गद्दी कीना, कितनेही किलों को हाथ में अपने लीना । महराज बसाई तहँ रैय्यत बुलवाय, सेन इकट्ठा करी तहां ही धीरे धीरे राय ॥

दौड़ । एक दरबार कराया, सकल सेनप बुलवाया । सबों से कहा सुनाई । मैं जो पूंछू बात यथारथ उत्तर देना भाई ॥ ३३ ॥

ज० प्रताप-

दोहा । सुनो सकल सामन्त गण, तुम्हें कहूं समझाय ।
पिता प्रापिता राज्य मैं, यवन अमल दिखराय ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौ० । यवन अमल दिखाय, शोचिए अब क्या करना चहिए । भारी मेरा शत्रु शाह दिल्लीपति अकबर कहिए, काह करें क्या करें कौन विधि जन्मभूमि को लहिए, तुम्हीं पुराने लोग, यथामति समझ समझ के कहिए ॥

दौड़ । शोच मेरे यह भारी, अश्क रहते नित जारी । राज्य जो रही हमारी करें यवन कुल भोग, मोहिं धिक्कार हजारों वारी ॥ ३४ ॥

बहेरे तवील । ज० झालौर ।

शत्रु भारी तुम्हारा तो क्यासके, आप शंका जरा चित्त लाएं नहीं आप कहिए सो करने को तैय्यार है, चाहे धड़ पै ए शीश दिखाए नहीं ॥ जितने क्षत्री बसे तले तव छत्र के, कोई रण में जा पद को हटाए नहीं । आप करिए अनुष्ठान संग्राम का, बिना संग्राम भू हाथ आए नहीं ३५

बहेरे तवील । ज० प्रताप का-

बात सुनियो अपर एक तुम ध्यान धर मैंने कीन्ही कसमउसको छोडूं नहीं । चाहे लाखों परें शीश पै बिपदा, जो कहा सो करूं मुख को मोडूं नहीं ॥ इस जबां से जहां में सुता सुत हरें, जीते जीते यवन हाथ जोडूं नहीं । मै भू यों छुड़ाऊं चित्तौर की, इस जबां से किए प्रण को तोडूं नही ३६ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बहरे तवील। ज० झालौर।

आप घबराए जाते वृथा क्यों नृपति, हम बंधन धरम का तो तोड़ें नहीं। जौन कीन्हीं कसम है नृपति आपने उसको पूरी करैं मुखको मोड़ें नहीं॥ प्राण देवें जनम भूमि हित हे नृपे जीते जीते तेग साथ छोड़ें नहीं। करैं सन्धी कभी ना यवन से सुनो, जाय अकबर के हम हाथ जोड़े नहीं॥ ३७॥

बहरे तवील। ज० प्रताप का-

ए हुकुम है हमारा सुनो लोग सब, निज जमी पै दखल जबलों पाएँ नहीं। करवाएँ हजामत न कोइ वंस धर, सोने चांदीके बरतन में खाएँ नहीं॥ जाय शय्या पै सैन करें न कोइ, इत्र आदिक बदन से लगाएं नहीं। जननी से भि बढ़के जनम भूमि है॥ छूटि हमसे क्यों सूतक मनाएं नहीं॥ ३८॥

बहरे तवील। ज० झालौर-

हम सूतक मनाएंगे तबलो नृपति, जबलों रक्त यवन से नहाएं नहीं। धरैं शय्या पै तबलों कदम ना नृपति, तबलों पद तर यवन शीश आएं नहीं॥ फार डारैं न जबलों रिपुन पेटको, तबलों हरगिज हम बरतन में खाएं नहीं। हाय जननी जनम भूमि हित लड़िमरैं, ज्यादा कह बीरता को जनाएं नहीं॥ ३९॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बहरे तवील । ज० प्रताप ।

और सुनियो अभी कुछ है बाकी कहे न, सेन आगे नगाड़े बजेंगे नहीं। जबलों जीतूं यमी ना करूं यवन सर तबलो आगे हैं डंके सजेंगे नहीं ॥ फौज थोड़ी से संग्राम भारी करें, और तुर्क ए जबलों भजैंगे नहीं । इस धरम के करम से टरै जो टरै, परताप तो हरगिज टरैंगेनहीं४०

बहरे तवील । ज० झालौर-

आप करिए तयारी समर भूमिकी, थोड़ी सामान लखिके डिरावो नहीं । बड़ा भारी था राजा सुनों रावणा राम ने उससे दहसत को खावो नहीं ॥ फौज कौरव कि गेरा रही छोहिणी, सात पांडवसे तिन जीत पावो नहीं। आप साजो कटक चित भटक ना करे, युद्ध करने में नृप बार लावो नहीं ॥ ४१ ॥

ज० रंगा-

दोहा । हुक्म मानि परताप का, जितने थे सरदार।
वरतन सोने रजत के, तजि दीन्हे यकबार ॥

चौ० । तजि दीन्हे यकबार, मातु का सूतक लगे मनाने । तृण शय्या पर सैन, पत्र में भोजन लागे खाने जितने छत्री रहे लगे परताप का हुक्म बजाने, जन्म-भूमि के हेत सभी ने ब्रह्मचर्य्य ब्रत ठाने ॥

दौड़ । राजसी भोजन त्यागे, मूलफल खानेलागे हृदय यह चिंता छाई, करैं देश उद्धार नहीं तो देवे प्राण गमाई।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज० प्रताप का-रैय्यत तथा सरदार चन्द्रावत से।

दोहा। देव पुरी चित्तौड़ था, किया यवन ने ध्वंस।
गिरिमा गौरव नगर की, रही न एको अंस॥

चौ०। रही न एको अंस, शाह अकबर ने लाक कराया। नन्दन बनसे बाग, हाय अकबर ने सब फुंकवाया। रैय्यत हुई उजाड़ महल मन्दिर सगरे तुड़वाया, मम पुरखों का नगर। शाह सब गर्द वर्द करवाया॥

शैर। अब हुक्म मेरा यहु सुनो, धर ध्यान अपने कान कर। जितनी प्रजा चित्तौड़ की बस जाय कुम्भल आनकर, जो हुक्म मानेगा नहीं। फौरन वो मारा जायगा, या लाय कुम्भलमेर में चमड़ा निकाला जायगा। जायगा चितौड़ या कुछ भी वहां से लायगा, मिलजायगा मुझको अगर जीता न घर को आयगा।

दौड़। यही प्रण मेरा भारी, शोच मोहिं राज्य का जारी। कहेन है यही हमारी। जन्मभूमि उद्धार हत उद्वेग करा सब भारी।

ज० चन्द्रावत का प्रताप से-

दोहा। नगर एक चित्तौड़ क्या, खाली भे सब ग्राम।
हुक्म आपका मानिके, रहा न नरका नाम॥

चौ०। रहा न नरका नाम, आय कुम्भल में डेरा कीन्हा। गांव रांड़ से हुए सभी सुन्दरता हरि हरि लीन्हा। कुम्भल भो आबाद, प्रजा चित्तौड़ कि सुधिना कीन्हा।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इन्द्रभवन के सदृस, बसा कुम्भल में डेरा दीन्हा ॥

दौड़। प्रजा यह चित्त विचार, भूमि अपनी उद्धारे। यवन हम मारि निकारे , सुनो नृपति परताप आपकी प्रजा ए बैन उचार ॥ ४४ ॥

ज० प्रताप का-

दोहा। चलो हमारे साथ तुम, चन्द्रावत सरदार।
हम देखें चित्तौड़ मग, गा कोइ प्रजा हमार॥

चौ०। गा कोइ प्रजा हमार, हमारी रैय्यत यदि मिल जावै। मारके लेवें प्रान तासु की खाल वेगि खिचजावै, चलके देखें भला हमारा रैय्यत कुछ डरखावै, या जावै चित्तौड़ करै जो उसके मनमें आवै॥

दौड़। रूप तुम लोग छिपावो, घाट घाटी दिखलावो चलो हम चलते आगे। तुम सरदार लोग आवो सब मेरे पाछे लाग ॥ ४५ ॥

ज० रंगा।

दोहा। होनहार भावी कठिन, होनी सो होजाय।
आपुन आवै ताहिपै, ताहि तहां लेजाय॥

चौ०। ताहि तहां लेजाय, गणरिया एक वहां आया था। घास लह लही देख विचारा भेड वहां लाया था, भेड़ें चरती वहां। गणरिया, गाना मस्ताया था। औच कहीं राना प्रताप को उसने लख पाया था ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दौड़ । देख परताप अगारे, खड़े महराज हमारे, एक दम वो थर्राया । इधर उधर छिपता लखके, प्रताप ने डाट बताया !! ४६ ॥

ज० प्रताप ।

दोहा । रे पाजी बेकूफ तू, छिपता क्यों बदमाश ।
हुक्म हमारा टाल के, चाहे जीवन आस ॥

चौ० । चाहे जीवन आस, यहां क्यों भेंड चराने लाया । लाया तुझको काल बस यही मुझको भी दिख लाया, जितनी रैय्यत मोरि नगर चित्तौड़ कि मग विसराया आए यहां न कोय, यहां का जल दान ना खाया ।

दौड़ । हुक्म मेरा जब जानै, तु कैसे नाहीं मानै, भेंड़ इत काहे आनै, साफ साफ बतलाव नहीं तौ अच्छाई ना जानैं ॥

ज० गड़रिया-

दोहा । महाराज शिरताज तुम, सब कुछ जाननहार ।
पेट अधम के कारने, कीन्हें अत्याचार ॥

लावनी । हे नाथ तुम्हारा प्रणमेरा जाना है, पर पेट हेत मैं कछु न तेहि माना है । महराज़ पेट सब कुछ लेवे करवाय, पेट अधमहित धर्म छूटि संसार मध्य में जाय ॥ भेंड़ भूखी लखि नाथ चित्त घबराना, क्या करूं हाय मैं प्रण तुम्हार ना माना । महराज जहां में ब्राह्मण भी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बलाय, लालचमें फंसके मैंनेभी दियोकुमार्ग पगआय॥४८

ज० प्रताप-

दोहा। तू कहतासो सही है, सुनो गडरिए ज्वान।
मारे भूखन के केऊ, आगिन लागै खान॥

चौ०। आगि न लागे खान, मेरा प्रण मेरी रैय्यत माने। तूने टाला हुक्म मूढ़ अपने मन में क्या जाने॥ रवि पश्चिम यदि उगे, अमावस शशि प्रकास यदि ठाने। सिंह घास चहे खाय, मगर राणा हठ टले न जाने॥

दौड़। अबे मक्कार गवांरे, बात हमसे न बनारे। कहे न मेरी चितलावे, राना कहा न टरे चहे पृथ्वी पताल को जावे॥ ४९॥

बहरे तवील। ज० गड़रिया-

मैंने कीन्ही खता सो अताकर नृपे, ऐसा होगा दुबारा करमही नहीं। जौन हुक्म तुम्हारा कसम है करूं, टालूं अबसे तो रक्खो धरमही नहीं॥ बात मेरी पै बिश्वास करिए नृपति, मेरी ओर से रक्खो भरमही नहीं। जो किया सो किया यदि कभी अबकरूं, मेरी देह में रक्खो चरम ही नहीं॥ ५०॥

बहरे तवील। ज० प्रताप-

मूढ़ बाते बनाता छिपाता करम, मेरे प्रणकी तुझे कुछ खबरही नहीं। माने सारी प्रजा तू निडर होरहा, तुझे मरनेक खौफो खतरही नहीं॥ खड़ी बाते बनाता खड़ा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शठ यहां, आने अर्प मैं देता अबरही नहीं। राजा हुक्म से खाल खिचाऊं तेरी, बिना खाल खिचाए सबरही नहीं॥

लावनी। ज० रंगा-

हां गणेरिए ने बहुत तरह समझाया, परताप न उसके कहने को चितलाया। महराज रहे दृढ़ अपने प्रण परराव, हुक्म दिया नौकर को इसको पकड़ कचहरी लाव। गह हाथ गणरिए का नौकर चल दीना, राणा प्रताप की सभामें हाजिर कीना। महराज राव ने जल्लादों बुलवाय, सकल सभा में कहन माजरे को लागे समझाय॥ ५२॥

ज० प्रताप का ज़ल्लादों से।

दोहा। ज़ल्लादों मेरा सुनो, हुक्म जगा के कान।
करके फौरन आइयो, तुमहो चतुर महान॥

चौ०। तुमहो चतुर महान, एक हम मुलजिमि लेकर आए। भेंड चराते इसे, पकड़ चित्तौड़ के मग हम पाए। हुक्म अदूली किया, इसीसें तुमको है बुलवाए। खालखींच के अभी लोथ इसकी द्रुम में लटकाए॥

दौड़। देखले प्रजा हमारी, करैं मम प्रणरखवारी। समझ ले मनहिं मझारी, जो मानें ना हुक्मदार की बाकी होय तयारी॥ ५३॥

ज० रंगा।

दोहा। कनास ने नृप हुक्म पा, गह्यो गणरियेधाय।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गणरिनए अहवाल सुनि, पहुची सभामेंआय ५४॥

ज० गणग्नि का राजा से-

दोहा। अरज खड़ी तुम से करूं, महराना यहिबार।
खना बनावे पनी की, पाछे देना दार॥

लावनी। क्या ख्वा परी ने करी राव बनवावे, जिसके पलटे में पति की खाल खिचावे। महाराज पुत्र रैय्यन दोउ एक समान। ककड़ी की चोरी वाले के लए जातनहिं प्रान। नृप कसूर तौ सबसे ही होजाना है, ए पेट अधम क्या क्या ना करवाता है। महराज पनी से मेरा छुटातेनात, मैं रोती अफसोस आपसे माफी दई न जात। ऋषि दुरबासा ने माफी नप से पाई, दीन्ही जयंत का राम सुनो तुमराई। महराज चूकते बड़े बड़े शरताज, मर यादा, के बद्ध रहे ना इन्द्रदेव पुरराज॥ ५५ ॥

ज० प्रताप।

दोहा। प्रण मानेना जोननर, जुर्म लगाया जाय।
मिले जुर्म करता जोई, खाल लेहुँ खिचवाय॥

चौ०। खाल लेहु खिचवाय. कुराही पुत्र भी मारा जाई, अवध नृपति निज पुत्र दिया था असमंजस निकराई। प्रण मानो ए नहीं इसीसें खाल लेहुं खिचवाई क्या समझाती मुझे पेट हित कुएं में को गिरिजाई॥

दौ। देखु द्रग जयन्त खोया, देखि तन इन्द्र भि रोया।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दुःख दुरवासा पायो, जिन जिन किया कसूर विलाशक गणरिन दुःख उठायो ॥ ५६ ॥

ज० गणरिन ।

लावनी । पति नारी का होवे पति रखवाला, पतिके बिन पतनी का हो बुरा हवाला । महराज नारि का पति-ही लों शृंगार, पतिके बिना सुनो पतनी का जीवन है धिरकार ॥ बालापन में पितु त्रिय की रच्छा करता, ज्वानी में रच्छा करता ताका भरता । महराज बुढ़ापा पुत्र लगावै पार, तीनों पन नारी के कटते पराधीन सरकार ॥ नृप सुता अता करदेय कहा मममाने, पतिके बिन मेरी नाव न होय ठिकाने । महराज नारि नौका का पति मल्लाह, पार लगावै जीते जी प्रभु एक दफे गहि बांह ॥ ५७ ॥

ज० प्रताप-

दोहा । बाते वृथा बना रही, जाय न तेरी पार ।
प्राणन से प्रण अधिक है, तू क्या जाने नार ॥

चौ० । तू क्या जाने नार, बात दशरथ रानी से हारी । राम लषण बनदिया, मगर कहिके नहिं टरे जरारी ॥ दुरयोधन प्रण किया, मरा अट्ठारा छोनि जुझारी । रावण कहिना टरा, कुटुब सब लेके जूझमरारी ॥

दौड़ । नृपति शिविराज से हारी, मूंण दो काटि तहांरी ॥ हाल मोरध्वज गायो, हारि विप्र से बैन पुत्रके शीश पैं आरा चलायो ॥ ५८ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उ० गड़रिया की लड़की का-

छंद। मम दीन दुखिया के पिता की खता माफ करीजिए। भिक्षुक सहस हमे जानि नृप भिक्षा में पितु को दीजिए॥ सुनि रुदन मेरा आपके कुछ दया चित आती नहीं। मेरी बिनै सरकार का क्या हृदय पिघलाती नहीं॥ ५९॥

उ० प्रताप का-

छंद। तू देख ले भरके दृगन फिर ए कहां और तू कहां। बकने से अब क्या हो यहां, क्षण मात्र में तजता जहां॥ क्षणमात्र का तेरा पिता तू पुत्रि यक क्षणमात्र की। प्रण को कदापि न मैं तजों चमड़ा खिचाऊं गात्र की॥ जल्लाद तू लेजाय फौरन देर क्यों इतनी करै। मेरी प्रजा ले देख फिर कोइ काम ना ऐसा करै॥ ६०॥

उ० जल्लाद का-

दोहा। जै जै सीताराम है, गड़ेरिए महराज।
बहुत दिनोंके बाद में, काम पड़ा ह आज॥

चौ०। काम पड़ा है आज, कुँवर जल्लादों का जाया हूं। खाल खींचने तेरी, हुक्म राजा क पाय आया हूं॥ हने हजारो पुर्ष, देख सारटीफिकट लाया हूं। फांसी के इसकूल से पढ़के अभी नया आया हूं॥

दौड़। हाय हा मुझे पियारी, मारना नर खेलवारी। चाह यक यही हमारी, चलै हमारे साथ तुम्हारे बदन

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कि खाल निकारी ॥ ६१ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀

ज० रंगा

दोहा। गड़रिन ने देखा तहां, लीन्हें जात कनास।
रोकर वो कहने लगी, जा पीतम के पास ॥

बहरे तवील। ज० गड़रिन।

मेरि नाव के खेवनहार पिया, मँझधार में छांड़ कहां को चले। बइठाय के नइया भवर में फसा, मोहिं छांड़ अकेलि कहां को चले ॥ इस दासी को साथ लिवाए चलो, प्रभुजात अकेल कहां को चले। पति प्राण सँघाती कहाय अहा, दिए धोखे को जाते कहां को चले ॥

छंद। दुखिया अभागिन मै बड़ी, पति मरन नैनो से लखूं। फटता न पविसम हृदय मम ए दुःख पति तुम पर लखूं ॥ अहिवात को करतार लूटा, कत्ल को पिवजा रहा। क्या खा कटारी में मरूं, जाता न कुछ मुझसे कहा ॥ निकले न इसदम दम मेरा हम दम हमारा जारहा ॥ धिक्कार मेरे प्राण को जो वृथा घटमें रुकरहा॥६२

ज० गड़रिया।

छंद। तेरे सुता सुत हैं प्रिए तू रंज क्यों दिलमें करे। मरता जरूर जहांन में जो आय जन्म यहां धरे ॥ तुम धर्म पतिव्रत पर सदां, चलना कहा यह कीजियो, क्षणमात्र के सुख के लिए कहुँ धर्म ना दे दीजियो ॥ करना सिंगार न प्रिये तुम, नतु कोइ भूषण धारियो।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिस्सी औ काजल हिनाको मन चहै तौ तुम मारियो॥
खाना न कबहूं पान प्रिय, सिन्दुर न मांग चढ़ाइयो॥
नीली हरी पीली कभी साड़ी न अंग लगाइयो॥ भगवान
का करना भजन, हैं नाव खेवनहार वे॥ भवसिन्धु से
प्यारी मेरी, तुझको उतारें पार वे॥ ६४॥

ज० गड़रिन–

छंद। तुम्हरा कहा मंजूर हमदम करूं जब तक दम रहैं।
हे धर्म की नइया मेरी हो पार जो ईश्वर चहैं॥
मैं धर्म की थाती धरूं घर महाजन भगवान के।
रक्षक सुदृढ़ तसकरन से मन ठीक ठीहा जानके ६५

ज० जल्लादों का गड़रिन से–

छंद। हट हट यहां से हट अरी बकवाद क्या ज्यादा करे।
जाते लिए हम दार पर तू मोह क्या इतना करे॥
हमलोग छांड़ं नाइसे तू जाय अपने भौन सुन।
ज्यादा जो इत बकबक करे अच्छा न तेरे हेतसुन॥

ज० रंगा।

लावनी। तहँ जल्लादों ने गड़रिन दिया हटाई।
मजबूरन अपने घर वो चली डराई॥ महराज गड़रिया
रोय रहा कर शोर। जल्लादों पै लगा बताने तहां
हाथ को जोड़॥ ६७॥

ज०गड़रिया का जल्लादोंसे–

दोहा–ओ लड़के जल्लाद के,सुनले मेरी बात।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दया खाय के चित्त में, करैं न मेरी घात॥

ज० जल्लादों का-

दोहा-हम लड़के जल्लाद के, दया न हमरे पास।
खून आदमी का हमें, पीते लगे मिठास॥

चौ०। पीते लगे मिठास, हाड़ पापड़ से चब जावे हैं। गद गद लोहू पिएं, दूध शक्कर सि मजा पावे हैं। मांस देयं कुत्ते को, अरु खाल से ढोल मढ़ावें हें। खूब बजावें उसे, ब्याह से मंगल हम गावे हैं।

दौड़। दूध मक्खन की खाई, तेल अरु इतर लगाई। बड़े भागन से पाई हरि से बिनती करें, कि ऐसइ शिकार नित्त भेजाई।

ज०जल्लाद दूसरा-

दोहा-फांसी में वालिद मेरे, थे बी० ए० तक पास।
मैं बी० ए० में पढ़रहा, कर हजार नर नास॥

चौ०। कर हजार नर नास, लास में एम० ए० तक जाऊंगा, फांसी देना काम नहीं कुछ खान। खिलवाऊंगा। हुक्म नृपति का हुआ, सो फौरन खाल खींच लाऊंगा। करके पूरा हुक्म, उन्हींसे इनाम भी पाऊंगा।

दौड़। निमक हम नृपका खावें, उन्ही का हुक्म बजावें, तेरी वो खाल खिचावें। हम कनास के पूत, चलो अब जरा न देर लगावैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज० गणारिया-

दोहा। सुनो वक्त आखीर है, मैंहूं अजया पाल।
अमर न कोई जहान में. खाता सबको काल।

लावनी। इस जहां में मुट्ठी बांध सभी आते हैं, अफ़सोस यही की खुले हाथ जाते है। महराज जौन यश अपयश गठरी लाव, लेके संग आखीर में प्यारे सभी स्वर्ग को जाव। होता ना रहना किसी के जो आते हैं, बदनेक कर्म दुनिया में रह जाते हैं, महराज जग चमन में फूलें बहु फूल, कोइ फूल के फूल कितनऊ चले होयके धूल। ना रहे सिकन्दर यहां रहे ना दारा। मरगया सिल्यूकस जो चन्द्रगुप्त से हारा। महराज फरीदूं जम जे यवनभुवाल, काल बांध राखो रावन ने उसे भि खायो काल। ना रहे राम ना भृगुपति कुवर कन्हाई, ना रहा सहस्राबाहु बालि बलिराई। महराज रहे ना विक्रम से नर नाह। यक दिन ऐसा होय रहै ना प्रताप अकबर शाह।

बहरे तबील।

मुझे मालूम न था ऐसी होगी दशा, नहीं भूल कभी ऐसी करता नहीं। जाता भेंड़ चराने कभी ना वहां, ऐसी आफ़त मे जाके मैं परता नहीं। सुन लीजे सभा के सुहृद लोग जो, बिना मृत्यु के कोइ है मरता नहीं गुस्ताखी को माफ़के जैराम लो काल आया सो हरगिज़ है टरतानहीं

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ख० गणरिया का सभा के लोगो से-

सुनियो सज्जन सभा के मरूं मैं यहां तुम लाश ठिकाने लगादेना। कोइ मरनेक पूछे हाल मेरे तो हुक्म अदूली बतादेना॥ जब फांसी हो जावै यारो मुझे तो लाश उठा सजवा देना। डाल तन पै दुशाला औ हार सुनो इसे मरघट को तुम पहुंचा देना॥ रिस्तेदार जो कंधा लगा के चलै उन्हे रस्ता कहूं सो बता देना। निकले कुम्भल में राना के हैं द्वारसे मेरा इतना कहा तुम करदेना॥ और साथ जनाजे के जेलोग हों उनसे आप-मर्दा ए करा देना। सत्तिराम को छांड़के देशकी जै कहीं गणा कि जै तुम बोला देना॥ जब कि मरघट में पहुंचै जनाजा मेरा तुम जरूर सनेही जला देना। जैसी तुमको बलेसर बतावे सुनो वैसी मेरी चिता तुम रचा देना॥ जबकि लाश मेरी होवे खाकसुनो तुम सरूपे चंद खबर देना, थोड़े हाड़ों को मेरे यारो सुनो तुम प्रयाग जरूर भिजा देना॥

रंगा।

दोहा-जल्लादन लेजाय के, घोट गले को दीन।
प्राण पवन तन छांड़के, जमपुर मारग लीन॥

चौ०। जमपुर मारग लीन, खाल नृपने उसकी खिचवाया। यक दरख्त में बांध लोथ उसकी नृप ने लटकाया। हल्ला पुर में हुआ, अदूली हुक्म सजाये पाया। अब ऐसा जो करै, वह्न ऐसाही जा लटकाया।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दौड़। नृपति का हुक्म ए जारी, हारते दुख हो भारी। सुनो सब नर अरु नारी, हुक्म अदूली किए करें फांसी घर की तैय्यारी।

ज० रैय्यत-

दोहा काह करोगे दयानिधि, दीन बन्धु भगवान।
कौंन यत्न मे हे हरी, हो चित्तौर उत्थान॥

चौ०। हो चित्तौड़ उत्थान, जन्म भू पाएं कौन यतन से। काह करें क्या करें, मिले क्या खोएं प्रान रतन से। क्यों कर होवे खड़ा, राम चित्तौड़ ए ऐसे पतन से। सब मिलि के शिव कहो, आज तुम अपने अपने मतन से॥

राग बिहाग।

अब मेंवाड़ कठिन होगई।

दीनबन्धु कैसी अब करि हौं, कैसे इत निभई। १ अब मेवाड़०॥ या उद्धारो जन्म भूमिका, या कुल यवन लई। आर्य्य भूमि परमेश्वर तेरी, यवनन ताहि लई॥ २ अब मेवाड़०॥ कब उद्धारो प्रभु पहुमी को, छूटे बिपद नई। होवें अति आनन्द देश में—"शिव" की कब सुनई॥३॥ अब मेवाड़ कठिन होगई॥

दौड़। जन्मभूमि मिले हमारी, प्राण कर देवें वारी। राय है यही हमारी, जन्मभूमि हित लड़ैं। धरें ना रण में पैर पछारी॥३७॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ-

दूसरी मंज़िल प्रारम्भः ।

रंगा-

दोहा । देख गड़रिए की दशा, रयत गई घबराय ।
मानसिंह अम्बेर के, सुनो हाल चितलाय ॥

चौ० । सुनो हाल चितलाय, शाह अकबर का था यक भाई । नवाब काबुल रहा चित्त में उसके घाटि समाई । खुद होके मुखतार शाह को देता ना यक पाई । ताको बिजय करन को, अकबर मानसिंह पठवाई ।

लावनी । भाई अकबर का मानसिंह से हारा, और हाथ जोड़के मान से किया करारा । महराज जौन कुछ होवे सुनो तुम्हार, पाई पाई दऊं माफ मोहि कर दीजै सरकार । तहँ मानसिंह ने बाकी सब लैलीनी, फौरन दिल्ली की तरफ कूच कर दीनी । महराज शाह में उसने किया बिचार, कुम्भल में राना के पास होते चलिए यहिबार ॥

दौड़ । ठीक मनमें ठहराई, सैन सब चला लिवाई । उदयपुर जब नियराना, यक धावन को बुला तासु से कहै मान मरदाना ॥ ७४ ॥

ज० मानसिंह का धावन-

दोहा । धावन मेरी बात सुन, जावै राना तीर ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कहेना आए मानसिंह. जैपुर के सरतोर॥

चौ० । जैपुर के सरतोर तुम्हारी मुलाकात को आए । खत भी तू ए लेय, जाय राना के हाथ गहाए॥ कहेना भेजा बुला, आप किरपा करके चलि जाएं। बहुत दिना से मिले नहीं, तासो लोचन ललचाएं॥

दौड़। पत्र मेरा लै धावैं, सभा परताप कि जावै। जाय आदाब बजावैं। झुकि झुकि कियो प्रणाम अदब से खत राणा दिखलावैं॥ ७५॥

ज० रंगा।

रंगा—करि जोहार नृप मानको, झट धावन चल दीन। खत देके परताप को, हाल कहत परवीन॥

ज० धावन का प्रताप से।

दोहा—हम धावन नृप मान के, आए तुम्हरे पास। तुम्हे बुलाया नृपति है, करिके दरसन आस॥

ठुमरी। चलिए चलिए जी सरकार, आपको मैंहूं बुलाने आया। हमको भेजा मान भुवाल, देय खत कहा है मुझसे हाल। बुलाला राणा को ततकाल, हाल ए मुझसे मान पठाया। १॥ चलिए चलिए॥ कृपाकरि चलिए मेरे साथ, बुलाया जोड़ के तुम को हाथ। हाल सुन लेव सिसोदिय नाथ, तुम्हें है दरशन हित बुलवाया॥२॥ चलिए चलिए॥ हाल तो कहना चहिए ज़रूर करूंना मैं ज्यादा मजबूर। बुलाए जाना चहिए हजूर,

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अरज फरमा बरदार सुनाया ॥ ३ ॥ चलिए चलिए ॥ आप जैसा कुछ कहिए हाल, जायके कहि देवे शिव दयाल, कृपा जल्दी से करो भुवाल। कहूं मैं हाथ जोड़ के राया ॥ ४ ॥ चलिए चलिए ॥

ज० रंगा-

दोहा। धावन से राना सुना, आए मान भुवाल।
निज सुतको बुलवायके, कहन लगे तेहिकाल॥

ज० प्रताप-

दोहा। अमरसिंह जावै तुरत, उदय सरोवर तीर।
जाय उतारैं फौज सह, मानसिंह रणधीर॥

लावनी। तुम मानसिंह के पास, कुँवर चलि जावो। खाने पीने का इन्तिज़ाम करवावो। मेरे पुत्र कीजिया बिधिवत तुम सत्कार। पूछै मुझको मान तो फौरन तू जाना हां टार ॥ ७९ ॥

ज० अमरसिंह का-

लावनी। मैं मानसिंह के पास पिता हूं जाता। बिधिवत उनका हूं स्वागत मैं करवाता ॥ मेरे पिता जात मैं उदय सरोवर तीर। स्वागत सबका करूं मानसँग होवे जितनी भीर ॥ ८० ॥

ज० रंगा का।

दोहा। अमरसिंह पहुंचा तुरत, मानसिंह के पास।
देखि प्रणाम करी तिन्हें, दियो यथोचित बास ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौ०। दियो यथोचित बास, सभी सामा स्वागतकी लाई। गाना सुनने हेत, एक सङ्गीताचार्य्य बुलाई॥ सुनके नृप सुत हुक्म, वेगि दरबार विज्ञवर आई। नृप स्वागत के हेत विविधि विधि गाने की झरिलाई॥

दौड़। खूब सोहिनी सुनावें, गज़ल ध्रुवपद को गावें। खूब मालव बतलावें, दीपक राग सुनाय कुशलता अपनी विज्ञ दिखावें॥ ८१॥

ज० पंडित का यानी (गाना)

सोहनी। शुभ घड़ी शुभ योग दिखावत, आज दरश तव मान भए हैं। धनि मम भाग्य नगर धनि मेरो, धनि पुरबासी यहां जे ठए हैं। लोचन दुखी दरस तुम्हरे के, देखि तुम्हें आनन्द भए हैं। शिवदयाल सब खुशी नगर जन, देत असीस खुशी उनए हैं।

गज़ल। स्वागत तुम्हे है राजन, बागे जहान वाले, पल्लव नृपाल द्रुमके, नूतन बनाने वाले। सौभाग्य के सरोवर शुचिशांति फल के हित, पवित्र अम्बु तुमसा, आगम मनाने वाले। कोकिल कपोत रैय्यत, आनन्द भृङ्ग के सम। रिपुपति समान लखि कै आनंद जताने वाले। आसा गुलाब बेला, मधिन्याय धर्म फले। तव नामयश महक हों, शिव कवि मनाने वाले।

ज० रंगा।

दोहा। गानाको बरखास्त करि, अमर मानदिगजाय।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हाथ जोड़ तिन पै तहां, अरजकरत मनलाय॥८३

ज० अमरसिंह का-

दोहा। महाराज अम्बेर नृप, खाने को तय्यार।
चलके भोजन कीजिए, मती लगावो बार॥८४॥

ज० रंगा-

दोहा। अमरसिंह के वचन सुनि, उठे मान हरषाय।
चौके में परताप को, दीख न आए खाय॥८५॥

ज० मानसिंह।

दोहा। अमरसिंह सुत तू बता, कह राना परताप।
तुमको भेजा यहां है, क्यों नहिं आए आप॥८६

ज० अमरसिंह-

दोहा। चाचा जी सुन लीजिए, होत पिता शिरदर्द।
व्याकुल हैं बूखार से, चेहरा पड़गया जर्द॥८७॥

ज० रंगा-

दोहा। गया ताड़ नृप मान तहँ, हीले को ततकाल।
अमरसिंह से कह उठा, मानसिंह भूपाल॥८८॥

ज० मानसिंह-

दोहा। अमरसिंह तू जा कहे, राणा से यह हाल।
समझगया शिर दर्द का, मतलब में यहिकाल॥

चौ०। मतलब में यहिकाल, बात बिगड़ी सो बिगड़ी भाई। जिस भ्रम में वो गिरे, बात सो बनि है नहीं बनाई॥ ऐसे अवसर अगर, साथ राणा ना मेरे खाई। तो जहान के नृपति हमारी खूबी करें हँसाई॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दौड़। हितू हैं संगामेरे, और सब शत्रु बड़ेरे। बात बिगड़ी को सुधारैं। साबै संगवो नहा तौ फिर संग सावैं कौन हमारे ॥ ८६ ॥

ज० अमरसिंह का-

दोहा। चाचा जी मैं भेजता, धावन को यहिकाल।
जाय पिता से वो कहे, सगरो ह्यां का हाल॥६०

जबाब रंगा।

दोहा। धावन को बुलवाय के, कुवर अमर तेहि ठाय।
मानसिंहका हाल दौं, राना पास पठाय।।६१॥

ज० धावन का प्रताप से।

दोहा-महाराज शिरताज सुन, आए तुम्हरे पास।
भेजा हमको अमरसिंह, हाल करूं परकास॥

चौ०। हाल करूं परकास मान जिस दम चौके में आयो देखा तुमको नहीं, तौ उसने खाना भी ना खायो। अमरसिंह से कहा, यहां राना काहेना आयो। राना को बुलवाव नहीं तो मोपै जाय न खायो।

दौड़। अमर तुमको बुलवायो, मान ना भोजन पायो। आप मेरी सुन लीजै, बैठे चौका मान कृपा कर जल्दी से चल दीजे॥

ज० राणा का धावन से।

दोहा-मानसिंह से जा कहो, वो धावन रनधीर।
भोजन करने हेत नहि, आवैं मुसलिम तीर॥

चौ०। आवैं मुसलिम तीर, कि जिसने धर्म न कछु

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बिचारा । यवनों भगनी दई करें क्या उससे सिस्टाचारा, नाम डुबाया मूढ़, राजपूती में पानी डारा । दे भगनी अकबर को, क्या खाने में किया बिचारा ।

दौड़ । बना हिन्दू ब्र‍त धारी, नात मुगलों का भारी । खांय क्या उनके संग में, बना घूमता हिन्दू लेकिन रँगा तुर्क के रँग में ॥

ज० रंगा-

दोहा । जैसा राना ने कहा, मानसिंह को हाल ।
धावन ने नृप मान से, आय कहा ततकाल ॥

चौ० । आय कहा ततकाल, मान के बड़ी शर्म मन आई । भूल आपनी जान, मानसिंह चौके से उठजाई ॥ पांच देवता हेत, ग्रास जो भू में रक्खे राई । सोई रख पगड़ी में चलिभे मानसिंह शरमाई ॥

दौड़ । कूच नृप मान कराया, सुनत राना तहँ आया । मानसिंह राणा देखा, कहने लगे मान । आप के घरकी अच्छी लेखा ॥ ६४ ॥

ज० मानसिंह का-

दोहा । महराणा परताप जी, सुनिए मेरी बात ।
तेरेही कल्याण हित, छांड़े सगरे नात ॥

छांड़ सगरे नात, धर्म अरु कर्म तिलांजलि दीने । तेरे हितके लिए कर्म अनुचित भी मैंने कीने । भगनी दीन्ही

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यवन, जगत में कलंक मैंने लीने, ऐसे करने पर भी मुझसे आप रहे मन भीने ॥

दौड़। दुःख को तू जो चाहे, दुःख तुझके प्रिय आहे। तौ हम वैसेई करि हैं, अब मेवाड़ चना लोहे के तुम्हे चबाने परिहैं ॥ ६५ ॥

ज० रांणा प्रताप का-

दोहा। अच्छा अच्छा शाहके, शाले सुनली बात।
मान तुम्हारे माथ पै, मैं रखूंगा लात ॥

चौ०। मैं रखूंगा लात, समर में जब तुमको पाऊंगा। लोहे के वे चने, तुझी को शाले चबवाऊंगा ॥ मैं क्षत्री रजपूत, समर तोहि तेगा खिलवाऊंगा। बहा खूनकी नदी तेरी प्यास को बुझवाऊंगा।

दौड़। चलैं जब मार दुधारा, खूनके बहैं नद नारा। सिखापन तुझको देऊं, मार मारे भालन के दही झांझर कर देऊं।

रंगा।

दोहा-मानसिंह परताप से, होगयो बाद बिवाद।
मानसिंह दिल्ली गए, हाल कहूं तेहि बाद ॥

चौ०। हाल कहूं तेहि बाद, मान था जहं भोजन हित आया। खुदवाया वो जगा, और लोटा थाली तुड़वाया। गंगा जल छिड़काय, जगह भोजन की पाक कराया

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किसी चुगुल ने जाय हाल दिल्ली में शहको सुनाया ॥

लावनी। सुनि मानसिंह अपमान शाह छलकारी, ऊपर से बढ़ाया ढोंग सुनो तेहिबारी। महराज कपट का शाह बिछाया जाल, मानसिंह से ढोंग बढ़ाके पूछन लागे हाल ॥ मन में अकबर के थी यह घाटि समाई, हिन्दू हिन्दू लड़ि मरें तो हो अच्छाई। महराज होय बिषसे बिष फौरन दूर, मानसिंह के हृदय में शहने क्रोध कराया पूर। नृप मानसिंह को अकबर खूब पढ़ाया, पृथ्वी से उसको तहां अकास सुझाया॥महराज कपट में अकबर था भरपूर, मन चाहे इस हिन्दबीच हिन्दू की रहे न धूर। था मान सिंह सुत बेशक भट मरदाना, जिन आधीराज अकबर कि हिन्द में ठाना॥महराज एक तो बीर दूसरे सार,अकबर के या हाल तुरतही हुवा जिगर के पार। अकबरने अपने मन में यह ठहराई, सब राजावों ने हमको शीश झुकाई। महराज न राना आए जो मम पास, मानसिंह को चढ़ा करा दूं ताकी सत्यानास। थी एक जलन अपमान मान से छाई, दूजी जो राना कुम्भल जाय बसाई। महराज तीसरे रानादबे न ताहि, सब सरदार बुलाय कहै अकबर शाह तिनके पांहि॥

दोहा। सचिव सरदार बुलाए, नृपति नाते में कहाए। सभी दरबार में आए बोला अकबर शाह, महाराना पर गुसा बढ़ाए॥ ६७॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज० अकबर-

दोहा। शत्रु बढ़ा जाता मेरा, करो कोइ तदबीर।
तुम मेरे सेनप सचिव, हो सब बुद्धि गँभीर ॥९८॥

ज० रंगा।

दोहा। इधर बादशा कर रहे, मंत्रिन साथ सलाह।
उधर बीर परताप भी, शोचरहा मनमाह ॥

चौ०। शोच रहा मनमांह, हाल पुरखों का यह पाया था। पर नारी को दीठ शत्रु को पीठ न दिखलाया था॥ भाटों के मुख पितृ कीर्ति। सुन सुन के जोस आया था, नित नव हो उत्साह। छुड़ाना चित्तौरै भाया था॥

दौड़। कहै परताप पुकारी, जन्म भू मात हमारी। यवन कर परी बिचारी, देखि दुःख राना को करता झाला वचन उचारी ॥ ९९ ॥

ज० झाला का प्रताप से-

दोहा। पृथ्वी पति दुरयोधन, रहे छत्र धर साथ।
अरजुनका क्या करलिया, सुनोशिशोदियनाथ॥

चौ०। सुनो शिशोदिय नाथ, विजे अरजुन केही कर आई। इकले रवि संसार तिमिरि को छण में देत नसाई। छोटी आंकुस होत, मगर गज मत्त को देत बिठाई॥ छोट बड़े से काह, विजय तो हरिके हाथ सदाई॥

दौड़। राम जिसको जितवावे बिजय नर सोई पावे।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आप काहे घबरावो, जो हरि है अनुकूल तो मैं अकबर का मान घटावो ॥ १०० ॥

ज० प्रताप का झाला से-

दोहा। झालापति सरदार सुन, सब सरदार बुलाव।
युद्ध करैं केहि भांति में, सब मिलि राह बताव॥

चौ०। सब मिलि राह बताव, मेरे नृप जे अज्ञाकारी थे। हितू हमारे रहे, सदां देते मददें भारी थे। मिले शाह से जाय, सदा जे हमरे सहकारी थे। काह उन्हें हम कहैं। कहाते चत्री व्रत धारी थे॥

दौड़। धर्म मरयाद गमाई। ससुर कोउ सार कहाई, शाह के बहुभे चेरे। तिलांजली दई धर्म कर्म को किया प्रवाह सरि मेरे॥ १०१ ॥

ज० झाला का प्रताप से।

दोहा। आप कछू घबराय ना, इंतिजाम हम करत।
इस अपार संसार में, दुख बिन हरि को हरत॥

ज० झाला का दूसरे सरदारों से।

दोहा-भाई सब सरदार गण, सुनो हमारी बात।
युद्ध करेंगे शाहसे, बतलावो कुछ घात॥

चौ०। बतलावो कुछ घात, शाहसे लड़ना चहिए भाई। धनकी है कुछ कमी, कहो इसका भी कछू उपाई। तुम्हे मुनासिब सुनो, मदद निज नृपकी करो सदांई। राजा मांगे जीव देव सब फौरन मित्र तहांई॥

दौड़। नृपति हित प्राण गमावे, सही वह सुरपुर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जावै। मुनासिब हम लिख लावो, जिस राजा के बसो उसी हित अपना मूड़ कटावो।

ज० सरदारों का झाला से।

दोहा। जिस राजा के राज में, करें सदां सुख चैन।
झाला उसके काज हित, काढ़ देयँ हम नैन॥

चौ०। काढ़ देयँ हम नैन जहांतक बने जीव दे देवें राजा की खिदमत करके, सुरलोक मुफ्त में लेवें। राजा से इनकार प्रान हित हम नाहीं करदेवें लड़े नृपतिके हेत शीश में तेग शत्रु की लेवें।

दौड़। नृपति पर भीर दिखावें, प्राण दे उसे छुड़ावें। सही तुमसे बतलावें, झाला नेकी करे नृपति हित अपना मूड़ कटावें।

रंगा।

दोहा। झालाको ढाढस बंधा, जितने थे सरदार।
युद्ध करै की राय सब, मिलारहे तेहि बार॥

ज० सरदारों का सरदारों से।

दोहा। सरदारो मेरी सुनो, सोचो कछू उपाव।
युद्ध करैंगे शाह से, कुछ तदबीर बताव॥

चौ०। कुछ तदबीर बताव, शाहसे लड़ना चहिए भाई। अपनी अपनी राय, यथामति कहिए सबरे गाई। जैसा जिससे बने, वही वह कारज देय चलाई। रण में धनका खर्च, कहो इसका क्या करें उपाई।

दौड़। युद्ध तो होना चहिए, कहांतक दुखको सहिए

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राय जैसी ठहरावो, कर धनकी तदवीर, शाहसे लड़ने को सब धावो।

ज० सरदारों का सरदारों से आपुस में।

दोहा। मुल्क गैर के साथ में, मुगलों का व्यापार।
माल जात मेवाड़ हो, सूरत बन्दर पार॥

चौ०। सूरत बन्दर पार, माल को लूटि लेहु जो जावै। धीरे धीरे इसी काम से, धन फौरन होजावै। धन हो तेही पास, शत्रु से युद्ध वेगि छिण जावे। छोड़ के घर का माल, कहां हम माल ढूढ़ने जावें।

दौड़। राय तुमको बतलाई, ठीक मैंने ठहराई। कार्य्य अब याही कीजे, लूट मार को चलो देर अब सरदारों ना कीजे।

ज० रंगा।

दोहा। ठीक राय ठहराय के, जितने थे सरदार।
माल लूटने लगे सब, चहुं दिसि परी पुकार॥

चौ०। चहुं दिसि परी पुकार, भला बनिए की कहां को सुनता। मार पीट को सहे अंत में माल खोय शिर धुनता॥बहुत रोज ए हुवा, मगर फिरियाद न कोई सुनता राह न राही चलैं हकीकत राह कि जब वो सुनता॥

दौड़। लूट को खूब मचाया, माल खुब जमा कराया। राय रह बणिक बिचारे, करिके सब सल्लाह शाह से आ फिरियाद गुजारे।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज० बनियों का शाहसे ।

दोहा । महाराज शिरताज तुम, जान माल के शाह ।
लूटा जाता माल है, माड़ वाड़ के राह ॥
चौ० । माड़वाड़ के राह, घाट हल्दी नाघे ना पावे ॥ ले के जावे माल, उधर से जीता घर ना आवें । डाकू लेते लूट, शाह तदवीर क्यों न करवाव । दिवस दहाड़े लूट, शत्रु घर बैठे मौज उड़ावें ।
दौड़ । आप तदबीर करावो, शाहदिल्ली के कहावो बिनय मेरी सुन लीजे । भेजि के फौरन फौज, राहका इंतिजाम कर दीजे ।

ज० अकबर शाह का बनिया से-

दोहा । बनियो तुम घरको चलो, करो न शोच बिचार
हम जाके नासे सकल, मगके अत्याचार ॥
चौ० । मगके अत्याचार, बड़ी सेना हम ले सजवाई॥ चलके देखें उसे, कौन तुमको उपजा दुखदाई । मार काट के उसे, तुम्हें राहत देवे पहुंचाई । फिर ना खटका रहे, तुम्हारी शकी शुभा मिटजाई ॥
दौड़ । शत्रु कोइ होय हमारा, तुम्हें दुख देत करारा॥ बड़ा वो है हत्यारा, समझे मुझसे आय करें तुम पै क्या बृथा प्रहारा ॥ ११० ॥

ज० रंगा-

दोहा । बनियन को रुखसतकिया, अकबर ने तेहिबार ।
पुनि बुलवाए सभामें, बड़े २ सरदार ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौ० । बड़े बड़े सरदार, हुक्म भा सब सेना सजवावो । हौ तुम जितने बीर घाट हल्दी पै जल्दी जावो । और हुक्म ए सरदारों को अकबर ने दिलवावो ॥ फौज साथ में मानसिंह अरु सलीम को ले जावो ॥

दौड़ । सभी को हुक्म सुनाए, भटन उर खुसी बढ़ाए । तयारी करने लागे, जात फौज संग्राम खुसी से भटगण गाजन लागे ॥ १११ ॥

ज० अकबर का-

दोहा । मेरी तू सुन लीजियो, सुत सलीम गुणगान ।
मानसिंह को साथ ले, सागर सुत बलवान ॥

चौ० । सागर सुत बलवान, मुहब्बत खान नाम भट भारी । सेनापति सँगलेय, हमारे हैं ए आज्ञाकारी ॥ बुलवाके दूं भेज, करौ संग्राम कि तुम तैइयारी । देखो डाकू कौन, हरैं जो रय्यत का धनभारी ॥

दौड़ । फौज संग सब ले जावो, जरा ना देर लगावो जाय तहं शत्रु संहारो ॥ करो जरा ना देर घाट हल्दी पैं मुरचा मारो ॥ १२ ॥

ज० रंगा ।

दोहा । हुकुम पायके बीरगण, भे तयार तेहिवार ।
घोड़न पै चढ़िगे तहां, ले नंगी तलवार ॥

लावनी । दरबार शाह अकबर से हुक्म जो पाया फौजे सब भई तयारन देर लगाया ॥ महराज सजे चत्री

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सरदार अपार, कूच नगाड़ा बजे। वीरगण भरन लगें हुंकार॥ ताजी तुरकी मुश्की, असपों पर धाए। भट देत गरु ललकार अनन्द बढ़ाए॥ महराज वीरगण लीन्हें है हथियार। समर भूमि दिस चले सुभट गण देत गरु ललकार॥ ११३॥

उ० अकबर का सलीम से।

दोहा। सुत सलीम रण हेतु तू, लीन्हें क्या सामान।
कौन कौन भट संग लिए, मुझसे करे बयान॥

ज० सलीम का।

लावनी। पहिले से पहिलतम्बू फरस लगाए, पल्टन मिसफरमैना की हम भिजवाए, मेरे पिता तोपखाने, अरु सुतर सवार। हाथी घोड़े पैदल के दम भेज दिए सरकार,

ज० अकबर का।

चत्रिन की फौजे भेज धवल भट भारी। हाथे में भाला लेके बढ़े अगारी। मेरे पुत्र मुगल जे सैय्यद शेख हमार। भेजे जितने बीर यहां पे हैं पठान सरदार, अल्ला अल्ला करिके सुसल मां भाई॥ करि राम राम चत्री सब करैं चढ़ाई। मेरे पुत्र वेगि तू जा होके तइयार मानसिंह को साथ आपने लेता जा यहि बार॥

ज० सलीम का-अकबर से-

लावनी। जो जा तुमने है कहा दिया पठवाई। अब मानसिंह के साथ हूं ना हमजाई। मेरे पिता लीजियो मेरा आप सलाम॥ डाकू नृप प्रताप सरदारन करता हूं कतलाम॥ ११५॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज० रंगा-

दोहा—अकबर को कर बंदगी, चली फौज भर्राय।
निकले जौने ग्राम से, रय्यत सब थर्राय॥

चौ०। रैयत सब थर्राय, ईंट की धूल परै दिखलाई। कूप बावली ताल, राह जे पल्टन जल पी जाई। परै झील जो राह, फौज के कढ़ते जाय सुखाई। भासमान भे मंद, गरद रही आसमान लो छाई।

दुबोला। हाथिन की चिक्कार मनहु ज्यों आसमान घहराता हो, पूर्ण चन्द्र ज्यों देख सनेही जलनिधि उमड़ा आता हो।

दौड़। फौज धाई जेहि बेरी, आय अजमेर गरेरी। तहां दो भेदी भारी, देखि शाहकी फौज आय राना से खबर गुजारी।

ज० हरकारा का राना से।

दोहा। आय फौज अजमेर ढिग, परी नागौर ग्राम।
घोड़ों की जीने खुली, कीन्हा वहीं मुकाम॥

चौ०। कीन्हा वहीं मुकाम, परी है फौज सिन्धु सी आई। छोटे छोटे नृपति, नदी से शाह शरण में आई। माड़वार राठौर जौन है मालदेव कहलाई। उदयसिंह को भेज, शाहसे अपनी मिती लड़ाई।

दौड़। भगवान दास अंबेरी, लै शाह पच्छ यहि बेरी।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चढ़ाई तुम पै कीनी, मैं हूं नीमक ख्वार आपको सही पता ए दीनी।

ज० जासूसी का प्रताप से।

दोहा। उदयसिंह रिस्ता किया, मुगलों के दिसि जाय।
मिले चार जन पद उसे, बीस लच्च की आय॥

चौ०। बीसलच्च की आय, धर्म कोटिन का खाक मिलाया। बीसलच्च ही में मूरख ने च्त्रीपना गमाया। शाहके दहिने भए, और हिन्दू की नास को धाया। स्वाधीनता नसाय, पराधीनता में गला फंसाया।

दौड़। गोल अकबर का भारी, बहुत हिन्दू सहकारी आप से मैं बतलाया, लेके सब को साथ कुवँर सलीम अकबर का आया।

ज० रंगा–

दोहा। हरकारा जासूस के, सुने बचन जेहि काल।
महराना करि क्रोध को, कहन लगे तेहि काल॥

ज० प्रताप का झाला से–

दोहा। एक समय के मित्र थे, देते थे मम संग।
सब राजा मेवाड़ के, हुए शाह के अंग॥

चौ०। हुए शाह के अंग, अकेले है दुख हम पै आयो। सागर भाई सगे शक्त ने शत्रु से मेल बढ़ायो॥ जैपुरवाले मान, शाह सेनापति हैं कहवायो। माड़वाड़ के उदयसिंह अकबर के नात दिखायो॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दौड़ । नृपति बूंदी के भारी, पैर ना धरैं पछारी । हाल मैं क्या बतलाऊं, भए शाह के पच्छ कहां तक झाला तुम्हे बताऊं ॥ १२० ॥

ज० झाला का-

दोहा । वाजिब तौ सब नरनको, रहैं जौन नृप देश ।
वापै संकट के परे, तजै न काहू वेश ॥

चौ० । तजै न काहू वेश, उसीका साथ हमेसा देवे । जगमें कीरति बढ़ै, अंत में जाय परम पद लेवे । कर जिस नृपको देय, उसी का पच्छ हमेसा सेवे ॥ चढ़ै शत्रु नृप पांहि, प्राण सँग सेना ले दैदेवे ॥

दौड़ । नृपति हित तन दै दीजै, देवता सम तेहिलीजै । जयति जै नृपकी कीजै, कर जिस नृपको देव उसी हित तन वारन कर दीजै ॥ १२१ ॥

ज० प्रताप का-

दोहा । छोड़ा राजों ने मुझे, खाक मिलाके कर्म्म ।
पराधीनता में फँसे, रहे न बाकी धर्म्म ॥

चौ० । रहे न बाकी धर्म्म, अमर खुद को खुद माना है । रहेना यही हमेस, चित्त में अपने यह ठाना है ॥ ईश्वर के दरबार को अपना बिलकुल घर जाना है । एना जानैं मूर्ख, धर्म तजि कह को हमे जाना हैं ॥

शैर-खाक में देश को मिलाती फूट । खेल क्या क्या नहीं खिलाती फूट ॥ प्रेम पावन अमी पिलाता है । और

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विष घूंट है पिलाती फूट॥ फैलती फलती यह कुफल जब हैं। हंसती मुस्काती खिल खिलाती फूट॥ देश की दुरदशा सुधर जाती। यदि किसी भांति से बिलाती फूट॥

दौड़। सत्य को कभी न छोड़ै, न मरने से मुखमोड़े। धर्म को ना बिसरावे, चलै सत्य पथ सदां तौ भाला मन चीतो करपावें॥ १२२॥

ज० रंगा।

दोहा। सिविरि मध्य परताप नृप, करते शोच बिचार।
यक हरकारा आय फिर, नृप से कहा पुकार॥

ज० हरकारा का-

दोहा। महाराज शिरताज तुम, सुनलो मेरी बात।
चहूं ओर से कोट को, मुगलों घेरा रात॥२३॥

चौ०। मुगलों घेरा रात, चहूंदिसि तोप दिया लगवाई सेना उदधि समान, नाथ मुझसे ना जात गनाई। हाथी घोड़े अमित, अमित दल पैदल देत दिखाई॥ एक लाख से फौज, अधिक मुगलों की सुन लो आई॥

लावनी। नृप मानसिंह सेनापति हैं बनि आए। अकबर का कुंवर सलीम साथ में लाए॥ महराज आप अब होजाना हुसियार। घरका भेदी नास किया है रावण का परिवार॥ १२४॥

ज० प्रताप का-

दोहा। हर्ज काह जो शाहने, करी चढ़ाई आय।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हम केहरि के पुत्र हैं, क्या गजसों घबराय ॥

लावनी। कुछ दूध बतासा राना को जाना है। अकबर ने अपने मनमें क्या ठाना है ॥ मेरे यार सूर्य्य चाहे अस्थल तजिजांय। मगर आज परताप शत्रु को तेग खिलावै खाय ॥ क्या गुड़ के धोखे कपास चाहे खाना। या कुम्हणा की बतिया राना को जाना ॥ मेरे यार चने दूं लोहे के चबवाय। तब है नाम प्रताप नहीं तो देउ नाम पलटाय ॥ १२५ ॥

ज० रंगा-

दोहा। शाह फौज आगमसुनत, धीर बीर बिकराल।
जलती ज्वाला में पड़ा, ज्यों घी हो तत्काल ॥

चौ०। ज्यों घी हो ततकाल, क्रोध की अग्नी उरमें छाए। धरा मूछ पर हाथ, ओठ को दांतों तरे दबाए ॥ सेनापति बुलवाय, हुक्म राना ने यह दिलवाए। सजै बीर रणधीर, धवल भट सज सज फौरन धाए ॥

दौड़। हुक्म भा शाह गरेरा, परो है कठिन दरेरा। सजो सब सूर जुझारा, जवन हवन करिदेव शीश नृप मान के धरो दुधारा ॥ १२६ ॥

ज० प्रताप का सरदारों से तथा चन्द्रावत से-

दोहा। लड़ना है रणभूमि में, जो भट मन घबराय।
ले फौरन तनख्वाह को, घर अपने को जाय ॥

ज० चन्द्रावत का-

दोहा। तन धन जो कुछ पास है, सब तुम्हार है राय।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जन्मभूमि हित प्राणमम, जांय जांय तो जांय ॥

चौ० । जांय जांय तो जांय, मगर जीते ना पीठ दिखावें । जीवें तो यश लहें, मरे पर स्वर्ग अनन्द उठावें ॥ वीर कहावें वही, जन्म भू हित जो शीश चढ़ावें । निज नृप गौरव हेत प्राण दे सोई वीर कहावें ॥

दौड़ । देश उद्धार करावें, देश हित जे मरि जावें मर्द सोई कहलावें खुद स्वतंत्र ह्वै रहे देश में स्वतंत्रता फैलावें ॥ १२८ ॥

ज० प्रताप का-

दोहा । जो स्वदेश हित समर में, अरिका फारें शीश ।
मरने पर भी जी रहा, सच सच बिस्वे बीस ॥

चौ० । सच सच बिश्वे बीस, समर जो दुश्मन से भय खाए । वह क्षत्री का जना नहीं कोउ नीच जाति जनमाए ॥ उस से तो त्रिय भली, जौन जीतेही जी जरि जाए । क्षत्री वह है श्रेष्ठ जन्म भू हित जो प्राण गमाए ॥

दौड़ । निमक तुम मेरा खायो, उरिण हित अवसर आयो । हुक्म भट बेगि बजाएं, मार मार के यवन भवन यमके भेजें रणठाएं ॥ १२९ ॥

ज० चन्द्रावत का-

दोहा । सुनके राणा तव वचन, धरैं न भट गण धीर ।
निकले खंजर म्यान से, चूमि धरै रण बीर ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौ०। चूमि धरै रणवीर, जयति जै जन्म भूमि की भाखैं। जै मेवाड़ महीप, जयति जै राणा को प्रभु राखैं॥ चलो बढ़ो सब कहैं, वीर सैनिक शंकर उराखैं। शिव-दयाल आनन्द सुभट अरु क्रूर महामन माखैं॥

दौड़। लड़न को भट उठिधाए, भुजा दहिनी फड़काए शकुन शुभ तिन्हैं जनाए, भाला बरछी तेग, लिए सामन्त सकल जुरि आए॥ १२०॥

ज० प्रताप का–

दोहा। हुक्म मेरा फौरन सुनो, ऐ क्षत्री रजपूत।
युद्ध होयगा शाह से, करलो दिल मजबूत॥

लावनी। क्षत्री बांके सब सजै न देर लगावैं, गहलोत और चन्देल टांकर धावैं। मेरे यार वीर कछ्वाहे भट राठौर, चौहान पवांर बुंदेले हों इकठौर। आवैं सब सुभट समूह भील विस्वासी, बांधे कसि तीर कमान-जहर की गांसी। मेरे यार सुभट बांकी जो हों रनधीर, भाला बरछी और हाथ में ले धावैं शमशीर।

ज० चन्द्रावत सेनापति का।

दोहा। देके सबको हुक्म नृप, आपौ भे तइयार।
डंका बाजा फौज में, शिवदयाल कबियार॥

लावनी। दैके फौरन यह हुक्म सजा खुद राना, हैबृषभ कंध उपमा कुछ कहत बनैना। महाराज मूछ जनु सिंह रहा फर्राय बारो बाने कस छत्र शिरके ऊपर रहो

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छाय। वासव की उपमा देत कवि सकुचावे, वे सिर्फ देव-ताही के दुख हटावें। महराज हिन्दुओं के राखें ए धर्म, हिन्दुस्थान के हिन्दुन की राना के हाथ थी शर्म। कुल बाइस सहस सवार साथ में लीने, जिन जन्म भूमि हित मरन सुईकृत कीने, महाराज नृपति रामशा ग्वालियर केर खन्डेराव पुत्र तिनका लेके धावा दल देर, सेनप भा झाला सुभट बीर बर बांका, सँग डेढ़ सौ लै सामन्तन घोड़ा हांको। महराज मरन का छांड़ा भट सन्देह, धर्म भूमि के हेत निछावर करि के खड़े भे देह।

कबित्त ज० झाला का सवारों से—

खंजर औ खांड़े शमशेर औ दुधारे लेहु, बीर गण पहिरि सनाह सुख पाइए। गोलियां किरच पिसतौल औ कटारी लेहु, पेश कब्ज छूराछुरी बिछुआ ले धाइए। बांधि तिरशूल गदा गुर्ज अरु भाले हाथ। बरछी संगीन शेल धनु लेके जाइए, बीर बंस जाए सोइ बीरता दिखाए आज, बीर परताप के प्रताप को बढ़ाइए।

बहरे तवील ज० सवारों का।

मोह तनका तजा इस जनम भूमि हित, प्राण देने में रक्खे कसरही नहीं। यदि पाछे हटें तौ नरक में पड़े, कहीं भागे तौ क्षत्री पिसरही नहीं। हम जीते तो माता से उद्धार हों, मरें सुरपुर कि रक्खे जिकरही नहीं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिस थानी में जन्में जनम भूमिका, करैं गौरव शिवा कोइ फिकरही नहीं ॥ १३४ ॥

ज० रंगा।

दोहा। साबस साबस कहरहा, सुन बीरन के बैन।
पुनि प्रताप से कहतभे, तहं झाला गुणऐन १३५

ज० झाला का–

कवित्त। चत्रो गन सजि आए सुनिके हुकुम तब, टीड़ी दल सम परबत पर आए हैं। उत नभ मध्यमें नकारे होत बादल के, दुन्दुभी धुकार इत छबि को बढ़ाए हैं॥ शिव कवि बीजुरी चमक नोक भालन की, जुगनू चमक नाल घोड़न दिखाए हैं। पुहुमी पै शाह अरु गिरि पै प्रताप सेन, नभ में सुरेश जुद्ध देखिबे को आए हैं।१३६

ज० प्रताप का–

दोहा। झाला मेरी बातसुन, शाह सैन दरम्यान।
कौन कौन आए सुभट, मुझसे करै बयान१३७

ज० झाला का–

लावनी। हैं माड़वाड़ के हिन्दू राजा आए, जो मुगल सेन में सेनापति कहवाए। महराज मानसिंह तिनके संग में हिन्दु, जिन हिन्दु त्रियन के शरके धुलाए बिन्दु॥ सुनलो शक्तावत भाई तुम्हरे आए, सुत सलीम अकबर का भी मुझे दिखाए। महराज हिन्दु के बैरी हिन्दू लोग, फूट बैर को लाय लाय किय फूट बैर का रोग१३८

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज० रंगा-

दोहा। मानसिंह के साथ थे, दलमें इतने बीर।
शिवदयाल इतिहास का, लिखा करें तहरीर॥

चौ०। लिखा करें तहरीर, मीरबख्स गाजीखां बतलाए। सैय्यद हासिम अहमद अरु थे बरणादिक भट आए॥ सोरासै बत्तीस व सन पन्द्रह सौ छिअत्तर गाए, सावन शुक्ल पक्ष षष्ठी की तिथि इतिहास बताए॥

दौड़। लड़ाई की तिथि जानो, हिन्दुओ इसको मानो। डीगना मोरि उड़ाई, कल्पित किस्सा नहीं। देखु इतिहास टांड को जाई॥

ज० रंगा।

दोहा। दुहूं ओर के बीरगण, खेत आगए यार।
एक एक को देखकर, देत गरू ललकार॥

चौ०। देत गरू ललकार, दोऊ दिशि बाजे रणके बाजे। करि करि केहरि नाद बीरगण हैं बन्दूकन साजे। दुहूं ओर से बढ़े, बीर गण धरि धरि तहंपर गाजे। लिए हाथ तलवार, धवल भट शत्रु सेन में छाजे॥

दौड़। चलैं निहशंक दुधारा, देंह सुधि भट तजि डारा। खून के बहैं पनारा, धावन देखि के मारू हाल परताप पै जाय गुजारा॥ १४०॥

ज० हरकारा का-

दोहा। महराणा परताप जी, सुनलो रण के हाल।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मारे मारे तेग के, सुभट भए बेहाल॥

चौ०। सुभट भए बेहाल, खूनके बहते नही नारा। मारे २ लासन के तहं पर लगि गए कगारा, चरबी फेन सम बहै। बाल दीखे जनु परो सिवारा, काक कंक बैताल भूत के तहं पर लगे अखारा।

दौड़। होत रण अति बिकरारा। बरणि को पावै पारा बीर धीरज बहु धरैं, लिए दुधारा हाथशत्रु को हनि हनि रण में मारैं।

अथ तृतीयमंज़िल प्रारम्भः।

रंगा-

दोहा। धावन के सुनिके बचन, चलि दीन्हो परताप।
धरयो समर सागर बिषे, मंदर गिरि सों आप॥

चौ०। मन्दर गिरिसों आप, मान को रण में पता लगाया। कुल कलंक बिषमान, कही परताप को नहीं दिखाया। बढ़ा हृदै सन्ताप, दांत दोउ होठन तले दबाया। कुल कलंक नहिं मिला, हाथ का मींजि मींजि पछताया।

दौड़। तेग कर लिए दुधारा, बीर परताप जुझारा। गुस्सा उर बढ़ा अपारा, उसी क्रोध में रानाने सलीम को धार ललकारा।

ज० प्रताप का-

दोहा। मुगल पुत्र इत देख मैं, आया तेरा काल।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अबतक काहू बीर के, परे नहीं रणजाल ॥

चौ० । परे नहीं रणजाल, देख मैं जम सम अब आया हूं । तुझ से करने मेल, देख तेगा लेके आयाहूं । हिन्दू बेगी पूत, होय मजबूत मैं अब आया हूं ॥ संभर संभर रे संभर, तेरही लिए यहां आया हूं ॥

दौड़ । बीर तव संग लड़ाका, कहां वह मानहै बांका, देख मैं उसको लेऊं । फिर जैसा कुछ चही शत्रु सुत तो को उत्तर देऊं ॥ १४३ ॥

ज० सलीम का ।

दोहा । क्या डरपाता मुझे है, महराना तू आज ।
ज्यादा बकने से यहां, सरै न तेरा काज ॥

चौ० । सरै न तेरा काज, मुझे क्यों धमकी बतलाता है । किया होय सो करै, बीरता क्या ज्यादा गाता है । उछल उछल के मुझे, बृथा शमशेर क्या दिखलाता है ॥ तेरे ऐसे लाख देख क्या सलीम दहलाता है ॥

दौड़ । देख शमशेर हमारी, बढ़ा जो जरा अगारी । मार के खेत गिरा दूं, तौ है नाम सलीम । नहीं तौ अपना नाम फिरा दूं ॥ १४४ ॥

ज० महाराणा प्रताप का-

दोहा । सभर सभररे सभर जा, ओ हाथी असवार ।
आया तेरा कालले तो को, ह्यां यहिबार ॥

तो को ह्यां यहि बार, तुझे मैं भेजूं जमके द्वारे । पांच

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिनट में मूढ़ तेरी जां करता वारे न्यारे, मात पिता खो सुमिरि मूढ़ तुझको है अजल निहारे। देख मेरी शमशेर तेरी मस्तक को अबहीं फारे।

दौड़। चोट पहिले कर जावे, नहीं पाछे पछ तावे। स्वर्ग में तू रोवेगा, किया न हमने चोट आसुओं से मुख को धोवेगा।

ज० सलीम।

बहरे तवील। सुन पाछे हटैं तो मुगल सुत नहीं, परताप क्या धमकी दिखाने लगा। मैं जाया बबर शेर का शेर हूं, स्यार तेरे से कब मैं डराने लगा। आया मुझ पे करै क्यों न तू वार को, गृद्ध भड़की बृथा क्यों बताने लगा। मैं काटूं तेरे शीश को अब संभर, एक दम में तुझे दूं ठिकाने लगा।

ज० प्रताप–

बहरे तवील। अबे लड़के संभारे जबां आपनी, तेरे जीने का अबना सहारा रहा। याद अकबर हिमायूं कि करले यहां, मूढ़ जिनकी तु आंखों का तारा रहा। कहां तेरे संघाती नृपति मान है, जिनका स्वामी तु बनके पियारा रहा। आज आके फंसे हो अजल जाल में, मालुम होता है मरना गंवारा रहा।

-रंगा-

दोहा। करिकै क्रोध सलीम पै, वेगि उड़ायो बाजि।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गज शुंडा पै अश्व ने धरो टाप को गाजि ॥

चौ०। धरो टाप को गाजि बीर परताप ने शूल निकारो। बड़ी जोर से तहां ताकि सलीम के दिशि को मारो। हौदा लोहे जड़ा शूल वाही पै टक्कर कारो। बचा शाहका पिसर शूल के टूटि हुए दुइ फारो ॥

कबित्त। अकबर सुत शूल चोट से बचहु रन मगर महावत ने प्रान को गमायो है। भागहु मतंग जब कुंतल रहेव न शिरपाछे परताप तेहि घोड़ दवरायो है। आगे है सलीम पाछे खेदे परताप जात मुगुल कि सेन जब यह लखि पायो है। शिव कवि धाई कुल फौज एक लाख सब लाख तरवार परताप शीश छायो है।

दौड़। चलै मुठ भेर कटारी प्रभा बिजुरी सी भारी। दोउ दल बढ़े अगारी। तेगा खच खच करैं मूंड़ कटि कटि कै गिरैं अगारी ॥ १४८ ॥

जं० प्रताप।

दोहा। महा घोर संग्राम मैं, जूझत बीर अपार।

दिन मैं रैनी हो गई, क्या बतलाऊं यार ॥

चौ०। क्या बतलाऊं यार घटा घनघोर आज हैं छाए। आसमान से मेघ मनहु पुहुमी के ऊपर आए। युद्ध नकारे यहां मनहुं घन आसमान घहराए। चमक रही शम शेर छटा जनु बिजुरी की छहराए।

लावनी। चहुं वोर मुगुल सेनाने हमे गरेरा, इकले

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हम रन में फंसे यहां यहि बेरा। मेरे यार दिवस में ह्वै गयो अंधेर, एक लाख शम शेर शीश मेरे दीखे यहिबेर।

दौड़। न साथी कोइ घबराना, मारना औ मरजाना। धवल भट बढ़ो अगारी, काटि शत्रु का माथ, करो सब रण में जे जे कारी। १४६ ॥

ज० रंगा।

दोहा। हरकारा दीखो तहां, फंसे समर परताप।
झाला के ढिग जाय के, कहने लागो आप॥

ज० हरकारा का।

दोहा। महा घोर संग्राम में, सूझ न वारा पार।
सात घाव परताप तन, लागे हैं यहिबार॥

चौ०। लागे हैं यहि बार सुनो भाले से तीन गनाए। तीन घाव तलवार एक गोली से परैं दिखाए। सात घाव तन लगे खून की धारा दृष्टी आए। मे किंशुक से वृक्ष मगर परताप न शंका खाए॥

दौड़। करैं न राणा शंका वीर मेवाड़ क बंका। मेरी झाला सुन लीजै, लेके अपनी फौज मदद परताप की जाय करीजै॥

ज० झाला का।

दोहा। सुबेदार सामन्त गण इधर करो तुम ख्याल।
महाराणा परताप जू फंसे समर यहि काल॥

चौ०। फंसे समर यहि काल चहूं दिशि मुगुल वाहि-नी घेरे। बाइस साइस ज्वान समर में धसो संग तुम

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मेरे। चहुं ओर से मारि शत्रु को, राना जी को हेरे है संकट में नृपति हमें यह भासित हो यहि बेरे।

दौड़। देर कोउ करै न बंका, वीरवर बढ़ै लड़ाका। काटिके शत्रु गिरावो, समर सिन्धु में आज चलो महराणा जूको लावो। १५२ ॥

ज० चन्द्रावत का।

दोहा। देरी करना वृथा है, वो झाला सरदार।
चलो समर में धंसो सब, ले नंगी तरवार ॥

चौ०। ले नंगी तरवार यवन दल मार के अभी गिरा दूं। चलै दुधारा जभी, मोरचा रिपुन के सभी फिरादूं। बैरिन का अभिमान, मार के भाजन अभी घटा दूं। मानसिंह औ सलीम इनको तेगन मारि भगादूं।

दौड़। फंसे कहं राना मेरे, चलो झट उनके नेरे। देर को मती लगावो, एक तरफ से घुसो यवन दल तेगन छांटत जावो

ज० रंगा।

दोहा। सात घाव तन में लगे, रुधिर बहै सब अंग।
नृप प्रताप के बीर गण, रहे न कोई संग ॥

लावनी। इकले राणा तहं जरा न शंका लावै, जहं एक लाख भट मारु मारु कै धावै। महराज शोचता और करै तरवारि, उसी समय में राना की जय झाला कहा पुकार। जयकार सुनत परताप ने खुसी बढ़ाया, दोनो

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हाथों से राना मारु मचाया। महराज पहुंच गयो जब झाला सरदार, नृपप्रताप से कहा समर में झाला ने तेहिवार॥ १५४॥

ज० झाला का।

दोहा। बीर धीर केहरी सुन, महराणा परताप।
घबराना ना चित्त में, झाला पहुंचा आप॥

चौ०। झाला पहुंचा आप, आप कुछ ना मन में घबरावैं। मारि मारि के यवन, अभी देखो खलिहान लगावैं॥ मारि दुधारा शीश, अभी बैरीकी फौज नसावैं। बहैं खून की नदी तभी दिलके अरमान सिरावैं॥

आल्हा। संभर कै बैठो तुम घोड़े पर। मेरे महराना बीर प्रताप॥ देखो तेगा अब झाला की मनके शोच छांड़ि दो आप। देह धराई मरि जइबे का सो मरिजांय तुम्हारे काज॥ जन्म भूमि हित मूड़ कटावैं। सच्ची कहैं सुनो महराज॥ शोच छांड़ि कै अब दुनियां के घोड़े पैं देखो युद्ध हमार। निमक तुम्हारो जो खायो है ताकी है अदाय यहिवार॥

दौड़। जन्म भू हित हम आएं, प्राण दै इसे छुड़ाएं। सही हम तुमसे भाषैं, जब तक धड़ पर शीश। देश में अपना शत्रु न राखैं॥ १५५॥

ज० चन्द्रावत का झाला से

दोहा। महा घोर संग्राम में, फंसे बीर परताप।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

झाला देरी करौना, मदद करो कुछ आप ॥

चौ० । मदद करो कुछ आप, बैन तेरे सुनि दुख बिसराया । भा दूना उत्साह और दूनी नृप मारु बढ़ाया॥ लेकिन होता काह, तुरुक दल बादल सो है छाया। रबि राना परताप, समर नभ में है सुनो छिपाया ॥

दौड़ । बढ़ो झाला भट भारी, देहु ललकार करारी देह का मोह बिसारो। घुसौ फौज के मध्य मारि के यवनन शीश उतारो ॥ १५६ ॥

ज० रंगा-

दोहा । सुनिके चन्द्रावत बचन, तहं झाला सरदार ।
घुसा फौज के मध्य वो, देत गरू ललकार ॥

लावनी । झाला ने तहां राना की ओर निहारा। जाना प्रताप ना बचै अवसि जा मारा ॥ महराज शोचता मन झाला सरदार । काह करूं इस समय युद्ध में बचै प्रताप भुवार ॥ चित में झालाके तहं यह बात समाई। परताप छत्र को निज शिर बांधौ जाई ॥ महराज छत्रजब रिपु देखे मेरे शीश । राना जी को भूलि मोहिं पै झुकिहैं बिस्वे बीस ॥ इतना मन में विठाय राना ढिग आया। राना का छत्र उतारि शीश निज लाया॥ महराज मुगल दल धोखो खायो यार। छत्र देखि झाला के ऊपर टूटि परे इकवार ॥ दबदबा देखि कै झाला बीर बुलाए। सुन खन्डे राव रामशा आदि तहँ आए। महराज रहे छत्री

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भट नौदा हजार। एक लाख यवनो से दल में कह्यो सलीम पुकार॥ १५७॥

ज० सलीम का।

दोहा। जाने ना पावे कोई, राज पूत सरदार।
काटि शीश परतापका, दिखलावो मोहियार॥

चौ०। दिखलावो मोहिं यार, और जितने च्त्री हैं आए। वह भी फौरन जाय जेल खाने मैं सब भिजवाए॥ मानसिंह तुम जाव संग करणादिक बीर लिवाए। सैय्यद हासिम सुनो जान कोई च्त्री ना पाए॥

दौड़। मार के शत्रु उड़ादो, खोद के जमी गड़ा दो। जियत कोइ घर ना जावै॥ महराणा का माथ काटि फौरन ढिग मेरे लावै॥ १५८॥

बहरे तबील। ज० झाला का सलीम से-

बीर आगे बढ़ावै खड़ा हो यहां, तू आगे बढ़ै जो रखता है दम। मेरी तेग ए प्यासी मेरे खून की॥ तेरे शीश को करना चहे ए कलम। जौन करना हो पहिले करौ आनकर॥ बाद मरने तोहिं हो न रंजो अलम। अभी मारूं पछारूं तेरी सेन को, आज भेजूं तुझे मूर्ख मुल्के अदम॥ १५९॥

बहरे तबील ज० सलीम का-

तुझे मार गिरादूं यहां से अबे, जरा आगे जो तूने बढ़ाया क़दम। दिखलाता तू तेग मुझे हो खड़ा, वृथा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बकने से तुझको न आती शरम ॥ तुझे दबता डराता यहां कौन है, कौन तुझ मे यहां पे खड़ा है नरम । आज मौका परा है मुगल पूत से, सैर तुमको कराऊं मैं मुल्के अदम ॥ १६० ॥

ज० रंगा·

दोहा । बातें करते ही तहां, चलै लगी तलवार ।
दुहू ओर के वीर गण, लड़ें प्रचार प्रचारि ॥

लावनी । घनघोर घटा तहं फौजन के थे छाए । तरवारि बिज्जुली शिवदयाल चमकाए । महराज कटैं तहं धवल वीर सर्दार, लड़ै मरैं ललकारैं लेकिन धरैं न पैर पछार ॥ अति समर विकट झाला ने तहं पै कीना सहसन यवनों के शीश काटि तिन लीना । महराज फौज मुगलन की साहस कीन ॥ झाला पति का शीश काटि काहू योधा ने लीन । झाला के जूझत हा हा कारी छाई ॥ दे शीश स्वामि के हेत स्वर्ग को जाई । महराज देखि हरकारा ने तेहि काल, नृप प्रताप पै चला कहन झाला का मरन हवाल ॥ १६१ ॥

ज० धावन का प्रताप से ।

दोहा । हल्दी घाटी के समर, चेहरा हो गए जर्द ।
मारे तेगन के तहां, आहे निकली सर्द ॥

चौ० । आहे निकली सर्द, दर्द के मारे भट चिल्लावैं । हल्दी घाटी मध्य, वीर मुख हल्दी से दिख·

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रावै। चलै दुधारा जहां, देखि कै कायर प्रांण बचावैं। प्रभा हुई झट मंद, वीरतापन में धब्बा लावैं।

लावनी। ना रहा हौसला किसा बारका बांकी, मारै है रन में एक एक को ताकी। महराज छत्र जब झाला ने धरि लीन, मुगल फौज ने आय वार झट झालाही पै कीन। दोनो हाथों से लिए तेग ललकारें, झालाने रन में असंख्य बैरी मारे। महराज लाख तरवारि शीश गई आय, वाहि समै का हाल हाय कुछ मुझसे कहा न जाय। मर गया समर में झाला सुभट तुम्हारा, झाला स बीर मैने ना कभी निहारा। महराज दील हम ताकी रंण तरवार, झुके तेग लै जबै लेय सौ सौ का शीश उतार। ना स्वामि भक्त कोइ ऐसा भक्तदिखाया, जिसने स्वामी के हेत हो प्राण गमाया। महराज उचित झाला ने समझ ए कीन, शीश छत्र को बांध प्राण है न्योछावर में दीन।

दौड़। लोथ वाकी उठवावो, ताहि मरघट पहुंचावो। ऐस को भा बृतधारी, जग में यश करि लियो, आप तौ स्वर्ग लोक पगधारी।

ज० रंगा

दोहा। दधीचि ने वासव लिए, शिवि ने पच्छी हेत।
राना हित झाला सुभट, प्रांण दै दियो खेत॥

लावनी। सुनिकै धावनके बचन बीर परतापा, संताप हृदै ना रहा करै बिललापा। महराज आश्रुकी धार

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बहै तेहिवार, शेष सेना मध्य सेन के बड़े बड़े सरदार।

ज० प्रताप-

लावनी। झाला तुमने है मेरा संग क्यों छोड़ा, संसार मध्य क्यों हमसे मुख को मोड़ा। मेरे यार समर सागर में तुम थहिवार, मेरी नाव छांड़ि मंझा में कहंगए खेवन हार। यह जाना की दम आते तक का नाता, दम फना हुए फिर सही न कुछ भी नाता, मेरे यार किसी का कोई ना दिलदार। मात पिता अरु सुहृद बंधु का दम आते तक प्यार, है ढोंग जहां में बिलकुल आंस बहाना। आई ना आई पौन क कौन ठिकाना॥ मेरे यार एक दिन सब को खावे काल, टेक राख के लड़ो सुभट सब समझावें शिवदयाल। हो बीर धीर जितने ना कुछ घबरावो, झाला के दुःख को छांड़ि के युद्ध मचावो। मेरे यार समर में लड़लो दिलको खोल जो करना सो करो कलह पै उठाय शख ना झोल १६४

बहरे तबील ज० सेनपति चन्द्रावत को रोना -

मीत झाला सँदेशा हमारो कहे, जाय सुर पुर में हरगिज़ भुलाना नहीं। मिलैं अरजुन युधिष्ठर औ बलराम जो, पाय भृगुराम को तुम छुपाना नहीं। कह्यो प्रथु नाम राजा नहुष से यही, दुःख पहुमी सहै रोय आता नहीं। मिलैं राम तो कहना तुम्हारे बिना, दुःख भारत क कोई छुड़ाता नहीं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बहरे तवील उ० प्रताप का सबसे कहना।

टेक अपनी तजैना तजै प्रान को, वे सुयोधन औ रावन से कमही नहीं। नृप शिवि के सदृस मांस अपने को दे, मरने जीने क करते हैं गमही नहीं। परहित के लिए है दधीची सद्रश, नृप हरिश्चन्द्र सम करते नमही नहीं। सुनो जननी जन्म भूमि हित जे मरें, जगमे कीरति बढ़ै होवै कमही नहीं॥ १६६॥

ज० रंगा का-

दोहा। झाला पति के मरेका, छाड़ा सब अफशोश।
नृप प्रताप के बैन सुनि, छाया सब के जोश॥

चौ०। छाया सब के जोश, होशना बिलकुल रहा ठिकाने। ललकारें बैरियो, तेग दोउ दोनों हाथों ताने॥ करैं घोर संग्राम, सकल सेना ने युद्ध को ठाने। महा क्रोध में पगे क्रूर भी युद्ध हेत समुहाने॥

आल्हा। का गति बरनो तेहि समया की, फौजन संग बढ़ो परताप। मारि खदेरो मुगल फौज को, औ कितनों के तेग दी चाप। बाइस सहस बीर चत्रीदल जे पाछे ना डारें पांव, जै जै करिकै महराना की लै लै जन्म भूमिका नांव। झुके सिपाही रण के भीतर छांड़े मोह जिन्दगा प्यार, जन्म भूमि हित रण में मारें ने देखै ना अपन परार॥

दौड़। निसंक चले दुधारा, नागि तरवारि निकारा।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दोऊ हाथन सों मारैं बीर केहरि न को राना भी ठाढ़े तहं ललकारें ॥ १६७॥

बहरे तबील। ज० प्रताप का-

बीर आगे बढ़ो कहे न मानो मेरी, रण से भग के है रहन अमर ही नहीं। मरे भीषम करण द्रोण अरजुन सदृश। महाभारत स होगा समर ही नहीं, रहे रावण सुयोधन न कोई यहां। घननाद स होगा नर रही नहीं॥

आज जननी को उद्धार करके चलो, नहीं क्षत्रीपने का असर ही नहीं॥ आल्हा एही समय को राखा था वो रजपूतो सुन लो कान, आज अदाई है नीमक की। आखिर मरना परै जहान, फौज़ अठारह छोनी जूझी। दीन्ही दुरयोधन ना राज, जन्म भूमि कोउ यों दीन्ही ना, अपन प्राण दीन रण गाज॥ १६७॥

बहरे तबील ज० चन्द्रावत सरदार।

खाके कसम नृप तुम्हारी कहे, आज दुश्मन कि रक्खैंगे जर ही नहीं। आए बाइस सहस सो रहससाकरैं जीते जीते कोई जाय घर ही नहीं। चहे पूरब से पश्चिम दिवाकर उगे, हम समर भूमि से सकते टर ही नहीं। जब लों शर है हमारे शराशर कहैं करैं शर हम शमर या तो शर ही नहीं।

रंगा

आल्हा। धरि कै पानी रजपूतो पर, फिर आगे को

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दीन बढ़ाय। चलै दुधारा चन्द्रावत का चरखी तेगा सों लपटाय॥ खून नदी में लोथ बहरहीं मानो सूसि जात उतराय। बार सेवार सरिस जहं गायो, चरबी फेना सी दिखराय। काक कंक के ढेर लगिगये, जहं पर भूत बजावैं ताल। नचै योगिनी रन के भीतर मोसे कहा जाय ना हाल॥ पांव पछारू को डारै ना जितने छोट बड़े सरदार। जन्मभूमिहित मरजानाही सबको सूझि परै तहं यार१७०

जं० राणा प्रताप—

दोहा। चन्द्रावत सरदार सुन, जन्मभूमि के हेत।
चौदा साहस भट मरे, बहु सामन्त समेत॥

चौ०। बहु सामन्त समेत, पांचसौ सिसोदिया कुल वाले। राय रामशा और ग्वालियर सुत जे विक्रमवाले, साढ़े तीनसौ तुवर साथ लै खांडे राव निराले। झाला पति के साथ डेड़ सौ मरे सुभट मम आले।

दौड़। भयो रण घोर अपारा, कहां तक बरनों पारा। सुनो चन्द्रावत भाई, जन्म भूमि के हेत मेरे बीरों ने प्राण गमाई॥ १७१॥ जं० रंगा—

दोहा। देखा जभी सलीम ने, मरे लाख हैं ज्वान।
मुगुल और चत्रियों से, उसने कहा बखान॥

चौ०। उसने कहा बखान, लड़ाई बंद करो अब भाई। हुई शाम अब आय सिविरि अपने लो राह तकाई॥ यही हुक्म परताप दियो है, निज बीरन गोहराई। है

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घोड़े असवार बीर वर चले सिंह की नाई ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

आल्हा। अब के ऐसे देश भक्तना जिनकी कलम अहैं तरवार। मुख तरकस से बैन बान की नित ही करत रहैं बौछार॥ परे चार पाई के ऊपर मानो रथपर हैं असवार। देस भक्त का ढोंग दिखा के भारी बनत रहे सरदार॥ घरके बाहर वे निकले ना करते देश भरे की बात। कौड़ी एक खरच को नाहीं, देखें म धनद तिन्हे शरमात।

दौड़। चला जब प्रताप बांका, हाल ए देखि तहां का। एक जासूसी धाया, नृप प्रताप का हाल बेगि सलीम को जाय सुनाया।

ज० जासूसी का-

दोहा। समर भूमि दरम्यान से, ह्वै घोड़े असवार।
महराना परताप जी, चलि दीन्हे यहिबार॥

चौ०। चलि दीन्हो यहिवार, घाव तन सात तासु के आए। बहता तन से खून मगर घोड़ा पै चढ़ा वो जाए॥ नहीं अस्त्र कुछ हाथ, अकेले जाता राह तकाए। जां-पनाह सुन बैन, जियत बैरी जाने ना पाए। दौड़। साथ असवार लगावो, प्राण लेने को पठावो जाय राना को मार। बिन औषध रुज हटै जाय अपने घरमें पग धारें।

ज० सलीम का।

दोहा। खुराशन मुलतान के, सुन सरदारौ बात।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चढ़े अश्व राना गया, उसकी कर दो घात ॥

चौ०। उसकी कर दो घात, शीश को काटि मुझे दिखलावो। हुक्म हमारा सुनो जाय उसको कहला करि आवो। देर करो ना यहां, काम करने को फौरन जावो। मारो मेरा शत्रु तो मन मानी इनाम तुम पावो।

दौड़। देर सरदार न कीजै, राह में ताको लीजै। जाउ दोउ सुभट जुझारा, रिपु प्रताप को मारि, शीश तेहि लावो तुम सरदारा ॥

ज० रंगा –

दोहा। नृप प्रताप के कत्ल को, कहा सलीम पुकार।
भाई लघु परताप का, सुनता था तेहिवार ॥

चौ०। सुनता था तेहिवार खून ने अपना जोश दिखाया। सुन भाई का कत्ल क्रोध अति शक्त के हृदै समाया॥ बैर भूलि तेहि काल, मदद भाई की करने धाया। ह्वै घोड़े असवार, उसी मारग से आप सिधाया॥

दौड़। गए जो सवार आगे, शक्ततिन पाछे लागे। इधर परताप जुझारा घायल घोड़े चढ़ा जाय देखा यक नदी किनारा ॥ १७५ ॥

ज० प्रताप –

दोहा। थके हुए संग्राम में, ना कोई भट पास।
कैसे उतरूं यह नदी, अमित भरो जल रास ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज० रंगा—

दोहा। शोच समझ परताप ने, घोड़ा दिया फंदाय।
नदी फांदि घोड़ा मरा, की प्रताप ने हाय॥

ज० प्रताप—

दोहा। मुशिकल अब चलना हुवा, काह करूं करतार।
घोड़े ने संग तज दिया, संग न कोई सरदार॥

ज० रंगा।

दोहा। इत प्रताप सोचे खड़ा, उत नदी के पार।
वे दोनों असवार अरु, शक्तसिंह सरदार॥

चौ०। शक्तसिंह सरदार, आय के तीनो हुए ठिकाने। शक्तसिंह ने देखि, तेग अपनी उनपै तहं ताने। मारि दोऊ असवार, किया दोनों को स्वर्ग रवाने। भय सलीम का जरा, नहीं शक्तावत उर आने।

दौड़। मार दोऊ शत्रु गिराया, पास राना के सिधाया। देखि राना अनुमाने, आता कोई शत्रु जानि तहं क्रोध सें लगे बताने।

ज० प्रताप—

दोहा। संभर संभर रे संभर जा, वो घोड़े असवार।
घायल को घेरा वृथा, तुझको है धिक्कार।

लावनी। जो रण करने के हेत यहां तू आवै, तौ कहं सनेही क्या योंही मर जावै। कवि शिवदयाल को घायल

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ना शठ जान, है तुझको सौगन्ध भागि ना जाना सुनिले ज्वान ॥ १८० ॥

उ० शक्तसिंह का-

दोहा । भाई हूं मैं आप का, शक्तसिंह है नाम ।
प्राण बचाने आप के, आया था यहि ठाम ॥

चौ० । आया था यहि ठाम, हाल मैं तुम से बतलाता हूं । भेजे शत्रु सलीम, तिन्हीं को मारे मैं आता हूं । लिए अश्व ए साथ, आपसे सच्ची बतलाता हूं । एक अश्व लो चढ़ो, जाइए सिविरि को समझाता हूं ।

दौड़ । अश्व यक हमसे लीजै, रवाना वाशद हूजै । खबर जो सलीम पावै, बिलाशक शुभा मुझे दार वो फौरनही दिलवावै ।

उ० रंगा-

दोहा । शक्तसिंह का नाम सुनि, किया खून ने जोर ।
बड़ा रंज राणा किया, रोय उठे करि शोर ॥

चौ० । रोय उठे करि शोर, जाय भाई को गले लगाया । बहुत दिनों का शोक, नृपति ने रो रो सकल बहाया । पूंछी राजी खुशी हकीकत अपनी भी बतलाया, देश हेत तन दान विधी शक्तावत को बतलाया ॥

दौड़ । देश हित हम तुम जाए, इसी हित प्राण गमाएं । यही संकल्प हमारा, देश करूं उद्धार नहीं तो यमपुर करौं गुजारा ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज० शक्तसिंह का –

दोहा। हुकुम होय तो चलूं अब, अपनी फौज मझार।
मगर मेरे भाई सुनो, रहना खुब हुसियार १८३॥

बहरे तबील ज० प्रताप का –

वफ़ादार भाई बराबर तेरे, इस जहां बीच में कोइ दिखाया नहीं। मेरे लख्ते जिगर जब से न्यारा हुवा, दिल को मेरे कभी सब्र आया नहीं॥ तेरे बिछुरन से मुझको महा रंज था। खाना दाना कभी मुझको भाया नहीं। हा समय को कहूं की कहूं निज खता, या मरजी प्रभू ने मिलाया नहीं॥ १८४॥

बहरे तबील ज० शक्तसिंह –

तात तेरा मैं चेरा हमेशा अहौं, रंज दिल में पुरानी मैं लाता नहीं। मैं सेवक चरण का तुम्हारे सदा, आप बेचैं मुझे उज्र आता नहीं। भइया मेरी खता तू अता-कर सभी, रंज रखना हृदै मुझको भाता नहीं। आप मेरे मैं हूं आपकाही सदा, कोई मेरा सलीम का नाता नहीं॥ १८५॥

ज० रंगा –

दोहा। भाई की कर मदद को, शक्तसिंह रण धीर।
वापिस आया फौज में, जब सलीम के तीर॥

ज० सलीम –

दोहा। शक्तसिंह मम बात सुन, गए मुगुल तव साथ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उनको तू छोड़ा कहां, सिसोदिया कुल नाथ ॥

ज० रंगा-

दोहा। शक्तसिंह कीन्हीं रही, जो कुछ मन में ख्याल।
पूछी वही सलीम ने, पहुंचत ही ततकाल ॥

ज० शक्तसिंह—

दोहा। गए मुगुल जो साथ.दो. मारा उन्हें प्रताप।
अश्व मेरा मारा गया, क्या पूछें हैं आप ॥

चौ०। क्या पूछें हैं आप, वीर परताप ने जुलुम गुजारे। लड़े बहुत हम लोग, मगर क्या करें समर में हारे यक घोड़ा ले साथ, भगा मैं अपने प्रान बचारे। चली न मेरी एक, भाग के आया पास तिहारे ॥

दौड़। खूब संग्राम मचाया, मगर मैं जीति न पाया। सवारन को उन मारे, बड़ा वीर परताप हाल है उसका अपरम्पारे ॥ १८६ ॥

ज० सलीम-

दोहा। ठीक ठीक हमसे कहो, शक्तसिंह रणधीर।
तेरे कुल में तो कोऊ, झूठ न कहता वीर ॥ १६० ॥

ज० शक्तसिंह-

लावनी-

तुम खता अता जो शाहंशाह करीजे, मैं करदूं सही बयान आप सुनलीजे। महाराज आप जो, हमको देंय जबान, शिवदयाल तो ठीक ठीक तुम से करजाय बयान ॥ १६१ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लावनी - ज० सलीम -

मैं बक्सा तेरी जान सुनैरे राजा, तुझ से ना राखूं कसर कौन ए काजा। मेरे यार ठीक तू करदे यहां बयान, किस्सा सुनने की दिल में है मेरे भरी अरमान १६२॥

लावनी - ज० शक्तसिंह का -

जब आप ने भाई की कतलाम सुनाया, दो सवार उनके पाछे आर लगाया। महराज भाय का वध सुनि मैं घबरान, भेजे आप सवार उन्हीं के पाछे किया पयान। मेवाड़ राज का भार शीश भाई के, कैसे कटवाऊं शीश जियत भाईके। महराज हजारों की करते प्रतिपाल,इसके सिवा मुझे भाई का भारी आया ख्याल। मैं जाय इसी से सवार दोनों मारे, रक्षा भाई की किया सुनो सरकारे। महराज करूं क्यों ना भाई उद्धार, किया खून ने जोर सही तुम जानो ए सरकार॥ १६३॥

ज० सलीम-

लावनी। मैं ने माना तू बिलकुल ठीक बतावै, अब सही सलामत अपने घर को जावै।मेरे यार दिया मैने है तुझे जबान। सच्चो कहने पै मैने है बक्सी तेरी जान॥ १६४॥

ज० रंगा -

लावनी। करिके सलाम शक्तावत हुए रवाना, थे उदयपूर परताप तहां नगिचाना। महराज दोऊ भाई मे

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एकी ओर, बैरी का बल नासन कारन होगयो दुगुना जोर। इत बरषाकालने अपना जोर दिखाया, लौटी सब शाही सेन युद्ध बिसराया। महराज सनेही शिष्य कहे शिवदयाल, सांगीतमें नृप प्रताप का गाया। आधा हाल

(लावनी रंगत लगड़ी)

ज० रंगा-कवि परिचय-

जिला एक उन्नाव, गांव तामें पड़री बस्ती भारी।
बच्चूलाल सुत-शिवदयाल परताप कथा गायो सारी॥
सम्बत वनइस सौ चौहत्तर-मास हुवा आश्वनि जारी।
दशमी विजय रामचन्दर की, तादिन ग्रन्थ पूर्ति कारी॥
इस चरित्र को किया कवी ने दो किताब न्यारी न्यारी।
कपट नीतिकी पोल-शाहकी खुली कांड दूजे सारी॥
बिल्लेश्वर औ मन्नालाल लखनऊ, दुकान किये भारी।
नरपति औ रघुवीर वहां पर रहते हैंगे वृत धारी॥
मित्र गनेशी रतनलाल औ तुलाराम उनके भारी।
सरूपचंद की इस जिह्वा से क्या तारीफ करें सारी॥
गुरू सनेही कृपा लिखा संगीत सुनो तुम चित धारी।
कियो कवीगण क्षमा-भूल जो होय कहीं मैंने डारी॥
अनुचर गुरुजन केर, और अल्पज्ञ बड़ा हूं मैं भारी।
है प्रणाम सब सभा को बोलो, अटल छत्र जै यहि वारी॥

भवदीय-बच्चूलाल शिवदयाल-जैसवाल

पड़री--उन्नाव

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनोखा द्रश्य !

महाराणा प्रताप ! महाराणा प्रताप !! महाराणा प्रताप !!!

तथा

सङ्गीत।

वीर केशरी महाराणा प्रताप।

महाशय ! महाराणा प्रताप का सङ्गीत जो आजतक बनके नहीं तइ-यार हुआ था। वो मैंने सर्व सज्जनों के अर्थ अति परिश्रम से तइयार किया-इसके दो भाग हैं पूर्वार्ध और उत्तरार्ध पूर्वार्ध मौजूद हैं और उत्तरार्ध में अकबर की कपटनीति और प्रथ्वी राज का पत्र तथा प्रथ्वी राज की स्त्री से अकबर का मान मर्दन-और बाजार नव रोज की प्रथा का बन्द होना और रांणा को पुनःराज्य प्रात होना दिखलाया गया है बाद भाग भी छप रहा है आसा है कि धर्म प्रेमी तथा सङ्गीत प्रेमी इसे अवश्य खरीदेंगे-

पुस्तक मिलने का पताः—

बन्नूलाल शिवदयाल डा० व मु० पड़री०
जि० उन्नाव०

दूसरा पताः—

शिव कवि अमीनाबाद गन्नेवाली गली लखनऊ

तीसरा पताः—

पं० नीलकण्ठ द्वारका प्रसाद पुस्तकालय
अमीनाबाद लखनऊ

चौथा पताः—

पं० किशोर कबि शर्म्मा वही देबीदीन रसिया
मु० माखन्नेवादा पो० बिल्हौर जि० कानपुर

पांचवां पताः—

सरूपचन्द मुनीम सिकली मुहाल कानपुर

छठा पताः—

पं० गंगागुलाम तेवारी डा० व मु० पड़री जि० उन्नाव

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri